हिन्दूसोशेलरिफ़ार्म

जिसमें

हिन्दुओं की वर्तमान दशा और उसके सुधार के
उपाय श्रुति स्मृति इतिहास पुराण और
युक्तियों से वर्णन किये गये हैं

जिसको

बाबू बैजनाथ साहिब बीए जज स्माल काज़
कोर्ट आगरा ने रचना किया

पहलीबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा
मार्च सन् १८९५ ई० ॥

९ जज़ १ वर्क़ ॥

इस मतबे में जितने प्रकारकी काव्यकी पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी जाती हैं ॥

नवीनसंग्रह ॥

जिसमें भक्तभयहारी कुब्जाविहारी रसिकशिरोमणि श्रीकृष्णचन्द्र और श्रीराधिकाजीके लीलाविषयक नानाप्रकारके अत्युत्तम कबित्त और सवैयादिवर्णितहैं जिसको हफ़ीज़ुल्लाहखांसांड़ीनिवासि मुदर्रिस मदर्सा मौज़ा बन्नापुर परगनै बंगर थाना बघौली स्टेशन ज़िला हरदोई ने अपने शौक़ीन दोस्तों के दिलबहलानेके निमित्त अति परिश्रमसे संग्रह किया ॥

षट्ऋतुकाव्यसंग्रह ॥

हफ़ीज़ुल्लाहखां संग्रहीत जिसमें वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, छओ ऋतुओंके कबित्त व सवैया ऐसे२ अत्युत्तम लहलहे रँगीले परमचुहचुहे रसीले, अपने रसिकमित्रों व रंगीन तबीयतवाले महाशयों के चित्तविनोदार्थ बड़े परिश्रमसे छांट २ कर लिखे गये हैं ॥

प्रेमतरङ्गिनी ॥

मुंशी हफ़ीज़ुल्लाहखां संग्रहीत इसमें चित्रविचित्र सामायिक देवपक्ष व प्रत्येक ऋतुओं के कबित्त सवैया हरएक कविके बनाये हुये संग्रह किये गये हैं इसकी उत्तमता देखनेही से मालूम होती है ॥

हफ़ीज़ुल्लाहखांका हज़ारा ॥

इसमें नानाप्रकार के बहुतही उत्तम २ सब २१८४ कबित्त लिखे गये हैं स्थान २ पर तसवीरें भी बनी हैं ऐसा ग्रंथ कबित्तों का संग्रह कियाहुआ आजतक देखने में नहीं आया उत्तमतादेखनेसे प्रकटहोगी रसिकपुरुषोंके लिये अत्यन्त आनन्दकारीहै ॥

हरिः ओ३म्

भूमिका

हिन्दुओं के आजकल की रीतों और बर्तावों के पैदा होने और जारी रहने का कारण खोजना इस समय में कि जब उन रीतों और बर्तावों के सुधार की चर्चा बहुत होरही है बहुत ही उपयोगी होगा यद्यपि उन रीतों और रिवाजों में बहुतसा सुधार होना ज़रूरी है तौभी इस बात का ध्यान ज़रूर रखना पड़ेगा कि वह सुधार सनातन धर्म्म के विरुद्ध न हो न वह इस कच्चे ख़याल से रोका जावे कि उन रीतों और रिवाजों में कोई सुधार की ज़रूरत ही नहीं है या यह कि उन का सुधारना धर्म्म में दख़ल देना होगा। इस समय में यह देश उस दशा में है कि जो दो देशों की सभ्यता के मिलने से होती है। और बहुत से लोग तो यहां के रिवाजों के सुधारने की इच्छा करते हैं और बहुतों की यह राय है कि उन का सुधार नहीं होना चाहिये। अथवा यह कि समय पाकर सुधार अपने आपही हो जावेगा सिवाय इसके जो लोग हिन्दुओं की रीतों और रिवाजों का सुधार करना चाहते हैं वे भी शास्त्र का प्रमाण देते हैं और जो लोग उन के विरुद्ध हैं वे भी शास्त्र का प्रमाण देते हैं। ऐसी हालत में इस बात को मालूम करना उचित है कि शास्त्र में इस विषय में क्या लिखा है। सिवाय इस के वे लोग जो हिन्दू नहीं हैं हिन्दुओं के ऊपर यह आक्षेप करते हैं कि संसारी कामों में सर्वदा यह सोचना कि यह शास्त्रानुसार है या नहीं उचित नहीं है और वह बर्त्ताव जो बुद्धिपूर्वक न हो निरे इसी ख़याल से कि उस के जारी होने के लिये कोई प्रचलित प्रमाण धर्म्मशास्त्र का मिल जावे जारी न रहना चाहिये।

इसलिये इस बात के दिखाने को कि हिन्दुओं के आज कल के बर्ताव कहांतक धर्म्मशास्त्र के अनुकूल और कहां तक प्रतिकूल हैं और उनसे क्या २ लाभ और क्या २ हानि होती है यह पुस्तक लिखी गई है ॥

धर्म्मशास्त्र में कोई क़ायदा ऐसा नहीं है कि जिससे स्त्रियां उस अन्धकार में जिसमें वे इस समय रक्खी जाती हैं रक्खी जावें न बाल विवाह की आज्ञा पाई जाती है। न कोई नियम ऐसा है कि जिस से वह द्रव्य जो आज कल के विवाहों और अन्य २ कार्योंमें लुटाया जाता है लुटाया जावे न एकही जातीय के स्थानीय शाखाओं में विवाह करने की मनाई पाई जाती है न समुद्र यात्रा का कहीं निषेध है न उन चीज़ोंके खाने पीने की आज्ञा है कि जिनके खाने पीने से आज कल हिन्दुओं की ऐसी दुर्दशा और हानि हो रही है कोई श्रुति या स्मृति उस लूट खसोटकी जो तीर्थादिकों में आज कल धर्म्म के नाम से होती है आज्ञा नहीं देती। निदान जो कुछ दशा हिन्दुओं की अब है वह नतो शास्त्र के अनुसार है न बुद्धिपूर्वक है और उसका उपाय यही है कि वह आचार व्यवहार जिस की अगले जमाने के ऋषियों ने आज्ञा की है और वह नियम जो उन्हों ने चलाये हैं माने जावें इन्हींसे हिन्दुओं को इस लोक और परलोक में सुख हो सक्ता है। उन्हीं से उनकी पहिले समय में उन्नति हुई और फिर भी होसकी है। सिवाय उन नियमों पर चलने के और कोई ढँग नहीं है कि जिस से हम लोगों की इस लोक और परलोक में उन्नति हो या हिन्दुओं को वह आत्मज्ञान जो मनुष्य जन्म का बड़ा फल है मिल सके और जिसके मिलने का हिन्दू और लोगों की अपेक्षा में अधिक दावा कर सक्ते हैं। इस लिये अगर इस पुस्तक में वह नियम बतलाये जावें जिस से हिन्दुओं की उन्नति हो और वे विघ्न जो उनकी उन्नति में आज कल हैं दूर होजावें तो ऐसा प्रयत्न व्यर्थ न होगा ॥

इस पुस्तक में जो कुछ लिखा जावैगा उस में से बहुत सा तो श्रुति स्मृति इतिहास और पुराणों के प्रमाणानुसार होगा और यथामति प्रत्येक श्रुति अथवा श्लोकका शब्दार्थ भी लिखा जावेगा ॥

प्रथम प्रकरण ॥

स्त्रियों की दशा और उनकी शिक्षा ॥

हर एक देशकी उन्नति वर्त्तमान समय में बहुधा इस से देखीजाती है कि वहां की स्त्रियों की क्या दशा है । तथाच हिन्दुओं का असली धर्म्म किसी और धर्म्म से इस विषय में कम नहीं है । क्योंकि श्रुति स्मृति और इतिहास इस विषय में प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि पहिले समय में स्त्रियों की दशा इस वर्त्तमान समय से बहुत उत्तम थी । ऋग्वेद में लिखा है कि स्त्रियां अपने पतियों के साथ यज्ञ करती थीं मन्त्र और ऋचाएं पढ़ती थीं कोई २ संन्यासी होकर भी रहती थीं । उस समय में कुछ लोगों की यह राय है कि जाति भेद नहीं था ऋषि लोग और लोगों से अलग नहीं रहते थे किन्तु कुछ तो अपना समय ब्रह्म ज्ञान के सम्पादन करने में और कुछ यज्ञ योगादिक कराने में और कुछ गृहस्थाश्रम सम्पादन में लगाते थे । यज्ञों में स्त्रियां शामिल होती थीं सोमरस निकालती थीं और अपने पतियों के साथ यज्ञ कराके स्वर्ग को जाती थीं । ऋग्वेद[1] (के पांचवें अष्टक मण्डल ७ अनुवाक ४) में लिखा है कि विश्ववारा एक ऋषि की स्त्री ने मंत्र कहे यज्ञ कराये और अग्नि से प्रार्थना की कि स्त्री और पुरुष को शुभ मार्ग पर चला । यजमान की स्त्री सर्वदा यज्ञ का एक अंग मानी गई है और अष्टादश अंगों में एक है । उस समय में हर स्त्री का विवाह होना आवश्यक नहीं था किन्तु कोई २ स्त्रियां जन्म भर पिता के घर में कुँवारी रहती थीं ॥

---

(१) ऋग्वेद अष्टक ५ मण्डल ७ अनुवाक ४—

अथर्व वेद में लिखा है कि ब्रह्मचर्य्य से कन्या युवा पुरुष को अपना पति करे[२] ॥

बृहदारण्यक उपनिषद् के द्वितीय अध्याय के चौथे ब्राह्मण में मैत्रेयी का जो संवाद याज्ञवल्क्य ऋषि के साथ हुआ है वह उस की पण्डिताई और बुद्धिमानी को प्रकट करता है । याज्ञवल्क्य ने कहा अरे मैत्रेयी मैं इस गृहस्थाश्रम को छोड़कर संन्यासी होता हूं तुझसे और कात्यायनी से अपना सम्बन्ध तोड़कर और तुम दोनों में धन का बांट करके जाऊंगा । मैत्रेयी ने याज्ञवल्क्य से कहा कि हे भगवन् जो यह सब पृथ्वी धनसे परिपूर्ण मेरी होजावे तो क्या मैं उससे अमर होजाऊंगी। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि नहीं । जैसे धनवालों का जीवन होता है वैसा ही तेरा भी जीवन होगा। धन से अमर होने की कोई आशा नहीं है । मैत्रेयीने कहा कि मुझको वह वस्तु क्या करनी है कि जिस से मैं अमर न होऊं । आप जो जानते हैं वही मुझ से कहिये जिससे मैं अमर होजाऊं। याज्ञवल्क्यने कहा कि तू इससे पहिले मेरी प्यारी थी और अब जो तू कहती है वह तेरी बात मुझे प्यारी है आबैठ जा अब मैं तुझे उस आत्मज्ञान का उपदेश करताहूं कि जिससे तू अमर होजावेगी । उसको ध्यान रख । याज्ञवल्क्य ने कहा कि पति के लिये पति प्यारा नहीं है आत्मा के लिये पति प्यारा होता है । इसी तरह पति को स्त्री और माता पिता को सन्तान धनवान् को धन ब्राह्मण क्षत्रिय लोक देवता प्राणी और सब चीज़ इस हेतु से प्यारी नहीं होती हैं कि वे चीज़ प्यारी हैं किन्तु आत्मा के लिये प्यारी होती हैं । इसलिये यह आत्माही अरे मैत्रेयी श्रोतव्य मनतव्य और निदिध्यासितव्य है । उसके दर्शन श्रवण मनन और विज्ञान से सब जाना जाता है । जैसे सब नदियों के पहुंचने का एक समुद्रही स्थान है ।जैसे सब स्पर्शों का एक त्वचा ही आश्रय है सब गन्धों का नासिका

(२) अथर्व वेद काण्ड ११ प्रपाठक २४ अनुवाक ३ मंत्र १८

सब रसों का जिह्वा सब रूपों का चक्षुः सब शब्दों का कान सब संकल्पों का मन सब विद्याओं का हृदय सब कर्म्मों का हाथ सब आनन्द का उपस्थ सब विसर्गों का पायु सब मार्ग का पाँव सब वेदों का वाणीहि एक आश्रय है और जैसे एक लवण का टुकड़ा जल में डाला जलरूप हो जाता है और कोई उसको जलमें से नहीं निकालसक्ता क्योंकि जिधर से पानी को लेता है तो उधर नमक पानी में मिला हुआ मालूम होता है इसी प्रकार यह परमात्मा अनन्त अपार विज्ञान घन है इन पञ्च महाभूतरूपी उपाधियों से उसको अलग करके देखाजावे तो देहपातान्तर विशेष संज्ञा नहीं रहती उस मनुष्य को जो आत्मा से भिन्न ब्राह्मण जाति को जानता है ब्राह्मण तिरस्कार करते हैं। इसी तरह पर क्षत्रिय लोक देवता प्राणी और सब उस को तिरस्कार करते हैं जो आत्मा से भिन्न इन को जानता है।

यह आत्माही ब्राह्मण आत्माही क्षत्रिय है। आत्माही लोक है आत्माही देवता है आत्माही सम्पूर्ण प्राणी है और जो कुछ है सब आत्माही है॥

मैत्रेयी ने कहा कि आप मुझको भूल में न डालिये आप कैसे कहते हैं कि आत्मा विज्ञान घन है और फिर आप कैसे कहते हैं कि विशेष संज्ञा नहीं है। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि मैं तुझ को भूल में नहीं डालता। इस लिये इस का जाननाही अलम् है जहां भिन्नभाव होता है वहां अपने से इतर बस्तु को सूंघता है देखता है सुनता है कहता है सोचता है जानता है। परन्तु जहां सब इस का आत्मा रूपही होजाता है तो किस से किस को सूंघे किस से किस को देखे किस से किस को सुने किस से किस को कहै किस से किस को शोचे किस से किस को जाने। जिस से इस सब को जानता है उसे किस से जाने। जानने वाले को किस से जाने॥—बृहदारण्यक उपनिषद्

अध्याय २ ब्राह्मण ४ मंत्र १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ११ । १२ । १३ । १४ ॥

इसी उपनिषद् के तृतीय अध्याय में लिखा है कि राजा जनक ने एक सभा की जिस में दूर २ के ऋषि और मुनि आये थे उस सभा में राजा ने यह जानने की इच्छा कर के कि इन सब में ब्रह्मज्ञानी कौन है एक सहस्र गाय कि जिन में से प्रत्येकके सींगों पर दश २ मुहरें बँधी हुई थीं सभा में लाकर खड़ी की और यह कहा कि जो तुम ब्राह्मणों में से ब्रह्मनिष्ठ अर्थात् ब्रह्मज्ञानी हो वह इन गायों को ले जावै परन्तु किसी की हिम्मत न पड़ी कि उन गायों को ले। किन्तु याज्ञवल्क्य मुनि जो सब से पीछे आये थे उन्हों ने अपने शिष्य से कहा कि तू इन गायों को मेरे घर पहुंचादे। उस ने ऐसा ही किया। इस पर जो ब्राह्मण उस सभा में उपस्थित थे बहुत क्रोध कर के कहने लगे कि हमारे साम्हने क्या यही एक ब्रह्मज्ञानी रह गया है जो इस ने सब गायों को अपने घर पहुंचा दिया। फिर बहुत से ब्राह्मणों ने याज्ञवल्क्य से ब्रह्मज्ञान के विषय में शास्त्रार्थ किया और जब वह सब को जीत चुका तो वाचक्नवी गार्गी एक स्त्री ने ब्राह्मणों से यह कहा कि मैं इस से दो प्रश्न करती हूं जो यह उन का उत्तर दे देगा तो तुम में से फिर कोई इसको जीत न सकेगा। तब याज्ञवल्क्य ने गार्गी से कहा कि पूँछ गार्गी कहती है कि "हे याज्ञवल्क्य जैसे काशी या बिदेह के राजा का पुत्र अपने धनुष पर दो बाण अपने शत्रु के मारने को चढ़ाकर उठता है वैसे ही मैं भी तुझ से दो प्रश्न करने को उठी हूं उन का उत्तर दे"। याज्ञवल्क्य ने कहा कि पूछ। गार्गी बोली कि हे याज्ञवल्क्य जो स्वर्ग से ऊपर है और पृथ्वी के नीचे है और स्वर्ग और पृथ्वी के बीचमें है और भूत भविष्यत् वर्त्तमान कहा जाता है वह सब किसमें ओतप्रोत है। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि हे गार्गी जो स्वर्ग से ऊपर है और जो पृथ्वी के नीचे

है और जो स्वर्ग और पृथ्वी के बीच में है और जो भूत भविष्यत् वर्त्तमान कहलाता है वह आकाश में ओतप्रोत है ॥

गार्गी ने कहा कि हे याज्ञवल्क्य तुझ को मेरा नमस्कार है जो तैंने मुझ से ऐसा कहा। अब दूसरे प्रश्न के लिये तय्यार हो। याज्ञवल्क्य ने कहा कि हे गार्गी पूछ। गार्गी ने कहा कि हे याज्ञवल्क्य जो स्वर्ग से ऊपर औ पृथ्वी के नीचे है और जिसमें ये दोनों हैं और जो भूत भविष्यत् वर्त्तमान कहा जाता है वह किस में ओतप्रोत है ॥

याज्ञवल्क्य ने कहा कि जो स्वर्ग से ऊपर पृथ्वी से नीचे और जिस के अंदर यह स्वर्ग और पृथ्वी हैं और भूत भविष्यत् वर्त्तमान इस नाम से कहलाता है वह आकाश ही में ओत प्रोत है गार्गी ने कहा कि वह आकाश किस में ओत प्रोत है ॥

यह प्रश्न ऐसा था कि याज्ञवल्क्य इस का उत्तर बिना इस के नहीं दे सका था कि वह दो बातों में से एक में चूकै। क्योंकि यदि वह कहता कि यह अक्षर ऐसा है अर्थात् उस के गुण बर्णन करता तो वह वाणी से उस परब्रह्म का वर्णन करता कि जो वाणी से अतीत है और यदि वह उत्तर न देता तो हार जाता इस से गार्गी की बुद्धिमानी प्रत्यक्ष है परन्तु याज्ञवल्क्य का पाण्डित्य भी उस के उत्तर से प्रकट है ॥

याज्ञवल्क्य ने कहा कि हे गार्गी यह वही अक्षर है कि जिसको ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मज्ञानी यह कहते हैं कि वह न स्थूल है न सूक्ष्म है न छोटा है न लम्बा है न रक्त है न अन्धकार है न स्निग्धहै न छायाहै नतमहै नबायू है न आकाश है न संग है नरसहै न गन्ध है न नेत्र है न श्रोत्र है न बाणी है न मन है न तेजहै न प्राणहै न मुखहै न मात्राहै न अन्दरहै न बाहरहै न वह किसी को भक्षण करता है न किसी का भक्ष्य है। इसी अक्षर के शासन से हे गार्गी सूर्य्य और चंद्रमा अपने २ स्थान पर अलग २ स्थित हैं। इसी अक्षर के शासन से आकाश और पृथ्वी

अलग अलग अपनी २ जगह पर स्थित हैं । इसी अक्षर के शासनसे निमिष मुहूर्त दिन रात पक्ष मास ऋतु वर्ष ये सब नियमानुसार अपने २ क्रम से होते हैं । इसी अक्षर के शासन से श्वेत पर्वतों से निकल कर कोई २ नदियां पूर्व को बहती हैं कोई पश्चिम को अथवा और किसी दिशा को बहती हैं इसी के शासन से मनुष्य दाता की प्रशंसा करते हैं । देवता यजमान के पीछे जाते हैं । और पितृ दरवी होम के पीछे जाते हैं । जो इस अक्षर जाने बिना इसलोकमें हवनकरताहै यज्ञ करताहै अथवा सहस्त्रों वर्ष तप करताहै उसके हवन यज्ञ और तप थोड़े दिनके होतेहैं । हे गार्गी जो इसलोकसे बिनाजाने इसअक्षरके चलाजाताहै अर्थात् मरजाताहै वह कृपणहै और जो इस अक्षरको जान कर इस लोकसे जाताहै वही ब्राह्मणहै । हे गार्गी इस अक्षर को कोई नहीं देखसक्ता परन्तु यह सबको देखताहै यह अक्षर श्रोत्र का विषय नहीं है परन्तु सबका श्रोताहै । मनका विषय नहीं है परन्तु सबका मन्ता है बुद्धिका विषय नहीं है परन्तु सब का ज्ञाता है ।—सिवाय इस अक्षर के और कोई देखने वाला सुनने वाला संकल्प करनेवाला और जानने वाला नहीं है इसी अक्षर में हे गार्गी आकाश ओत प्रोत है ।

गार्गी ने यह सुनकर ब्राह्मणों से कहा कि यदि तुम इसको नमस्कार करके भी छूट जाओ तो बहुत जानो तुम में से कोई ऐसा नहीं है जो इसको ब्रह्म विद्यामें जीत सके यह कह कर गार्गी चुपहोगई ॥ बृहदारण्यक उपनिषद् अध्याय ३ ब्राह्मण ८ ॥

स्मृति अर्थात् धर्म्म शास्त्र में भी स्त्रियों के आदर सत्कार के विषय में बहुत कुछ लिखा है कि यदि बाप भाई पति और देवर अपना बहुत कल्याण चाहैं तो उन को उचित है कि वे अपने घर की स्त्रियों का भोजन और भूषण आदि से आदर सत्कार करैं जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उस घर से देवता प्रसन्न होतेहैं जहां स्त्रियों का सत्कार नहीं

होता वहां के सब यज्ञ आदि निष्फल होते हैं और वह घर शीघ्र ही नाश होजाता है। और जहां स्त्रियां दुःखी नहीं रहतीं उस घर की सदा उन्नति होती है। जिस कुल में पुरुष अपनी स्त्री से और स्त्री अपने पुरुष से प्रसन्न होते हैं उस कुल का सदैव कल्याण होता है इस में कोई सन्देह नहीं है। इसलिये उन लोगों को जो अपनी उन्नति चाहैं सदैव अच्छे कार्य्यों में और उत्सवों में भोजन भूषण और वस्त्रसे स्त्रियों का आदर सत्कार करैं॥ मनुस्मृति अध्याय ३ श्लोक ५५।५६।५७।५९।६०॥

इतिहासों अर्थात् महाभारत और रामायण से भी अच्छी तरह से पायाजाता है कि पहिले वक्तों में स्त्रियां बहुत बुद्धिमती होती थीं और यही कारण था कि उन का आदर भाव होता था। जैसे जब रामचन्द्र जी को बनोबास हुआ तो जिस प्रकार सीताजी ने उनके साथ बन में जाने की इच्छा की वैसी कोई और सामान्य स्त्री नहीं करसक्ती थी रामचन्द्रजी ने बन के दुःख और क्लेशों को जब सीताजी से बर्णन किया तो सीताजी दुःखी होकर कहती हैं कि यह बात बीर राजपुत्रों और अस्त्र शस्त्र के जानने वालों के कहने योग्य नहीं हैं न उन को ऐसा कहना शोभादेता है और नजो तुम कहतेहो सुनने के योग्य है। हे आर्य्य पुत्र पिता माता भ्राता पुत्र और पुत्र बंधु तो अपने २ कर्म्मों के पुण्य पाप को भोगते हैं परन्तु स्त्री अपने पतिही के साथ उस के कर्म्मों के फल को भोगती है इसलिये मुझ को आप के साथ बन में जाना ही उचित है। स्त्री का पिता माता पुत्र अथवा सहेली इसलोक वा परलोकमेंकोईसाथी नहीं होता एक पति ही उस की गति है। इस लिये जो आप घोर निर्जन बन में आजही जाओगे तो मैं आप के आगे काँटों को उखाड़ती हुई चलूंगी मुझको मेरे माता पिताने सब आश्रमों का धर्म्म सिखाया है आपके सिखानेकी जरूरत नहीं है मैं बनमें सुखसे उसीतरह रहूंगी जैसे कि अपने पिताकेघर रहतीथी

और सिवाय अपने पतिव्रत की चिन्ता करनेके त्रिलोकी की भी चिंता मुझ को नहीं है फल और फूल नित्य खाऊंगी आप को दुःख नहीं दूंगी और मैं आप के आगे जाऊंगी और आप के पीछे खाऊंगी नदियों पर्वतों तड़ागों और झिरनों को देखूंगी और सब जगह आप की सहायता से निर्भय रहूंगी मैं सिवाय आप के किसी का हृदय से चिंतन भी नहीं करती इस लिये बिना आप के मेरा जीवन कदापि नहीं हो सक्ता इसलिये मुझ को अपने साथ ले चलो मेरी प्रार्थनाको मानोमैं आप को भारी नहीं होऊंगी इस प्रकार मैं आप के साथ बन में सैकड़ों वर्ष रहने को तैयार हूं आप के वियोग में मैं एक दिन स्वर्ग में भी नहीं रह सक्ती यह मेरा निश्चय है ॥ वाल्मीकिय रामायण अध्याय २७ अयोध्या काण्ड श्लोक ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । १० । १२ । १६ । १७ । २० । २३ ॥

जिस स्त्री का पति उस के पास न होवें उस का जीना सुफल नहीं है इसलिये हे शुद्धात्मा आप में भक्ति और प्रीति करने से ही मैं सब दुःखों और क्लेशों से छुट जाऊंगी मैं अपने पति के पीछे जाऊंगी और वही मेरा परम देवता है जिस स्त्री को उस के पिता ने जल दान के साथ जिस किसी को दिया है वह स्त्री इसलोक और परलोकमें उसकीही रहती है ॥ वाल्मीकीय रामायण अध्याय २९ श्लोक ७ । १६ । १८ अयोध्याकाण्ड ॥

महाभारतमें भी जिस साहसके साथ द्रौपदी शकुन्तला और सावित्री ने अपने २ पतियों के साथ सम्बाद किया है अथवा उनकी सहायता कीहै वहभी उनकी योग्यताको स्पष्ट करताहै॥

राजा दुष्यन्त शकुन्तलासे गन्धर्व विवाह करके चला आया था पीछे जब शकुन्तला उस के समीप आई तो उसने उसको नहीं पहचाना और अपनी पत्नी होना स्वीकार नहीं कियातब शकुन्तला कहती है कि हे दुष्यन्त वहमनुष्य जो मिथ्या भाषण

करता है उस ने कौन सापाप नहीं किया वह तो चोर और आत्मघाती है तू यह समझताहै कि तूही अपने पापको जानता है परंतु तेरे हृदय में जो परमात्माहै उसको तू नहींजानता कि जो ईश्वर पापी के कर्म्म को जानता है वह तेरे पापों को भी जानताहै और तू उस की दृष्टि में पापीहै। पापी यह समझता है कि मुझ को कोई नहीं देखता परन्तु उसको देवता औरनारायण अन्तर्यामी देखते हैं वह मनुष्य जो झूठ बोलकर अपने अन्तःकरणको धोखादेता है उसका देवता कभी भला नहींकरते क्योंकि स्वयम् उसका आत्मा भी उसका भला नहीं करता-मनुष्य की स्त्री ही धर्म्म की मूल है नारी से ही नर तर जाता है जो पुरुष पहिले मरजाता है तो स्त्री उस के साथ जाती है और यदि स्त्री पहिले मर जाती है तो वह स्वर्ग में उसके आने की राह देखती है इसी हेतु से परम्परा से विवाह की रीति चली आती है। मनुष्य जो दुखों और क्लेशों और रोगों से दुःखित होता है तो उसकी स्त्रीही उसके दुःखमें उसकी साथी होती है। जैसे गर्मी के थके हुए बटोही को शीतल जलसे सुख प्राप्त होता है वैसेही मनुष्य को अपनी सुशील स्त्रीसे सुख प्राप्त होता है। इसलिये किसी मनुष्य को उचित नहीं कि वह अपनी स्त्री को दुःखदे॥

शकुन्तलाने इसी प्रकार दुःख की भरी हुई बातें और भी कहीं परन्तु जब दुष्यन्त ने उसको स्वीकार न किया तो जल कर उसने यह कहा कि हे राजन् सैकड़ों कुओं के बनानेसे एक बावली का बनाना उत्तम है। सैकड़ों यज्ञ से एक पुत्रका होना अच्छाहै। और सैकड़ों पुत्रों के होने से सत्य बोलना बढ़कर है यदि सहस्र अश्वमेध एक ओर और सत्य दुसरी ओर रख कर तोला जावै तो सहस्र अश्वमेध से सत्य विशेष होगा। समस्त वेदों का पढ़ना और समस्त तीर्थों में स्नान करना यदि सत्य के बराबर रख कर तोला जावै तो भी बराबरी न करेगा सत्य

से बढ़कर कोई धर्म्म नहीं है। सत्य सब से उत्तम है। सत्यसे बढ़कर कोई व्रत नहीं है। और दुनिया में कोई बस्तु असत्य अर्थात् मिथ्या से नहीं होती हे राजा सत्यही परब्रह्महै सत्यही उत्तम समर्थ है इस लिये तू सत्य को मत छोड़ मैंने सत्य बोला है तू भी सत्य पर आरूढ़ हो। यदि तू मेरे कहने को विश्वास नहीं करता तो मैं जाती हूं परन्तु तेरे पीछे मेरा पुत्र जो तेरे बीर्य्य से उत्पन्न हुआ है अवश्य इस सब पृथ्वी का चक्रवर्ती राजा होगा ऐसा कहकर शकुन्तला तो चली गई परन्तु उसी क्षण एक आकाश बाणी हुई कि जिस ने यह कहा कि हे दुष्यन्त तू शकुन्तला की बात को सत्य जान और इस लड़के को अपना पुत्र मान॥ आदि पर्व अध्याय ७४ श्लोक २७।२८। २९।३१।४१। ४६ । ५०।५१ ।१०२। १०३।१०४। १०५। १०६।१०७॥

इसी प्रकार जब राजा युधिष्ठिर अपने राज्य को जूआ में हार कर बन में अपने भाइयों और स्त्री को लेकर चले गये तो द्रौपदी का युधिष्ठिर से जिस साहस और उत्साह के साथ सम्बाद हुआ वह किसी सामान्य स्त्री से नहीं हो सक्ता था। द्रौपदी कहती है कि हे महाराज इस संसारमें उद्योग और उपाय ही करना चाहिये बिना उद्योग के केवल पाषाणों काही जीवन होताहै और किसी का नहीं मनुष्य और पशु में यही भेद है कि पशु अपने पहिले संस्कारको बदल नहीं सक्ताहै मनुष्य अपने पहिले संस्कार को भी अपने परिश्रम से बदल सक्ता है यदि उद्योग औरपरिश्रम न किया जावै तो जीवन नहीं हो सक्ता सो आप को भी उचित है कि उपाय करके अपने राज्य को फिर प्राप्त कर लो। यदि उद्यम किया जावै तो कोई बस्तु ऐसी नहीं है कि जो प्राप्त न हो सके। बिना परिश्रम के यदि हिमालय पर्वत के समानभी सम्पत्ति होवै तो वह भी नाश हो जाती है वे लोग जो प्रारब्ध और दैवयोग पर आश्रय करते हैं वे महा नीच और अधम हैं वे

लोग जो भाग्य और प्रारब्ध पर निश्चय करके सुख नींद सोते हैं वे ऐसी शीघ्र नाश होते हैं जैसे कच्चा पात्र पानी में। वहवस्तु जो मनुष्य अपने परिश्रम से सम्पादन करता है वही उसकी योग्यता की साक्षी है। बिना परिश्रम के धनप्राप्त नहीं होता। परमेश्वर भी मनुष्य को उसके पुण्य और पाप का फल उसके कर्मानुसार देता है यदि मनुष्य का परिश्रम और पौरुष न होवे तो ये नगर और महल आदि जो दीखते हैं कभी न दीखते यदि मनुष्य अपने कर्मों में स्वतन्त्र और स्वाधीन न होता तो कोई उस की स्तुति वा निन्दा न करता कोई मनुष्य यह बिचारते हैं कि हर एक वस्तु अपने अपने समय पर उत्पन्न होती हैं कोई भाग्य और प्रारब्ध पर और कोई अदृष्ट अर्थात् पूर्व जन्म के पुण्य और पाप पर विश्वास करते हैं परन्तु यद्यपि प्रारब्ध और भाग्य या प्रकृति या संस्कार भी कोई वस्तु है तो भी मनुष्य का पौरुष मुख्य है। बुद्धिमान् लोग अपने कामों को अपने ऊपर विश्वास करके करते हैं वे लोग जिन को अपने ऊपर विश्वास और भरोसा नहीं है कभी अपने कर्मों का फल प्राप्त नहीं कर सके मनुष्य को उचित है कि जो काम करे पूरे परिश्रम से करै और जो पूरे परिश्रम से करने पर भी उसका फल प्राप्त न होवे तो फिर उसका दोष नहीं है। बुद्धिमान् लोग अपनी बुद्धि से समय और अवसर और स्थान और धर्म्म तक को भी अपनी उन्नति के आधीन करलेते हैं निराश किसी मनुष्य को नहीं होना चाहिये भली भांति धीरज की फेंट बाँध कर यदि उद्यम किया जावै तो कार्य्य की सिद्धि अवश्यही होगी महाभारत वनपर्व्व अध्याय ३२ ॥

ऐसेही सावित्री ने भी जिस तरह से अपने पति को यम अर्थात् मृत्यु के मुख से छुड़ाया वह किसी सामान्य स्त्री का काम नहीं था इस की कथा इस तरह से है कि एक दिन सावित्री और उसका पति सत्यवान् वन में गये थे वहां पर सत्यवान्फूल

चुन रहाथा कि एकाएकी उस को पसीना आया और उस का शरीर दर्द करने लगा और वह मरगया। उस समय यमराजउसे लेने को आया, परन्तु सावित्री यमराज के पीछे चली इस पर यमराज ने उस को रोका, परन्तु वह न मानी और कहा कि जहां मेरे पति को ले जावैगा, वहाँ जाऊंगी। यह सनातन धर्म्म है। मैं अपने तप से अपनी गुरू सेवा से अपने पति की प्रीति और पतिव्रत से और आप के अनुग्रह से उसके साथ निस्सन्देह चलूंगी। न्यायकारी और पण्डित लोग सात कदम चलने को ही मित्रता कहते हैं। ऐसी मित्रता को आगे रख कर मैं कुछ कहती हूं उस को सुनिये वे लोग जो जितेन्द्रिय नहीं हैं वे धर्म्म को प्राप्त नहीं कर सक्ते न वे चार आश्रमों अर्थात् ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ बाणप्रस्थ और संन्यस्त को प्राप्त हो सक्ते हैं सत्पुरुषोंके आज्ञानुसार एक आश्रम के धर्म्म परचलने से भी पुण्य होता है। और पण्डितों ने धर्म्म कोही बड़ा माना है॥

जब सावित्री ने ऐसी बातैं कहीं तो यमराज उस से बहुत प्रसन्न हुआ और कहा कि सिवाय अपने पति के जीवन के जो कुछ तू मांगेगी मैं तुझ को दूंगा। यमराज के ऐसे कहने पर सावित्रीने अपनेश्वशुर के लियेजो अन्धा होगयाथा पहिले आंखैं मांगी यमराज ने कहा ऐसाही होगा। परंतु फिर भी सावित्री ने कहा कि मैं वहीं चलूंगी जहां तुम मेरे पति को ले जाओगे और धर्म्म की बड़ाई की फिर यमराजने कहा कि दूसरावर मांग सिवाय अपने पति के जीवन के तब सावित्री ने अपने श्वशुर के लिये राज्य जो जातारहा था मांगा और वहयमराजने दिया परन्तु फिरभी सावित्री उस के पीछे चली और जब यमराजने उस को रोका तो न रुकी और यह कहा कि हे यमराज यहसब प्रजा तेरे आधीन है और तूही सब का राजा है परन्तु मेरी बात सुन सत् पुरुषों का यही सनातन धर्म्म है कि प्राणियों में से किसी सेभी मन वाणी और कर्म से बैर न करैं और मनवाणी

कर्म्म से किसी का बुरा न चाहैं और सब पर दया करैं और दान करैं इस पर यमराज ने फिर कहा कि तू सिवाय अपने पति के जीवन के और कुछ बर मांग इस पर सावित्री ने अपने श्वशुर के जो उस के पति के मर जाने से पुत्रहीन रहगया था सौ पुत्र मांगे और यम ने वह बर दिया परन्तु फिर भी सावित्री उस के पीछे चलने से न रुकी और जब यम ने कहा कि अब तू बहुत दूर आगई है आगे मत चल तो सावित्री ने कहा कि मुझ को अपने पति के साथ होने के कारण से रास्ता मालूम नहीं पड़ता मेरा मन तो और दूरजाता है इसलिये हे यमराज तू चलते २ और भी मेरीबात सुन मनुष्यअपनेमें ऐसाविश्वास और भरोसा नहीं करता जैसे धर्म्ममें अथवा धर्म्मात्मा पुरुषमें हरएक मनुष्य की यही इच्छा है कि मैं धर्म्मात्मा मनुष्य से मित्रता करूं और अन्तःकरण की शुद्धि ही दूसरे के मन को खींच लेती है ॥

इसीपर यमराजने फिर प्रसन्न होकर कहा कि हे सावित्री धन्य है तुझको कि जो ऐसी धर्म्म की बात मुझ से कहती है अब मुझ से चौथा बर मांग कर चली जा सावित्री ने कहा कि सत्यवान् मेरे पति से मुझ को सौ पुत्र बड़े शूरबीर और हमारे कुल को चलावें प्राप्त हों यमराज ने यह बर दिया परन्तु सावित्री फिर भी न हटी। और यम के पीछे चली गई तब उस समय यमराज ने कहा कि सावित्री तू लौट जा-- परन्तु सावित्री ने कहा कि उत्तम और सत् पुरुषों का चित्त सदैव धर्म में ही रहता है और जो अच्छे मनुष्य हैं वह कभी खेद और क्लेश नहीं मानते महानुभाव मनुष्यों का महानुभाव मनुष्यों के साथ सत्संग होना कभी व्यर्थ नहीं होता। और उत्तम मनुष्यों को उत्तम मनुष्यों से कभी भय नहीं होता॥ धर्म्मात्मा मनुष्य ही अपने सत्य से सूर्य्य को चलाते हैं धर्म्मात्माही अपने तपसे पृथ्वीको सहारते हैं धर्म्मात्माही वर्तमान और भविष्यत् की गति हैं और धर्म्मात्माओं के बीच में धर्म्मात्माओं

को कभी क्लेश नहीं होता यही सनातन धर्म्म धर्म्मात्माओं का चला आताहै कि वे दूसरों का बिना किसी लाभ की आशा के उपकार करते हैं धर्म्मात्माओं के सामने कोई अच्छा काम निष्फल नहीं होता न किसी की हानि होती है इसी कारण सत्पुरुष सबकी रक्षा करने वाले होते हैं। यह बातें सुन कर यमराज ने कहा कि हे सावित्री जैसे २ तू धर्म्म की बातें कि जो बड़े तात्पर्य से भरी हुई हैं मेरे आगे कहती है वैसे २ मेरी तेरेमें भक्ति होती है और मैं तेरा आदर करता हूं मुझे अब निश्चय होगया कि तुझ से विशेष कोई पतिव्रता स्त्री नहीं है इसलिये अब तू उस अनमूल्य वरको जिसको तू चाहती है मांग। तब तो सावित्री कहती है कि हे महाराज जो पुत्र तुमने मुझ को दान किये हैं वह मेरे पतिके सजीव होने बिना उत्पन्न नहीं हो सके इसलिये मैं यही वर मांगती हूं कि सत्यवान् मेरा पति सजीव होजावै मैं अपने पति के बिना मरी हुई हूं बिना अपने पति के मैं किसी सुख को नहीं चाहती बिना अपने पति के मुझ को स्वर्ग की भी इच्छा नहीं है विना अपने पति के मैं द्रव्य की भी इच्छा नहीं करती विना पति के मैं जीना नहीं चाहती तुमने मुझ को सौ पुत्र दिये हैं परंतु तुम मेरे पतिको लिये जाते हो अब मैं यही वरमांगती हूं कि मेरा पति सजीवन होजावै॥ जब सावित्री ने ऐसा कहा तो यमराज ने अपनी फांसी को खोल दिया और प्रसन्न होकर सावित्री से कहा कि ले तुझ को तेरा पति लहना पावना होवै (महाभारत वनपर्व अध्याय २९६)

इसी वनपर्व में एक कथा नलोपाख्यान के नाम से है कि जो दमयन्ती के पतिव्रत को प्रकट करती है वह कथा इस प्रकार है कि निषध देश का राजा नल बड़ा सत्यवादी और योग्य था परन्तु वह जूआ खेला करता था विदर्भ देश के राजाकी लड़की दमयन्ती ने कि जो अपने स्वरूप और गुणों में लक्ष्मी

के समान थी उसको स्वयम्बर में बरा दमयन्ती के रूप और गुणों की बड़ाई सब देशमें फैल गई थी और इन्द्र और सब देवता नल समेत उस स्वयम्बर में आये थे।

नल और दमयन्ती परस्पर पहिले ही से आशक्त थे परन्तु देवताओं ने आकाश से उतर कर नल से यह बात कही कि हे नल तू सच्च बोलने वाला है हमारी सहायता कर जब नल ने उनकी सहायता करने को प्रतिज्ञा की तो उन देवताओं में से इन्द्र ने कहा कि मैं इन्द्र हूं अग्नि ने कहा कि मैं अग्नि हूं यम और वरुण ने कहा कि हम यम और वरुण हैं हम सब दमयन्ती को वरने आये हैं तू हमारा सँदेशा उसके पास लेजा और कह दे कि ये सब देवता तेरे वरने को आये हैं नल ने उत्तर दिया कि मैं आपही दमयन्ती के लिये आया हूं तो क्यों कर ऐसा संदेशा ले जा सकाहूं परन्तु जब देवताओं ने उसकी प्रतिज्ञा की याद दिलाई और कहा कि तू सत्यवादी है तब उसने जाना स्वीकार किया और जाकर दमयन्ती से कहा कि मेरा नाम नल है और मुझ को देवताओं ने जो तेरे लिये आये हैं भेजा है दमयन्ती ने उत्तर दिया कि मैं तो तेरी होचुकी यदि तू मुझ को छोड़ैगा तो मैं मरजाऊंगी इस पर नल ने बहुत समझाया और देवताओं के गुण वर्णन किये परन्तु दमयन्ती ने न माना और नल से कहा कि जब स्वयम्बर हो तो तूभी देवताओं के साथ आजाइयो और मैं तेरे गले में हार डाल दूंगी ॥

तब तो नल वहां से चला आया और जो कुछ दमयन्ती ने उस से कहाथा वह उसने देवताओं से कहदिया इसपर जब स्वयम्बर का समय आया तो सब देवताओंने नलका रूप धारण करलिया और जब दमयन्तीने देखा कि एकनल की जगह पांचनल एकही रूपके उपस्थित हैं और कोई भेद नहीं है तो दुःखी होकर देवताओं से प्रार्थना की और कहा कि मैं नलको पहिलेसेही बरचुकीहूं और मैं उसीकी होचुकीहूं अबमेरे ऊपर देवता कृपा करके

अपना असली रूप बनालें तो मैं नलके गले में हारडालदूं--तब तो देवताओं ने ऐसाही किया और दमयन्ती ने नलके गले में हार डाल दिया ॥

इसके थोड़े दिनोंके पीछे नल अपने भाई के साथ जुए में सब राज्यको हारगया और वह और दमयन्ती कि जिसके पास केवल एक धोती रहगई थी नगरसे बाहर निकलकर तीनरात दिन केवल पानीसे निर्वाह करते रहे जब क्षुधाको न सहसके तो राजा नल जंगलमें मेवा और फलके खोजने को गया और दमयन्ती उसके पीछे पीछे चली बहुत दिनों के पीछे नलको कुछ पक्षी सुनहरी परके दिखाई दिये उनको देखकर नल प्रसन्नहुआ और सोचा किया कि अन्तमें कुछ तो खाने को मिला परन्तु जब उसने उन पक्षियों के पकड़ने को अपनी धोती उनपर डाली तो वे धोती समेत उड़गये और नल नंगा रहगया और पक्षियों ने आकाशमेंसे पुकार कर कहा कि हम वेही पाशेहैं जो तू खेलता था और हम तुझको सर्वथा नंगा करने आयेथे ॥

जब नलकी ऐसी दुर्दशा हुई तब उसने दमयन्तीसे कहा कि ऐसी आपत्ति में हम और तुम अलग होजावें तू उस मार्ग चली जा और मैं इस मार्ग जाताहूं दमयन्ती ने कहा कि हे राजा तेरी बात को सुनकर मेरा हृदय फटताहै ऐसे विपत्तिमें तुझको छोड़ कर कैसे जा सक्तीहूं। ऐसी विपत्ति में जब तू मार्गका थका और भूखा अपने पूर्व सुख औ समृद्धि को याद करैगा तो मैं तेरेदुःख की साथी हूंगी स्त्रीसे अधिक विपत्ति कालमें और कोई औषधि नहींहै नलने उत्तर दिया कि जो तू कहती है सत्यहै ऐसा कहकर नलने दमयन्तीको बहुत कुछ दिलासादी और आधी साड़ी आप पहनली और आधी उसे दे दी ॥ और उसी एक धोती के टुकड़ों को लपेट कर दोनों थके हारे धूलसे लिपेटे हुए और विपत्ति के क्लेश सहारते हुए एक जंगल में पहुंचे वहां पर दमयन्ती सो गई इसपर नल ने सोचा कि जब मेरा राज्य जाता

रहा और मेरे सब इष्ट मित्र और सम्बंधियों ने मुझे छोड़ दिया तो मेरे लिये अब मरनाही उचितहै ऐसे सोचकर और इस कारण से कि विपत्तिमें मनुष्य की बुद्धि नष्ट होजाती है उसने उसी जंगलमें दमयन्ती को छोड़कर जानेका विचार किया फिर बहुतसी देर शोच बिचार करता रहा अन्तको रोता हुआ और दमयन्ती की ओर बारम्बार देखता हुआ उसको जंगल में अकेला छोड़कर चलागया जब दमयन्ती सोकर उठी और नलको अपने पास न देखा तो बहुतहीरोई और चिल्लाई और बावली सी महाराज २ हाय २ मुख से कहती हुई जंगल में फिरती थी कि एक अजगर ने उसको पकड़लिया दमयन्ती बहुत चिल्लाई और पुकार कर कहने लगी कि महाराज जब तुम मेरे मरने को सुनोगे तो तुम्हारी क्या दशा होगी और तुम को तुम्हारी बिपत्ति में कौन दिलासादेगा दमयन्ती इसी तरहसे पुकाररही थी कि एक बधिकने उसको सांपके मुखमें फँसा देखकर सांप का शिर काटकर उसको छुड़ाया और दमयन्ती से कहने लगा कि हे सुन्दरी तू इस निर्जन बनमें क्यों इस विपत्तिमें फिरती है दमयन्तीने अपनी सब कथा कह सुनाई परन्तु उस दुष्टने उस पर कुदृष्टि की चाहताथा कि अत्याचार करै परन्तु दमयन्ती ने उस समय अपने दुःख आपत्ति और पतिव्रत को स्मरण करके शाप दिया कि यदि मैं और पुरुषका सिवाय राजा नलके मन में चिन्तनभी नहीं करती तो मेरे सत्त के बल और प्रभावसे यह दुष्ट और नीच बधिक अबही पृथ्वी पर गिरकर मरजावै। उसके शाप ने भीलको ऐसा मार दिया कि जैसे बिजली वृक्षको जला कर भस्मकर देतीहै उस भीलको मार कर दमयन्ती उस घोर निर्जन भयानक बनमें कि जहां सिंह व्याघ्र और चीते और अरने भैंसे और भालू और चोर अनेक प्रकारके दुःखदायी जीव रहतेथे अपने पतिव्रत और नेकी और सत्य और तपके आश्रय पर नलको ढूंढ़ती हुई निर्भय होकर आगे चली सिवाय

नल के और किसी का ध्यान उसके चित्त में न था । कभी पहाड़ों को कभी नदियों को कभी वृक्षों को कभी बनके जीवों को अपना रोना सुनातीथी और इसीप्रकार परमेश्वर पर भरोसा किये हुए चली जाती थी कि सामने से उसको एक आश्रम ऋषियों का दिखाई दिया उस आश्रममें जाकर उसने ऋषियों को यथायोग्य नमस्कार किया उनके सामने दमयन्तीने अपनी सब कथा और दुःख वर्णन किया और ऋषियोंने अपने तपके बल और प्रभावसे यह कहा कि तेरा पति तुझको जल्दी मिलेगा यह कहकर वह आश्रम और ऋषि एक साथही अन्तर्द्धान होगये और सिवाय एकघोर भयानक बनके और कुछ भी न दीखा और दमयन्ती उसी आश्चर्य्य में रहगई कि यह आश्रम और ऋषि कहां उड़िगये । फिर वहांसे नलको स्मरण करती हुई और नेत्रोंसे आंसु बहाती हुई आगे चली—इतने में उसने एक समूह व्यापारियों का देखा उन्होंने यह देखकर कि एक सुन्दर स्त्री बावलीसी तनसे नंगी और पेटसे भूखी धूलमें भरी हुई चली आती है कोई तो भय खाकर भागगये कोईको बहुतही संदेह हुआ कोई उसकी हँसी करने लगे कोईने कृपा करके पूंछा कि तू कौन है और किसकी है और कहांसे आई है मनुष्यहै वा पशुहै वा देवता है वा राक्षसी है वा कौन है दमयन्ती ने कहा कि मैं मनुष्य हूं और राजाकी पुत्रीहूं और राजाके साथ व्याही गईहूंहै मेरा पति राजा नलथा कि जो अपने राज्य को जूएमें हार कर बनको निकलगया और मैं उसको ढूंढती फिरती हूं तुमको उसका पता मालूम हो तो मुझको जल्दी बताओ । व्यापारियों के मुखियाने कहा कि नलका हमको पता तो मालूम नहीं है न हमने उसका कभी नाम सुना परन्तु तू हमारे साथ चल ईश्वर चाहै तो तुझको पता मिल जावेगा हम सुबाहु राजा के नगरको जाते हैं तब तो दमयन्ती उनके साथ चली रास्ते में वे लोग एक तलाब के किनारे पर उतरे और वहां पर रात को

जब सब लोग सो गये तो जंगली हाथी उनपर चढ़ आये और उनमें से बहुत से आदमी हाथियों के नीचे दबकर और बहुत से भयसेही मरगये तब उस समूह पर ऐसी आपत्ति आई तो लोगों ने यह कहा कि इस अभागी पागल स्त्री के कारण हम पर यह विपत्ति आई है यह स्त्री राक्षसी है वा पिशाच-नीहै यह आपत्ति उसनेही डाली है यदि हम उसको देखेंगे तो बिना मारे न छोड़ेंगे दमयन्ती इन बातोंको सुनकर मन में कहने लगी कि हाय यहां भी विपत्तिने चैन न लेने दिया। फिर रोती हुई और विलाप करती हुई और यही कहती हुई कि मेरे पापोंसे ही इन व्यापारियों के समूह पर यह आपत्ति आई और अपनी पहिली दशाको याद करती हुई वहां से आगे चली और एक दिन सायंकालके समय आधी धोती पहिने हुए सुवाहु राजाके नगरमें पहुंची नगरके लोग उसकी ऐसी बुरी दशाको देखकर कोई कोई तो भय खाकर भाग गये और कोई उसके पीछे चले इसी बुरी दशामें वह विचारी राजाके महलके नीचे पहुंची कि उसमहल की रानीने उसको देखकर तुरन्त बुलवाया और उसका समाचार पूछा दमयंतीने उत्तर दिया कि मैं बड़े घर की स्त्री हूं और अपने पतिको ढूंढ़ती फिरती हूं इस पर रानीने कहा कि तू कुछ दिन मेरे यहां निवासकर मैं तेरे पतिको ढुंढ़वादूंगी दमयंतीने उत्तर दिया कि मैं तेरे यहां इस प्रतिज्ञा के साथ रहूंगी कि मैं किसी का जूंठा न खाऊंगी न मैं किसी के पांव धोऊंगी न मैं किसी पुरुषको देखूंगी न बात करूंगी और यदि कोई पुरुष को देखूंगी न बात करूंगी और यदि कोई पुरुष मुझको अपनी स्त्री करना चाहैगा तो उसको दण्ड दिया जावैगा यदि तू इन बातों को स्वीकार नहीं करती तो मैं नहीं रहती रानीने इन बातों को स्वीकार किया और दमयन्ती उसके पास रहने लगी और उसकी बेटी के (सहेली) सारि-न्ध्री होगई अब नलका व्याख्यान संक्षेपसे यह है कि दमयन्ती

को छोड़कर जब वह आगे चला तो उसने जंगल में एक बड़ी अग्नि प्रज्वलित देखी उस अग्निमें एक सर्प जलताहुआ दृष्टि पड़ा उसने नलसे कहा कि मैं करकोटक नामी नागहूं नारदऋषिके शापसे यहां पड़ा हूं और एक पैंड भी नहीं चल सका तू मुझ को इस शाप से छुड़ा मैं तेरा साथ दूंगा तब नल ने उस सर्प को वहां से उठा लिया और अग्नि से निकाल लाया परन्तु जब उसको गिराना चाहा तो सर्प ने कहा कि तू चलते हुए अपने पैड़ों को गिन और जब दश तक पहुंचा तो तुरन्त सर्प ने उस को डस लिया अर्थात् काट खाया कारण इसका यह था कि संस्कृतमें शब्द "दश" के दो अर्थ हैं एक दश संख्याका और दूसरा काटना सर्प को राजा के काटने में लज्जाथी इसलिये उसने उसके साथ यह चाल करी ज्योंहीं कि सर्प ने राजा को काटा उसका रूप बदल गया सर्प ने कहा कि मैंने इसलिये तुझको काटा है कि लोग तुझको पहचान न सकें मेरा बिष तुझको कुछ दुःख न देगा तू अयोध्या नगर में जा और वहां के राजा ऋतुपर्ण से कह कि मैं सारथी अर्थात् रथका हांकने वालाहूं और वाहुक मेरा नाम है सर्प ने उसको दो वस्त्र भी दिये और कहा कि जब तू इनको पहनेगा तो तेरा असली रूप होजावेगा नल ने ऐसाही किया और राजा ऋतुपर्णके यहां रथवानी करतारहा परन्तु दमयन्ती का ध्यान रात दिन लगा रहताथा इतने में ही राजा भीम दमयन्ती के पिताने अपनी पुत्री और जमाई की सुधन पाकर उनके खोजने को ब्राह्मणों को भेजा उनमें से एक ब्राह्मणने दमयंती का पता छेदी नगरमें लगाया और देखा कि रानी की पुत्री की जो सहेलीहै उसकेरूप और गुण दमयंती केसे ही हैं दमयंती के माथे पर एक चिह्न था वह उस ब्राह्मणको याद आया जब दमयंती उसके सामने आई और दोनों की बात चीत हुई और राजा की पुत्री ने उसका मुंहधोया तो वह चिह्न चंद्रमा सा उसके मुंहपर चमकने लगा जब रानी ने यह देखा तो

उसने दमयन्ती को पहिचान कर कहा कि तू तो मेरी बहन की बेटी है हाय मैंने अब तक तुझ को नहीं पहचाना इतना कह कर रानी ने उसका बड़ा आदर किया और उसको उसके बाप के घर भेज दिया वहां जाकर दमयन्तीने अपने पिता के यहां के ब्राह्मणों को नलके खोजने को भेजा और कहा कि जहां जाओ वहां यह वचन कहो "हे मेरे प्यारे ज्वारी तू आधी धोती का टुकड़ा देकर अपनी स्त्री को जो तेरे वियोग में मर रही है छोड़ कर कहां चला गया वह बिचारी तेरी आज्ञानुसार आधी धोती पहने हुए तेरेलिये बैठी है हे राजा तू कृपा कर और उसके दुःख को दूर कर" और यह भी कहना कि पतिका यह धर्म्म है कि अपनी स्त्री की रक्षा करे तू ने तो अपना धर्म्म भी जानकर अपनी प्यारी स्त्री को छोड़ दिया न जाने यह मेरेही पापों का फलहै। हे महाराज मेरे ऊपर कृपा करो मैंने आपके ही मुखसे यह सुना है कि दया से बड़ा कोई पुण्य नहीं है" दमयन्ती ने ब्राह्मणों से यह भी कहा कि यदि कोई मनुष्य तुम को इन वचनों का उत्तर देवै तो उसका पता ठिकाना पूछ करके तुरन्त मुझ से कहो ब्राह्मणोंने बहुत कुछ खोज लगाया निदान एक ब्राह्मण ने अयोध्यामें ये वचन कहे तो बाहुकने कि जो वास्तव में नल था यह कहा कि जो स्त्रियां पतिव्रता होती हैं अपने सत्त को आपत्काल में भी नहीं छोड़तीं उसी के बल से वे स्वर्ग पाती हैं यद्यपि उनके पति उनको छोड़ भी दें तो भी वे उन का तिरस्कार नहीं करतीं और अपने सत्त से नहीं डिगती हैं ऐसी स्त्री को अपने पति पर क्रोध न करना चाहिये क्योंकि उसने उस को आपत्ति काल में कि जब उसकी मति ठिकाने न थी छोड़ा पतिव्रता सुन्दरी को अपने पति से कि जिसका वस्त्र पक्षी ले गये ऐसे समय में कि जब वह विपत्ति का मारा भोजन खो-जने को वनमें गयाथा अप्रसन्न न होना चाहिये उसके पतिने उस से कैसा ही वर्त्ताव कियाहो परन्तु उसको उचित है कि उस की

दशा को यादकरै कि राज्य उसका जाता रहा था और विपत्ति उसपर आगई थी॥इनबातों से दमयन्ती ने उसी क्षण पहचान लिया कि यही नलहै और यह प्रगट किया कि मैं दूसरा स्वयंबर करूंगी जबयह समाचार राजा ऋतुपर्ण को पहुंचे तो उसने कहा कि मैं भी उस स्वयम्बर में जाऊँगा और बाहुकसे कहा कि तू मुझको एक दिनमें वहां पहुंचादे जब बाहुक नलने यहसमाचार सुना तो दुःख और क्लेशसे उसका हृदय फटने लगा और सोचा कि कदाचित् दमयन्ती की मति विपत्ति के मारे जाती रहीहो अथवा उसने यह उपाय मेरेही वास्ते किया हो अथवा यह मेरेही पाप का फल है कि स्त्री का स्वभाव स्थिर नहींरहता ऐसा विचार करके उसने राजा से जाकर कहा कि मैं तुमको कलही वहां पहुंचादूंगा। निदान जब राजा रथपर सवारहुआ तो नलकी चतुराई को देखकर जीमें कहने लगा कि सिवाय राजा नलके और कोई ऐसा नहीं है कि जो घोड़ों को हांकसके जब रास्ते में राजा ऋतुपर्ण और नल चलेजाते थे तो कलियुग ने कि जोराजानल के ऊपर सवारथा उसको छोड़दिया और राजा ऋतुपर्ण और नल दमयन्ती के नगर में पहुंचे तो वहां पर ऋतुपर्ण ने न कोई और राजा देखा न कोई स्वयम्बर की चर्चा सुनी न उसकी तैयारी देखी निदान लज्जित होकर दमयन्ती के पितासे कहने लगा कि मैं तुमसे मिलने आयाहूं दमयन्ती का पिता भी इसी आश्चर्य में था कि सौ कोससे राजा ऋतुपर्ण मेरे पास किसलिये आयाहै। इसीसमय दमयन्ती ने एकदासी को भेजकर कहा कि इसरथ का हांकने वाला जो कुरूप सा आदमी सामने बैठा उसके समाचार पूंछआ कि कौन है तबतो उसदासी ने वेही बचन जो दमयन्ती ने ब्राह्मणों से कहे थे नलके सामने कहे और उसने वेही उत्तर जो ब्राह्मण को दिया था दिया इसपर दमयन्ती को दृढ निश्चय होगया कि यही नलहै परंतु फिर भी और दृढ़ता के लिये उसने दासी

से कहा कि इसके चलन वर्ताव को ध्यान से देखिमा कि क्या करताहै निदान लौंड़ीने आनकर कहा कि मैंने इसमनुष्य का अद्भुत तमाशा देखा कि जब यह किसी नीचे द्वारके पास आताहै तो यह झुककर नहीं चलता किंतु द्वारऊंचा होजाता है और जब राजा ऋतुपर्ण के लिये राजा भीम ने बहुत प्रकार के मांस भेजे और बहुत से पात्र जलके लिये भेजे तो उसकी दृष्टि डालतेही उनमें जल भरगया यहभी देखा कि उसने एक मुट्ठी घास लेकर सूर्य्य को दिखाई तो उस में आगलगगई और वह आगको हाथमें लेकर भी नहीं जला और जहां चाहे वहां जल निकाल लेता है यहां तक कि यदि किसी फूल को हाथ में मलताहै तो फूल की सुगन्धि नहीं जाती इस पर दमयन्ती को और भी दृढ विश्वास होगया फिर उसने कुछ मांस जो नल ने पकाया था मँगवा कर चक्खा तो जो कुछ संदेह रहाथा वहभी जातारहा। फिर उसने अपने पुत्र और पुत्रीको दासी के साथ नल के पास भेजा और उनको देखकर नल ने दासी से कहा कि हाय मेरे बालक भी ऐसेही थे दमयन्ती यह बात सुनकर व्याकुल हो गई और अपनी माता से कहलाभेजा कि मैंने निश्चय कर लिया कि बाहुक जो राजा ऋतुपर्ण के साथ रथ हांकता है वही नल है अब मैं उसको देखकर उस की आकृति को भी परीक्षा करना चाहती हूं निदान दमयन्ती ने नल को देखकर निश्चय कर लिया कि यही नल है और अपनी माता से भी कहदिया कि मेरा पति मुझ को मिलगया फिर वे दोनों वहां से अपने राज्य को चलेगये और नलने अपने राज्य को फिर जीत लिया इसी दमयन्ती का धैर्य्य और पतिव्रत अब तक हिन्दुस्थान में प्रख्यात है। महाभारत बन पर्व अध्याय ४२ लगाय ७९ ॥

योग वसिष्ठ महारामायणमें जोव्याख्यान रानीचुड़ाला और राजा शिखर ध्वज का लिखा है और जिसतरह कि रानीने राजा

को आत्म ज्ञान दिया वह उस की योग्यता का बड़ा प्रमाण है रानी को ज्ञान होगया था परन्तु जब उसने राजा को ज्ञानदेना चाहा तो राजा ने यह विचार किया कि यह स्त्रीहै और स्त्रियों को ज्ञान नहीं होता इसलिये उसने उसके उपदेश को नहीं सुना। निदान राजा के मन को भी संसारसे वैराग्य हुआ और एक रात को वह अपना सब राज्य पाट छोड़कर जंगल में चलागया जब रानी को मालूम हुआ तो उसने पहिले तो राज्य के प्रबन्ध की ओर ध्यान दिया और जब राज्यका प्रबन्ध करलिया तो राजा के खोजने को चली रानी निर्जन बन और पर्वतों और नदियों को तैं करती हुई उस स्थानपर पहुंची कि जहां राजा शिखरध्वज तप करता था वहां पर यह विचार करके कि अगर मैं अपनी असली रूपसे राजाके पास जाऊंगी तो राजा मेरी बातको न सुनैगा उसने एक मुनि पुत्रका रूप बनाया और राजा के पासगई राजा ने उसको मुनि पुत्र जानकर बड़ा आदर सत्कार किया और कहने लगा कि हे मुनि पुत्र मैंने अपने मनको वशमें करने के लिये बहुत तप किया है और सब वस्तुओं का त्याग किया तो भी मेरा दुःख दूर नहीं हुआ रानी ने पूछा कि हे राजा तूने क्या२ त्याग किया राजा ने जवाब दिया कि मैंने सब राज्य छोड़ दिया रानी ने कहा कि तू ने क्या छोड़ा है राज्य में तेरा क्याथा जैसा राज्य आगेथा वैसा अब भी है इसलिये तू ने कुछ भी त्याग नहीं किया। फिर राजा ने यह सोचकर कि यह बन और यहां के वृक्ष और फल फूल मेरे हैं इनको छोडूं उनका त्याग किया परन्तु रानी ने कहा कि तू ने क्या त्याग किया इनमें तेरा क्या था जो तूने छोड़ा इसी तरह राजा ने जो कुछ कि उसके पास खाने के बरतन या मृगछाला या माला या कुटी इत्यादि थी उन सबको त्याग किया और आग में जला दिया परन्तु रानी ने फिर भी कहा कि हे राजा ये वस्तु तेरी नहीं थी तू ने इनका त्याग क्यों-

कर किया। तू उस बस्तुका त्यागकर कि जो तेरी है इसपर राजा ने यह बिचार करके कि केवल मेरा शरीर बाकी रहा है उसका भी त्याग करूं उठ खड़ाहुआ और चाहता था कि आग में गिरै कि रानी ने उसको रोका और कहने लगी कि हे राजा इस पुण्यवान् शरीर के त्यागने से क्या होता है तू उसको त्याग कर कि जो तेरा है अर्थात् तू अपने अहंकार और अभिमान को त्यागकर तेरा अहंकारही तेरा है तू उसको छोड़ हे राजा तू बन में आकर यह समझता है कि मैं ज्ञानी होगया तेरा यह समझना ठीक नहीं है जबतक तू अपने अहंकार को न छोड़ेगा तब तक तू सुखी न होगा यह धन और राज्य और सुहृदमित्र इत्यादि तेरे साथी नहीं हैं न तेरे हैं तू अपने अहंकारको जिसने तुझको इसदुःख में डाला है छोड़ ऐसे कहकर रानी ने राजा को ज्ञानका उपदेश किया और यह कहा कि यह अभिमान कि मैं राजाहूं यही दुःख का कारण है और यह बिचार कि मैं कुछ नहीं हूं यही सुख का हेतुहै हे राजा तू यह बिचार किया तो मैं-ही कुछ नहींहूं या यह सब जगत् मैंहीहूं और मुझ से अलग-यह जगत् नहीं है जब तेरा मनशान्त होजावैगा और भोगों की वासना जाती रहैगी तब तुझको ज्ञान होगा। इस प्रकार रानी ने राजा को ज्ञान देकर उसके दुःख को दूरकिया और उस के ज्ञानकी परीक्षा बहुत लीकी परन्तु जब राजा अपने ज्ञान पर दृढ़रहा तो उसको उसके राज्य में ले आई और वहां पर राजा ने बहुत दिनोंतक सब काम किये अपनी प्रजा को सुख दिया सब काम करता रहा परन्तु किसी के फलकी इच्छा न की दुःख सुख हानि लाभ सब में सम याने बराबर रहा सदा भीतर से तो ज्ञानरिहा और बाहर से अपना काम करतारहा और जीवन-मुक्त होकर विदेहमुक्त हुआ-- योगवासिष्ठ महारामायण निर्वा-णप्रकरणअध्याय ७७ से लेकर ११० तक—

आज कल के समयमें भी मण्डन मिश्र की स्त्री सरस्वती

का व्याख्यान शंकर दिग्विजय में लिखा है मण्डनमिश्र और शंकराचार्य्य का जो सम्बाद कर्म और ज्ञान के विषय में हुआ उसमें सरस्वती पञ्च हुई और उसने अन्त में यह न्याय किया कि उसका पति मण्डन मिश्र शंकराचार्य्य से हारगया परन्तु सरस्वती ने कहा कि तूने मेरे पति को तो जीतलिया अबमुझ को जीत और ऐसे प्रश्न किये कि जिनका उत्तर शंकराचार्य्य भी मुशकल से देसके ॥

कालिदास की स्त्री विद्योत्तमा का भी व्याख्यान इस तरह पर लिखा है कि वह सरोदानन्दन राजा की बेटीथी और केवल रूपवती ही नथी किन्तु बड़ी पण्डिता भी थी इसलिये उस ने अपनी विद्याके अभिमान से यह कहाथा कि मेरा पति वही होगा जो मुझको शास्त्रार्थ में जीत लेगा बहुत से पण्डितों ने उसको जीतना चाहा परन्तु सब हार गये तब तो क्रोध कर के उसका अभिमान तोड़ने के लिये वे जंगल में किसी मूर्ख के खोजने को चले और वहां उन्हों ने एक मनुष्य कालिदास को एक वृक्ष पर बैठे देखा कि वह जिस शाखा पर बैठाथा उ-सी को काट रहाथा पंडितों ने यह समझ कर कि इस से अधिक कोन मूर्ख होगा कालिदास को वृक्ष से उतार कर कहा कि तू हमारे साथ चल और कुछ बोलना नहीं और जो कुछ तुझसे पूछा जावै तोइशारों से जवाब दीजियो।ऐसा समझाकर पण्डित कालिदास को लेकर राजा की सभा में गये और वहां उसकी बहुत सी प्रशंसा की और यह कहा कि यही हमारागुरू है और विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ करैगा परन्तु इसने यह नियम कर लिया है कि सिवाय इशारों के वाणीसे कुछ भी नहीं कहता इस पर शास्त्रार्थ का प्रारम्भ हुआ जब विद्योत्तमा ने कालि-दास की ओर एक उँगली उठाई यह सूचना करने कि सब सृ-ष्टि का उत्पन्न करने वाला एकही है कालिदास ने यह समझ कर किरानी मेरी आंख फोड़ना चाहती है दो अँगलियां उठाई

यह दिखाने को कि यदि तू मेरी एक आंख फोड़ैगी तो मैं तेरीदोनों आंख फोड़ दूंगा इसपर पंडितों ने बहुत कुछ वाह२ कीं और यह कहा कि हमारा गुरू विद्योत्तमासे जीत गया क्योंकि रानी ने तो एक अँगुली उठाने से सृष्टि के पैदा करने वालेको ठीक २ नहीं समझा परन्तु हमारे गुरूने दोअं· गुलियें के संकेत से यह जताया कि प्रकृति और पुरुष दोनोंके संयोग से सृष्टि उत्पन्न होती है इसपर रानी ने अपनी हारमानी और कालिदास उसका पति होगया ॥ कहते हैं कि जब रानी को उसका असली हाल मालूम हुआ तो वह बड़ी दुःखी हुई परन्तु कालिदास थोड़े कालमेंही विद्या पढ़कर ऐसा पण्डित हुआ कि वह विक्रमादित्य की सभा के नव रत्नों में से एक गिना गया ॥

लीलावती का वृत्तान्त भी मशहूर है यह स्त्री लड़कपन में विधवा होगई थी और अपने पिता से उसने विद्यापढ़ी थी यहां तक कि वह एकबार देखकर यह कहसक्ती थी कि इस वृक्ष में कितने पत्ते और फल हैं इसी लीलावती के नाम से उसके पिता भास्कराचार्य ने लीलावती ग्रन्थ गणित विद्या का संस्कृत में लिखा और उस पुस्तकमें पिता और पुत्री के प्रश्नोत्तर हैं ॥

आजकल के समय में भी भारतवर्ष में बहुतसी स्त्रियां प्रख्यात हुई हैं इन सब में सबसे बढ़कर मीराबाई चित्तोड़की हुई है यह स्त्री सन् १४२० ईसवी के लगभग हुई थी चित्तोड़ के राजा कुम्भकर्ण की रानी थी उसकी भक्तिऐसी थी कि जो आज तक किसी स्त्री या पुरुष की नहीं हुई उसके भजनों को आज तक लोग गाते हैं हर हिन्दूको उसका भजन "मेरे तोगिरिधर-गोपाल दूसरा न कोई,, गाते सुनलो कहते हैं कि वह कृष्ण महाराज की मूर्त्तिकी ऐसी भक्ति और प्रेम के साथ पूजा करती थी कि वह मूर्त्ति चैतन्य होगई और सिंहासन से उतरकर यह कहकर कि मीराकी जयहो उसके लिपटगई और रानी उसी

हालत में मरगई उसकी स्वसुराल के लोगों ने उसकी भक्तिके कारण उसको बहुत दुःख दिया एक समय उसके पति ने बिष का प्याला उसकेमारनेके लिये भेजा मीराने प्रसन्नतासे पीलिया और न मरी जोभजन उसने उससमय पर गायाथा वह अबतक मशहूर है--मीरा के मारन के कारण घोलो है जहर खरौसो। रामनाम से अमृत होगयो हँस हँस पान करौसो ॥ मीरा के मारने के लिये जहर घोलागया रामनामसे अमृत होगया और हँस हँस कर पीलिया-जब मीरा बाई वृंदाबन और द्वारिका की यात्रा को गई तो उससमय भी उसको कृष्णमहाराजने साक्षात् दर्शन दिये मीरा बाई के जितने छन्द हैं उन से प्रगट है कि किसी देशमें कोई स्त्री आज तक ऐसी नहीं हुई कि जिस की परमेश्वर में ऐसी भक्तिहो ॥

इस समय में भी महारानी अहल्या बाई इन्दोर की रानी का धर्म और पुराय प्रख्यात हैं उसने अपने राज्य का बहुत दिन तक कि जब उस पर शत्रुओं की मारा मार चारों ओर से थी बहुत अच्छा प्रबन्ध किया कोई जगह तीर्थ की ऐसी नहीं है कि जहां अहल्या बाई का घाट या धर्म्मशाला या मन्दिर नहो यह अहल्या बाई सन् १७३५ ईसवी में पैदा हुई थी और उस के गुण ऐसे थे कि जो हरेक देश के राजा के चाहे पुरुष हो वा स्त्री भूषण होंगे। अहल्या बाई इन्दोरकी राजगद्दी पर सन् १७६५ ईसवी में बैठी और सन् १७९५ ईसवी याने तीस वर्ष तक राज्य करती रही। हिन्दू और मुसलमान जो उस समयमें इस देश के राजा थे उसको बहुत मानते थे और २ सब जाति के लोग उसके शुभ चिन्तक थे इन्दोर नगर अहल्या बाई ने सन् १७६७ ईसवी में बसाया था। अहल्या बाई दिन निकलने से एक घंटे पहिले उठकर अपना नित्य नियम शास्त्रोक्त करती थी और फिर दो बजे तक कथा सुनती थी और पुराय दानकरती थी और दो बजे से छः बजे तक अपने राज्य का

प्रबन्ध इसतरह करती थी कि जित तरह आज कल हिंदुस्तानी राजों में कोई नहीं करता अर्थात् हरएक काम को आप करती और हरएक मनुष्य से मिलना सदा परमेश्वर का भय मानना और यह ध्यान रखना कि बड़े अधिकार का उत्तर ईश्वर को देना पड़ेगा पक्षपात ईर्षा द्वेषका उस स्त्री में नाम न था इसलिये कोई आश्चर्य नहीं कि मालवे के लोग उसकी आजतक पूजा करते हैं और अवतारों के समान उसको मानते हैं ॥

इस देश में और भी बहुतसी स्त्रियां हुई हैं कि जिनके यश लोगों के मुख से सुनेजाते हैं परन्तु इन थोड़ेसे उदाहरणोंसेही प्रगटहोगा कि यहां की स्त्रियां सर्वदा योग्य होती रही हैं और यह योग्यता उनकी विद्यावती होनेसेही हुई थी गौतम बुधसे पूछा गया कि स्त्रियों की मोक्षहोसक्तीहै या नहीं ? तौउत्तर दिया कि अवश्य होसक्ती है कृष्ण महाराज भी गीता में कहते हैं कि हे अर्जुन मेरा आश्रयलेकर जो लोग पाप योनी और स्त्री वैश्यऔर शूद्रभीहों वेभीपरमगतिको प्राप्तहोंगे। गीताअध्याय९श्लोक३२ ॥

अब यह देखना चाहिये कि स्त्रियों के ऊपर यह वर्त्तमान अन्धकार कैसे छाया और उस आदर और सत्कार के बदले कि जो शास्त्रों में उनका लिखा है ऐसे नीच और बुरे बिचार स्त्रियों के विषय में क्योंकर पैदा हुए । स्त्रियां विद्याहीन क्यों रहगईं ? और उनका बाल्यावस्था में बिवाह होनेका क्या कारणहै इस सबका यही उत्तर होसक्ता है कि क्षत्रियों और वैश्यों की दशा का बिगड़ना उन लोगोंका अपने शास्त्रों का पढ़ना छोड़देना और ब्राह्मणों का दबाव बढ़ना और ब्राह्मणोंका औरों को शास्त्र का अधिकारी न समझना और शास्त्र में जो चाहा सो बढ़ादेना यह सब इस आपत्ति का कारण हुआ जब लोगों को अपने धर्म का ज्ञान न रहा तो पण्डितोंने भी जो चाहा सो धर्म्म के नाम से उनके सामने कह दिया और अपनी बातों पर ऐसा परदा डाला कि जिससे वे किसी के समझ में न आसकें । सिवाय

इसके और कोई कारण नहीं है कि ऐसी अप्रमाणिक बातें कि लड़की ८ वर्ष की अवस्थामें गौरी होतीहै ९ वर्ष की अवस्थामें कन्या होतीहै और पश्चात् रजस्वला होतीहै और यदि वह रजस्वला होनेसे पहिले व्याही न जावे तो उसका बापज्येष्ठ भ्राता और माता नरक में जाते हैं। किसी मतकी पुस्तकों में जैसा कि हिन्दुओं की किसी२ पुस्तकों में लिखाहै नहीं पाया जाता। यहीअज्ञान इसका कारणहै कि ऐसे वचन कि जिनको सुनकर अन्यदेश निवासी हिन्दुओं पर हँसते हैं और उनकी अवज्ञा करते हैं हमारे धर्म्म के अंश माने गये हैं इससे अधिक शोक की बात और कौन सी होसक्ती है कि वे लोग जिन को ऋषियों और मुनियों ने उपनिषदों से ब्रह्मज्ञान उपदेश किया और जिनके अवतारों के चरित्र ऐसे हुये कि जो आज तक किसी देश में नहीं हुये जिनकी विद्या और पाण्डित्य का यूरोप में भी चर्चा फैलरहाहै जिनकी संस्कृत वाणी को और देशके लोग यह कहते हैं कि इससे अधिक परिपूर्ण और कोई भाषा नहीं है और जिसको यूरोप के विद्वानों ने लैटिन और यूनानी भाषा की अपेक्षा में बड़ामाना है जहांके वेदोंके विषय में यह कहा गयाहै कि मनुष्यों की उन्नतिका इतिहास उनसे बढ़कर कहीं नहीं पाया जाता जहां के उपनिषद् जर्मनीके विद्वानों के लिये उनके लोक और परलोक को सुधारनेवाले माने गये हैं उनकी वर्त्तमान दशा ऐसी सोचनीयहो। ऐसीही बातों से इस देशमें फूट पड़गई सबलोग ब्राह्मणों के दास होगये और ब्राह्मण भी धर्मध्वज होनेके कारणसे बहुधा मूर्ख रहगये नहींतो ऐसे २ आचरण और बरताव जो बुद्धि के विरुद्धहैं इस देशमें प्रचलित न होते। भारतवर्ष में यह अन्धकार सर्वत्र व्यापरहा है और इन मति विरुद्ध उपदेश और बातों ने कि जोन शास्त्रानुसार है न बुद्धिपूर्वकहैं न उनसे कोई लाभहै नवे उन्नतिका कारण हैं ,,जो धर्म्मके समान माने गयेहैं किन्तु धर्म्मसेभी अधिक ऐसी दृढ़ता

पकड़र्लीहै कि सब हिन्दुओंका जो अपने देश की उन्नतिचाहता है सिवाय इसके और कोई धर्म्म नहीं होसक्ता कि वे लोगों को अपने सनातन धर्म्मकी ओर लावैं और यह दिखावैं कि प्रचलित बरताव किसी प्रकार शास्त्रके विरुद्धहै ॥

पहिला कारण जो हमारी उन्नतिका बाधक है वह हमारी स्त्रियों की मूर्खताहै क्योंकि ब्राह्मण हमारे इतनेबाधक नहीं हैं जितनी कि स्त्रियांहैं इसलिये जबतककि स्त्रियोंकी शिक्षाकी ओर ध्यान न किया जावैगा धर्मअथवा इसलोक वापरलोकमें उन्नति होनी कठिनहोगी। इस विषयमें बड़े प्रयत्नकी आवश्यकताहै॥

स्त्रियों की शिक्षा में जो उन्नति पिछले समयमें थी वहऊपर दिखाई गई है वर्त्तमान समय में भी कुछ उन्नति हुईहै परन्तु वह उन्नति उस उन्नतिकी अपेक्षा में कि जो होनी चाहिये बहुत थोड़ीहै। अन्य देशों में आजकलका समय स्त्रियों की विद्या में उन्नति के कारण से स्त्रियों का समय कहाजाता है परन्तु हिन्दुस्तान में तो स्त्रियों की वही दशा है जो पहिले थी गवर्नमेन्ट की राय ठीकहै कि जबतक इस देशके लोग आप स्त्रियों की शिक्षाविषय में परिश्रम न करैंगे गवर्नमेन्ट का परिश्रम व्यर्थ होगा इसलिये हरेक मनुष्य का धर्म्महै कि इस विषयमें जितना परिश्रम होसके करै। वर्त्तमान समयमें ईसाइयों की ओर से बहुतसी पाठशाला लड़कियों की शिक्षाके लिये नियत कीगई हैं और बहुतसी स्त्रियां जनानों में पढ़ाने को जाती हैं परन्तु हिन्दुओं के लिये इससे अधिक क्या लज्जा की बात होसक्ती है कि वे अपनी पुत्री और स्त्री जनों की शिक्षा ऐसे लोगों के हाथमें दें कि जिनका प्रगट अभिप्राय उनके धर्म्मको बदल देनेका है ॥

लोगों ने हज़ारों रुपया डफरिन फंडादि और २ पुण्यकामों में दिये हैं क्या उसका दशांश भी लड़कियों की शिक्षा के निमित्त नहीं दिया जासक्ता। सिवाय इसके डफरिनफंड के सहा-

यकों से यह प्रार्थना करनी अनुचित न होगी कि फंड का थोड़ा सा अंश स्त्रियोंकी शिक्षा में लगाया जावै क्योंकि जबतक स्त्रियां पढ़ी लिखी सुशिक्षित न होंगी वे न तो अंगरेजी चिकित्सा के गुण को जानेंगी और न डाक्टरी सीखनेके योग्य होंगी। गणना सन् १८८१ ईसवी से विदित हुआ था कि दशकरोड़ स्त्रियों में से तीन लाख चवालीस हज़ार शिक्षा पातीथीं वा पढ़ लिख सक्ती थीं अर्थात् ८५८ लड़कियों में केवल एक शिक्षा पातीथी और ४३४ स्त्रियों में केवल एकस्त्री लिखपढ़ सक्ती थी और हिन्दुओं में लड़कियों की मूर्खता विशेषकर इसकारण से प्रगट हुई कि उनलोगों में से सौलड़कियों मेंसे केवल एकपढ़ती थी इसकी अपेक्षा मुसल्मानों में २५ लाख में से ३५०० स्त्रियां लिखपढ़ सक्तीथीं और २५०० अच्छी योग्यता से सुशिक्षित थीं और ईसाइयों में सौ में से ५० पढ़ी लिखीथीं और सौ में से४८ अच्छी योग्य सुशिक्षित थीं। मनुष्य गणनासे यहभी प्रगट हुआ था कि दशहजार में केवल ८३ पढ़ी लिखी थीं। सन् १८९१ की मनुष्य गणना से यह प्रगट हुआ कि कुल हिन्दुस्तान में १२८४६३८७७ स्त्रियां हों उनमें से १०७९,६९ शिक्षा पाती हैं और ५४४०६९ पढ़ी लिखी हैं और शिक्षा पाचुकी हैं अर्थात् एकहज़ार मेंसे ८ पढ़ती हैं और एकहज़ार में से ४ पढ़ी लिखी हैं और ९९५०२ एकहज़ार में से अनपढ़ हैं उन लड़कियों में से जिनकी अवस्था ५ वर्ष से अधिक और १५ वर्ष से कम है ३०३६१५५५ में से१७७८५२ तोशिक्षापातीहैं और ८७८४५ शिक्षा नहीं पाती हैं किन्तु पढ़ लिखसक्ती हैं और शेष अनपढ़ हैं और शिक्षाभी नहीं पाती अर्थात् एकहजार मेंसे ९ लड़कियां तो पढ़ी हुई हैं वा शिक्षापाती हैं और ९९१ अनपढ़हैं ॥

इसकी अपेक्षा में मर्दों की शिक्षा की यह दशा है कि एक हजार मर्द और लड़कों में २२ तो शिक्षा पाते हैं और ८७ पढ़े हुए हैं और शिक्षा पाते नहीं हैं और ८९१ अनपढ़ हैं और ल-

ड़कों में जिनकी अवस्था ५ वर्ष से अधिक और १५ वर्ष से कम है एक हजार में से ७४ पढ़ते हैं और २० पढ़ते नहीं किन्तु पढ़ लिख सके हैं और ९०६ अन पढ़ हैं ॥

अब प्रश्न यह है कि ऐसी दशा पर हिन्दुओं को संतोष करना चाहिये या नहीं ? यह सच है कि वर्त्तमान समय में कुछ स्त्रियों ने यूनीवरसिटियों से सनदें पाई हैं परन्तु बहुधा तो अविद्या और मूर्खता स्त्रियों में मौजूद है इसलिये उन्नति की आशा करने से पहिले स्त्रियों की शिक्षा में अवश्यही परिश्रम करना चाहिये। इङ्गलिस्तान में यद्यपि स्त्रियों की ऊंची शिक्षा के विषयों में आज कल के समय में श्रम किया गया है और वहां की यूनीवरसिटियों ने भी इसी समय में स्त्रियों को सन्दें पाने के योग्य ठहराया है परन्तु उस देश में सदा से ही स्त्रियां पढ़ी लिखी होती चली आई हैं वहां की बहुतसी स्त्री सदा से ऐसी हुई हैं कि जिनकी बुद्धिमानी का असर उन देश पर सदा पड़ा है इसलिये जब तक कि हिन्दुस्तान में भी वैसाही प्रयत्न न किया जावे कोई आशा उन्नति का नहीं हो सकती गवर्नमेन्ट ने भी इस विषय में उतना श्रम नहीं किया कि जितना उसने लड़कों की शिक्षा में किया है बहुधा यह विचार करके कि लड़कियों की दशा लड़कों की दशा से कुछ भिन्न है ॥ परन्तु यदि गवर्नमेन्ट इस विचार से कि हिन्दुओं के मत और धर्म्म में हस्ताक्षेप करना अनुचित है लड़कों की शिक्षा में भी इतना श्रम न करती अथवा कम श्रम करती तो शिक्षा की वह उन्नति जो इस समय हुई है कभी न होती इस देश के लोगों की बहुधा यह प्रकृति है कि वे अपने राजा के पीछे चलते हैं इस लिये यदि गवर्नमेन्ट भी इस विषय में अधिक श्रम करे तो इस समय में वह श्रम व्यर्थ और निष्फल न होगा ॥

वह द्वेष जो पिछले समय में लड़कियों की शिक्षा के विशेष में था वर्त्तमान समय में बहुत कम होगया है परन्तु फिर भी

कुछ लोगों की यह राय है कि स्त्रियों की शिक्षा से कोई लाभ नहीं है। बहुत से लोग कहते हैं कि क्या स्त्रियां पढ़कर नौकरी करैंगी ? उनकी समझ यह है कि यदि स्त्रियां पढ़ैंगी तो उससे उनके गृह कार्य्यों के प्रबन्ध में विक्षेप होगा उनकी चित्त की वृत्ति और स्वभाव और प्रकृति विगड़ जावैगी शिक्षाकी विशेषता से उनका पातिव्रतधर्म्म स्थिर न रहैगा और स्त्रियांभी स्वयं पढ़ने लिखने की इच्छा नहीं करतीहैं यह कुमति यहां तक फैली हुई है कि कोई कोई घरों मैंतो पढ़ीलिखी स्त्री के नाम से लोग घबराते हैं ऐसे बिचार से अधिक हमलोगों की अवनति काओर क्या नमूना होसक्ता है क्योंकि विद्या केवल इस निमित्त से नहीं पढ़ी जाती कि नौकरी कीजावै किन्तु यदि स्त्री सुशिक्षिता होगी तो वह अपने बाल बच्चों का पालन पोषण अनपढ़ी स्त्रियों की अपेक्षा से अच्छी तरह पर करसकेगी कि जिसकी तुल्य लाखों रुपया भी नहीं हैं क्योंकि स्त्रियों की अविद्या के कारण कितने बच्चे मरते हैं। बहुत से रोग उनको और उनके बच्चों के होते हैं कितने धूर्त्त लोग उनको ठगते हैं बहुत से यंत्र मन्त्र और गंडा देनेवाले बहुत से स्याने भोपे ज्योतिषी और भड्डरी इत्यादि उनपर दावँ चलाते हैं बहुतसे बच्चोंको यंत्र और गंडेदेते हैं और फिर दुष्ट औषधि देकर रोगदूर करनेके बदले उनकेप्राण हरलेतेहैं। यदि उनकी माता पढ़ी होवे तो निरापराधी बच्चे इन आपत्तियों में क्यों पड़ैं॥ दूसरी शंकाका समाधान यह है कि यदि स्त्री पढ़ी हुई और योग्य होगी तो वह अपने गृह का कार्य अनपढ़ी स्त्रियों की अपेक्षा में अच्छी तरह करसकैगी॥ तीसरी शंका थोड़ी बहुत दुरुस्तहै क्योंकि स्त्रियोंके पढ़ने की पुस्तकें अभीतक अच्छी नहीं बनाई गई हैं किन्तु ऐसी पुस्तकोंकी आवश्यकता है कि जिन में सिवाय रस्मी और मामूली बातों के धर्म्म के नियम स्थान की शुद्धि गृहकार्य्योंका प्रबन्ध थोड़ासा भूगोल विद्या और इतिहास गणित चिट्ठी पत्री लिखना इत्या-

दि काभी वर्णन होवै। शिक्षा ऐसी नहीं होनी चाहिये कि जिस से कोई स्त्री अपने गृह कार्य्यों से घृणा करने लगे और उपराम ताको प्राप्तहो किन्तु ऐसी होनी चाहिये कि हर समय उसके काम आवैं और ऐसी शिक्षा केवल उस समय होसक्ती है कि जब पुरुष स्त्रीकी शिक्षा के विषयमें परिश्रम करैं। मिस्टरपाल साहिब पैरिस के पाठशिक्षाध्यक्ष ने यह कहा है कि यदि एक लड़के को शिक्षा देते हो और पढ़ाते हो तो केवल उसलड़के कोही पढ़ातेहो परन्तु यदि एक लड़की को शिक्षा देतेहो मानों समस्त कुटुम्ब को शिक्षा देतेहो यह बात ध्यान में नहीं आसक्ती कि स्त्रियों की बुद्धि पुरुषोंकी बुद्धिसे कम है शास्त्रमें तो उनकी बुद्धि अठगुणी लिखी है। यह कहनाभी ठीक नहींहै कि स्त्री तुच्छ बातोंमेंही अपना कालक्षेपकरेगी परमेश्वरने हरएक माता पिताके हृदय में अपने बच्चोंके पालन पोषण करने की चिन्ता साधारण तौरपर पैदा करदीहै और कोई विद्या ऐसी नहीं होसक्ती कि जो इस चिन्ता को दूरकरै यदि स्त्रियों को शिक्षा दीजावै तो उनकी औलाद की शिक्षा स्वतःही बिना परिश्रम के होजावैगी जिसदेशमें स्त्रीजन योग्य होती हैं वहांके पुरुष उनसे अवश्यही योग्य होतेहोंगे यदि स्त्रियां विद्यापढ़ी और योग्य होंगी तो उनके पतिव्रतधर्म्म में कोई विक्षेप नहोगा किन्तु वे बहुत कुछ उन्नति करैंगी और उनको अपने जीवन के हरएक समय को यशस्वी करने का अवकाश मिलैगा अगर वर्तमान दशा पर ध्यान दिया जावै तो जब अनपढ़ी स्त्री जन अकेली रहजाती हैं और उन का कोई सहायक नहीं होता तो जो आपत्ति उनके ऊपर आती है वह कही नहीं जासक्ती यदि वेही स्त्री पढ़ी लिखी होवें तो उनकी विद्या उनको बहुत आपत्तियों से बचावैगी। निदान जितने गुण कि हिन्दुओं की स्त्रियों में हैं अर्थात् उनका पतिव्रतधर्म्म उनका सदा पुण्य दान करना उनका प्रेम और परिश्रम यह सब कम होने के बदले

ऐसी शिक्षा से जो बुद्धिमानी के साथ उनको दीजावै अधिक होजावैंगे। परन्तु अब केवल शोचनीय यहहै कि कैसी शिक्षा और किस प्रकार से स्त्रियों को दीजानी चाहिये। इङ्गलिस्तान की तरह हिन्दूस्तान के हरएक जिले में ऐसे मदरसे और पाठशाला नहीं होसक्ते कि जिनमें लड़कों और लड़कियोंको एकही जगह शिक्षा दीजावै सन् १८८५ ईसवी और सन् १८८६ ईसवी में बंगाल मदरास मुम्बई में छियासी हजार लड़कियों को शिक्षा ऐसे मदरसों में होती थी कि जहां लड़के भी पढ़ते थे परन्तु पश्चिमोत्तरी देश और पंजाबादिक देशों की ऐसी दशानहीं है कि जहां इस प्रकार के मदरसे होवें और उनको लोग प्रसन्नता से स्वीकार करैं। इस लिये जबतक कि इन जिलों में लड़कियों की पाठशाला लड़कों की पाठशालाओं से अलग न की जावैंगी बड़े लोग अपनी लड़कियों को नहीं भेजेंगे। दूसरी बात यहभी ध्यान देने के योग्य है कि जो पुस्तकैं लड़कों को पढ़ाई जावैं वे पुस्तकैं लड़कियों के पाठशाला में न पढ़ाना चाहिये किन्तु पुस्तकैं ऐसी होनी चाहिये कि जो स्त्रियों को विशेष लाभ कारीहों। लड़कियों को केवल पढ़ना लिखना और हिसाबही नहीं चाहिये किन्तु यहभी आवश्यक है कि उनको गृहकार्यका प्रबन्ध रोगी मनुष्य की सेवा बालबच्चों के पालन पोषण आरोग्यता के नियम मकानों का शुद्धरखना आपत्ति के समय में धैर्य्य रखना इत्यादि॥ इन सबबातों की शिक्षा देनी चाहिये अर्थात् यह आवश्यक नहीं है कि उनको पाठशाला में सनद पदवी पाने की योग्यताहो किन्तु यहअवश्य है कि उनको अपने गृहकार्य में प्रबन्ध की अधिक योग्यता होनी चाहिये यदि कुछ स्त्रियां यूनीवरसिटी में पदवी प्राप्त करने की योग्यता पैदा करैं तो कोई हानि नहीं है परन्तु बहुधातो स्त्रियों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिये कि जोहरएक स्त्रीको उस कार्य के जिसके लिये वह पैदा कीगई है अधिक योग्य औरदृढ़

करदे। इसलिये ऐसी शिक्षा के लिये यह अवश्यहै कि हरएक देश नगरग्राम के लोग आप पाठशालाओं के नियत करने का उद्योग करें और गवर्नमेंट से सहायता चाहें। परदादार स्त्रियों की शिक्षा के विषय में इससमय तक जोकुछ उद्योग कियागया है वह केवल जनाना मिशन की ओर से हुआहै। लोगों ने अब तक इस विषय में कोई उद्योग नहीं किया है केवल बंगाल में कुछ सोसाईटियां इसकाम के लिये नियत हुई हैं परन्तु और जिलों में इस बिषयमें बहुत कम उद्योग और परिश्रम किया गयाहै। विरुद्ध इसके अबयह आवश्यकहै कि हरएक जाति के हिन्दू अपनी स्त्रियों की शिक्षा अपने हाथमें लें और हरएक देश नगर और ग्रामों में सोसाईटी नियत करके उनकी ओरसे स्त्रियां पढ़ानेवाली नौकर रक्खीजावें औरवे घरोंमेंजाकरस्त्रियोंको उन-कार्योंमें जिनका वर्णन ऊपर किया गयाहै शिक्षादें॥ यदिइसाई लोग इस विषयमें आरम्भ न करते तोइतनी शिक्षाभी जोदिखाई देतीहै वहभी नहींहोती। परन्तु अबवहसमय आगयाहैकि इशा-इयोंके हाथसे वहशिक्षा लेलीजावे और लोग आपअपनी स्त्रियों की शिक्षा को जैसा कि और देशों में होता है अपने हाथ में लें हिन्दुस्तान की स्त्रियों के हृदय में उनका धर्म्म ऐसा दृढ़ है कि उसका उखड़ना बहुधा असम्भव है परन्तु यदि किसी एक नि-यत अवस्था में वह उखड़ जावे तो वह एक अवस्थाही शोच नीय है उस एक अवस्था को भी रोकना उचित है। और इस से अधिक हरएक हिन्दू का क्या धर्म्म होसक्ता हैं कि वहइस के बदले कि वह अपने देश की स्त्रियों के विचार और मति को इस कारण से कि उनको पूरा पूरा ज्ञान अपने धर्म्म का नहीं है अन्यमतावलम्बी मनुष्यों की शिक्षा से क्षीण होने दें वह उन को अपने धर्म्म और मत के नियमों के यथार्थ ज्ञानोत्पन्न कराने से अधिक वृद्धि करें। इस लिये उन्हीं नियमानुसार स्त्रियों की शिक्षा होनी चाहिये कि जिन के अनुसार जनाना मिशन

चलता है परन्तु ईसाई मतके बदले हिन्दूधर्म्म के नियमों को शिक्षादीजावै और स्त्रियों को वे बातें सिखाईजावें जिनसे वह अपने जीवन के हरएक समय को सुशोभित करें जैसे कि पिछ्-ले समय में करसकी थीं ॥

युरोपदेश के एक विद्वान् का वाक्य है कि बिना स्त्रियों के हमारे जीवनका आरम्भ कठिन होगा युवाऽवस्था सुखसे और अन्तिम समय संतोष से रहित होंगे परन्तु यदि स्त्री योग्य होवे तो मनुष्य के जीवन का आरम्भ और मध्यअंत अत्यंत प्रसन्न-ता से करैगा यदि अयोग्य होवें तो अत्यन्त क्लेश और कष्ट के साथ व्यतीत होवैगा ॥

द्वितीय प्रकरण

बाल बिवाह ।

स्त्रियों की शिक्षाही केवल हिंदुओं की उन्नति के लिये अव-श्य नहीं है किंतु यहभी आवश्यक है कि वह रस्म बालबिवाह की जो आजकल प्रचलित है दूर कीजावे पहिले हम इसके प्रमाण देंगे कि हिंदुस्तान में मुख्य नियम बिवाहके शास्त्रानुसा रक्या थे और वर्त्तमान रीतियां किसतरहसे पैदा और प्रचलित हुई और उनसे क्या क्या हानिहुई । हिंदू धर्म्म का नियम यह है कि बिवाह कोई ठहराव (प्रतिज्ञा) नहींहै जैसा कि और लोगों में होता है किंतु यह एक संस्कार है कि जो मनुष्यों की मोक्ष का कारण है हरएक मनुष्य जो द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यहो उसका यह धर्म्म है कि पहिले अपने गुरूके घर में ९ वर्ष की अवस्था से ३६ वर्षकी अवस्था तक वेदपढ़ै । मनुजी कहते हैं कि तीनों वेदों के पढ़ने के लिये ३६ वर्ष या १८ वर्ष या ९ वर्ष या जबतक पढ़सकै तबतक ब्रह्मचर्य का सेवन करै

तीन वेद या दोवेद या एकवेदको क्रमसेपढ़कर जिसका ब्रह्मचर्य नाश नहीं हुआ है ऐसा ब्रूह्मचारी गृहस्थ आश्रम में आवे अर्थात् बिवाह करै अपने गुरूसे आज्ञा लेकर और शास्त्रकी रीतिसे स्नान और समावर्त्तन करके द्विज अपने वर्ण की उत्तम लक्षण स्त्री से बिवाह करै ॥ (मनुस्मृति अध्याय श्लोक १, २. ४)

इन श्लोकों का अभिप्राय यह है कि एक २ वेदके पढ़ने के लिये १२ वर्ष का समय नियत किया गया है परन्तु अगर नियमानुसार अनुवर्त्तन न कियाजावै तो १८ वर्षतक या कमसेकम ९ वर्षतक ब्रह्मचर्य करै याज्ञवल्क्यने भी यही कहाहै कि हरएक वेदके पढ़ने के लिये ५ वर्षसेकम ब्रूह्मचर्य किसीअवस्था में नहीं होना चाहिये और इसकहनेसे कि "जिसका ब्रूह्मचर्य नष्टनहुआ हो,, यहसूचित कियागया है कि जबतक उसकी शिक्षा और अध्ययनहोता है वह स्त्रीकेपास नजावै और स्त्रीभी पुरुषके पास न जावै। सब स्मृतिकारों की इसपर सम्मति है कि विवाह होने से पहिले अध्ययन पूरा होजाना चाहिये और जिस पठन पाठन की शास्त्र में आज्ञाहै वह किसी प्रकारसे २४ वर्ष की अवस्थासे पहिले पूरा नहीं होसक्ता। शास्त्रमें हरएक मनुष्यके लिये तीन ऋण रक्खे गये हैं अर्थात् ऋषिऋण देवऋण और पितृऋण और इनतीनों ऋणोंसे इसप्रकार उऋण होतेहैं कि ऋषिऋण तो वेदों के पठन से और देवऋण यज्ञ करने से और पितृऋण पिण्डदान करने से और दूसरा और तीसरा ऋण उस समय चुक सक्ता है कि जब पहिला ऋण चुक जावे। शास्त्र में स्पष्ट आज्ञा है कि वेदों और ब्राह्मणों और उपनिषदों को पढ़कर गृहस्थ होवे विना पढ़े न होवे। आपस्तम्भसूत्र अध्याय ११ सूत्र २,५, शत पथ ब्राह्मण अध्याय १० मन्त्र ३,५,१२.

तैत्तरीय उपनिषद में गुरू अपने शिष्य को वेद पढ़ाकर विदा करते समय उपदेश करता है कि सत्य बोल, धर्म्म पर चल पढ़ने लिखने में प्रमाद मत कर गुरू को इष्टधन देकर प्रजावन्तु

को मत तोड़ अर्थात् प्रजाके निमित्त वेदोक्त कर्म्मों को कर सत्य बोलने में प्रमाद मत कर अर्थात् भूलकर भी असत्य मत कह धर्म्म में प्रमाद मत कर कुशल अर्थात् अपने आत्म रक्षा में प्रमाद मत कर अपने कुशल और उन्नति के निमित्त कार्य करने में प्रमाद मतकर जो कर्म करो वह ज्ञान सहित करो बिना जाने मत कर देवताओं और पितरों के कार्य में प्रमाद मत कर तेरी माता तेरी देवता है तेरा पिता तेरा देवता है तेरा आचार्य तेरा देवताहै तेरा अतिथि तेरा देवताहै जो कुछ अच्छे कर्म हैं उनकाही सेवन तुझको करना चाहिये जो कुछ हमारे अच्छे बर्त्तावहैं उनके अनुसार चल इतर के अनुसार मत चल जो कोई हम से श्रेष्ठ ब्राह्मण हो उनका सत्कार और सेवा कर जो कुछ दान दे वह श्रद्धा सेदे बिना श्रद्धा के मत दे समझके साथ दे लज्जाके साथ दे भय के साथदे प्यारके साथदे। यदि तेरेचित्तमें किसी कर्म वा बर्त्ताव के विषयमें संदेह हो तो उन ब्राह्मणों से उपदेश ले जो तेरेपास रहतेहों और जो धर्म्मपर चलतेहों और जो कठोर हृदयनहों और सदाचारी और दयालुहों या जैसे वे चलें और बर्त्ताव करें वैसेही तूभी चल और बर्त्तावकर यही आदेश है और यही उपदेश है तैत्तिरीय उपनिषद शिक्षावल्ली अनुवाक ११ ॥

अबहम पूछते हैं कि वर्त्तमान समय में बहुधा गृहस्थाश्रम अर्थात् बिवाह ब्रह्मचर्य और वेदाध्ययन पूर्ण होने से पहिलेही होता है वा नहीं परन्तु उचित योग्यहै कि ब्रह्मचर्य और बेदाध्ययन पूर्णहोने के पीछे होना चाहिये जैसाकि और देशों में होता है और जिस काल में कि लड़के अपना पाठ पढ़तेहों उनको अपने पुत्र कलत्रादि की चिन्ता होना उनको हानि कारक है वा लाभ कारक और उनकी शिक्षा पूर्ण होनेसे पहिले उनके ब्रह्मचर्य का खण्डन होना मानों उनकी शिक्षा और अध्ययनका खण्डन और नष्टहोना है वा नहीं ॥

धर्म्म शास्त्रका कोई नियम ऐसा नहीं है कि जिससे लड़कों

के बिवाह की उनकी शिक्षा पूरीहोनेके पहिले आज्ञाहो और कोई श्रुति या स्मृत्ति ऐसी आज्ञा नहीं करती ॥

सुश्रुत में लिखा है कि स्त्री १६ बर्ष की अवस्था तक बाला समझीजाती है और १६ से ३२ बर्ष की अवस्थातक युवाहोतीहै यदि किसी पुरुष से जिस की अवस्था २५ बर्ष से कमहो किसी स्त्री को जिस की अवस्था १६ से कमहो गर्भ रहजावे तो बच्चा गर्भ में रहता नहीं अर्थात् गर्भ निपात होजाताहै और यदि बच्चा उत्पन्न भी होताहै तो जीता नहीं रहता और यदि जीताभी रहताहै तो क्षीण और बलहीन होताहै। इस लिये बहुत कम अवस्था की स्त्री का गर्भवती होना उचित नहीं है। वेदोंमें स्पष्ट लिखाहै कि स्त्री अपने पति को बरै और कोई स्त्री बिवाहने योग्य नहीं होसक्ती जबतक कि वह युवा नहोजावै। सायणाचार्य्य ने वेद भाष्य में एक इतिहास लिखाहै कि एक पुरुषने जिसका बिवाह होगया था अपनी स्त्री को इस कारण से त्याग दिया कि वह युवा नहीं थी शुक्ल यजुर्वेद अध्याय १७ मन्त्र ९७ ॥

सुश्रुत ने कमसे कम २१ वर्ष की अवस्था लड़कों के बिवाह के लिये और २५ बर्ष की द्विरागमनके लिये नियतकीहै। स्मृतिकारों का भी यही अभिप्राय है वृहस्पति स्मृति और यमस्मृति ३० बर्ष की देवलस्मृति १८ बर्ष की आश्वलायन स्मृति २५ बर्ष की व्यासस्मृति २६ बर्ष की दक्षस्मृति और याग्यवल्क्य स्मृति पश्चात् सम्पूर्ण होने वेदाध्ययनके बिवाहका होना उचित रखती हैं। और दक्षने यह भी लिखाहै कि १६ बर्षकी अवस्थासे पहिले लड़का व्यवहार के योग्य नहीं होताहै और जबतक उसको वेद पढ़ना चाहिये बिवाह नहीं करना चाहिये ॥ दक्षस्मृति प्रथमाऽध्याय श्लोक ६-७--निदान सब स्मृति कारों की सम्मति इसबात परहै कि १६ बर्षसे कम अवस्था में लड़के का बिवाह किसी प्रकारसे भी नहीं होना चाहिये किन्तु कोई २ स्मृतिकार तो २५ बर्ष की अवस्था में विशेषकर उचित समझते हैं। इस

लिये यदि वर्त्तमान समयमें ७, ८, ९, १०, ११, और १२ बर्षकी अवस्था के बदले कि जिस में अब बहुधा लड़कों के बिवाह होते हैं १६ बर्ष कीही अवस्था जो सबसे कम अवस्था है नियत कीजावै तो धर्म्म शास्त्र के अनुसार कुछ कुछ होगायदि २५ वर्ष की नियत कीजावै तो अति उत्तम होगा परन्तु २५ बर्ष की अवस्था नियत करना बहुधा वर्त्तमान समय में बहुत सी जातियों में कठिन वा असम्भव होगा। लड़कियों के विषय में भी वेदों और गृहयसूत्रों और धर्म्मशास्त्र में ७,८,६ वा १० वर्ष में बिवाह होने की आज्ञा नहीं है। ऋग्वेद में लिखाहै कि हे बिश्वाबसु इस स्थान से उठ क्योंकि लड़कीका बिवाह होचुका ऐसी और स्त्री के पासजा जो अपने पिता के घरमें है औरजिस में बिवाह की अवस्था के चिह्न प्रगट होगये हैं हे विश्वावसु ऐसी कुमारी स्त्री के पास जा जिसकी देह दृढ़ है और उसका बिवाह करा बहुतसी स्त्रियां तो अपने पतियां को द्रव्य के अर्थ वरतीहैं परन्तु वहस्त्रीजो सुन्दरी और सुशीलाहै अपनोपति बहुत लोगों में से उसको करती है कि जिससे उसकी प्रीतिहो॥

इससे स्पष्ट है कि पिछले समयमें स्त्रियां आप अपने पतियों को बरती थीं और उनका बिवाह उनकी इच्छाके बिना और विनायुवावस्था के नहीं होसका था। सूत्रों में भी स्पष्ट लिखा है कि बिवाह के पाहिले लड़की ब्रह्मचारणी और सुशिक्षिता होनी चाहिये अर्थात् उसकी अवस्था युवा होनी चाहिये और बिवाह की रस्मसे तो सर्वथा प्रकट है कि स्त्री और पुरुष दोनों युवा समझे गये हैं। जिससमय कि सप्तपदी अर्थात् फेरे होते हैं तो पुरुष स्त्री से कहता है कि प्रथम फेरे से अर्थात्प्रथम पैरधर और मेरे पीने की वस्तुओंमें भागिनी हो द्वितिय पैररख और मेरेभोजन अर्थात् खाने की बस्तुओं में भागिनी हो तृतीय पैर रख और मेरेधन और वृद्धिमें भागिनीहो चतुर्थ पैररख और मेरी आरोग्यता में भागिनी हो पंचम पैर रख और मेरे पशुओं

में भागिनीहो षष्ट पैररख और मेरे ऋतु और हरेक समय और मोसम में मेरी भागिनीहो सप्तम पैर रख और मेरी मित्र हो। इस के पश्चात् पुरुष यह कहता है कि मैं तेरा पाणिग्रहण करताहूं तू मेरी स्त्री होकर जन्मभर रहे भग अर्य्यमा सविता और पुरन्दरी ने तुझको मुझे दियाहै कि मैं गृहस्थ होकररहूं सो मैंने तुझको गन्धर्वको दिया गन्धर्वने अग्निको दिया और अग्नि ने मुझ को दिया। जैसे साम शब्द में से और अम एक दूसरे से मिले हुए हैं और अलग नहीं हैं वैसेही हमभी एक दूसरे से अलग नहीं हैं मैं अम हूं तू सहै मैं आकाशहूं तू पृथ्वी है मैं साम हूं तू ऋक् है सो तू मेरे पीछे चलने वालीहो आवो हम तुम आपस में बिवाहकरें सृष्ट्युत्पत्तिकरें हमारे बहुतसे लड़केहों और उन की दीर्घ आयुहो आवो इस पत्थर पर खड़ीहो इस पत्थर के समान स्थित हो और बुराई से बच ॥ जब कि रस्म सम्पूर्ण होती है तो दोनों स्त्री पुरुष यह प्रार्थना करते हैं कि प्रजापति हम को संतान दे अर्य्यमा हम को जन्मभर मेल से रक्खे देवता हमारे मनों को सम्पत्ति में रक्खें मातारिश्वा और धातृ और सरस्वती हम को मेल जोल के साथ रक्खें इन सब ऋचाओं से स्पष्ट है कि यातो ये ऋचा जैसा कि हिन्दुओं के अभाग्य से इस समय में होगई हैं सर्वथा व्यर्थथीं या जैसा कि ऋषियोंका अभिप्राय था पुरुष और स्त्री युवावस्था मेंही बिवाहकरें ॥ वृहदारण्यक उपनिषद् पृष्ट ८०३ ॥

स्मृतियों में भी पाया जाता है कि बारह वर्ष की अवस्था की लड़कियों के लिये ३० स्मृतिकार लिखते हैं जिन में से १८ स्मृतियां तो पुरानी हैं शेष वर्त्तमान समय की हैं वृहस्पति कहता है कि ३० वर्ष का पुरुष १६ वर्ष की कन्या के साथ बिवाह करै मनु और यम कहते हैं कि वह युवती(१२) कन्या से बिवाह करै आश्वलायन कहता है कि २५ वर्ष का पुरुष दश वर्ष की कन्या से बिवाह करै व्यास कहते हैं कि २६ वर्ष

का पुरुष बड़ी अवस्था की कन्या से जिसमें कोई दोष न होबिवाह करै गौतम कहाता है कि गृहस्थी बड़ी अवस्था की कन्या से जिसकी अवस्था उससे कमहो बिवाह करै वृद्धगौतम कहता है कि पुरुष को चाहिये कि ब्रह्मचर्यको पूराकरके युवावस्था में बिवाह करै बुद्ध कहताहै कि व्रतपूराकरने के पश्चात् मनुष्य बिवाह करै याज्ञवल्क्य कहता है कि युवाहोने से पहिले बिवाह होना न चाहिये शतातप और दक्षका यहमतहै कि १६ बर्ष की अवस्था से पहिले बिवाह करने के योग्य पुरुष नहीं होता और मनुने यह लिखा है कि केशान्त ब्राह्मण का १६ वर्ष की अवस्था में क्षत्रिय का २२ वर्ष की अवस्थामें और वैश्यका २५ वर्ष की अवस्था में होना चाहिये । इसके पश्चात् वह स्नातक और बिवाह करने के योग्य होता है इसीप्रकार बोधायन का यहमत है कि यदि कन्या का पिता वा उसका कोई हितू बिवाह न करै तो वह तीनवर्ष ठहरकर आप अपनो बिवाह करसक्ती है इसी बिषय में मनुने भी यह लिखाहै कि ऋतुवाली भी कन्या चाहै मरणान्त पिता के घरमें रहै परंतु उस कन्याको उसका पिता ऐसे पुरुष को जो विद्या और गुणसे हनि होनदेवै। ऋतुवाली कन्या तीनबर्ष तक अपने बिवाह के लिये प्रतीक्षा (इन्तिजारी) करै फिर अपने समान पुरुष को अपना पति आपकरै । ऐसी कन्या जो ऋतुवाली होगई हो उसके पिताने उसको किसी को नदिया हो यदि किसी पुरुष को अपना पति करै तो वह और उसका पति किसी पाप का भागी नहीं हो मनु स्मृति अध्याय ९ श्लोक ८९, ९०, ९१ ॥

नारद और यमका भी यहही मत है और महाभारत में भी यही लिखा है कि ३० वर्ष का पुरुष १६ वर्ष की कन्या से बिवाह करै । निदान ११ वा १२ वर्ष की अवस्थाजो बहुधा स्मृतिकारों की सन्मति के अनुसार है लड़कियों के लिये और १६ वर्ष के लड़कों के लिये सर्वथा शास्त्र के अनुकूल होगी । रामायण

और महाभारत के समयमें भी सीता दमयन्ती द्रौपदी सावित्री इत्यादि के स्वयम्बरों के होने से यह पाया जाताहै कि बाल बिवाह की रीति नहीं थी यदि उस समय में स्त्रियां योग्य और समझदार नहोतीं तोवे अपने पतियोंको आप छाटकर न बरतीं। कालिदास के रघुबंश में भी इन्दुमती का स्वयंबर बहुतही अद्भुत रीतिसे वर्णन किया गया है और उससे केवल यही नहीं पाया जाता कि इन्दुमती युवाथी किन्तु यहभी पाया जाता है कि उस में बड़ी बुद्धि और योग्यताभी थी जबकि सब राजाजो स्वयम्बर में इकट्ठे हुयेथे अपने २ स्थानों पर बैठे तो इन्दुमतीके साथ एक सहेली आई कि जो उसको राजा के सामने लेजाती थी और उस राजा के रूपगुण पदवी अधिकार और राज्य की वहुत प्रशंसा करती थी सहेलीने हरएक राजा की प्रशंसा ऐसी लाघवता और चतुराई के साथ बर्णन की कि जिसमें विवेचना करनाबड़ी बुद्धिका कामथा और अन्त में इन्दुमती ने जब राजा अज को बरातो जिसरीति से सहेलीने उसकी प्रशंसाकी थी कि ऐसी थी जिसको जानना बड़ीही बुद्धिमानी स्त्री का काम था ॥

केवल पुराणों के समयसे ही बर्त्तमान रीति प्रचलितहुई है और पाराशरीका यह अनुशासनहै कि यदि लड़की के माता पिता उसके रजस्वला होने से पहिले बिवाहन करें तो वे भ्रूण हत्या अर्थात् गर्भपात दोषके भागी होंगे तभीसे बाल्य बिवाह की रस्म प्रचलितहुई किसी २ स्मृतिकारों ने जो पीछेहुएइस बात को और भी दृढ़करदिया परन्तु पाराशर और वृहस्पतिभी इस समय की रीति को पुष्टि नहीं करते क्योंकि उन्हों ने भी यह कहा है कि स्त्री बारह बर्ष की अवस्था में रजस्वला होजातीहै और उसका बिवाह रजस्वलाहोने से पहिले होना चाहिये न कि छः सात आठ वा नौ दश बर्ष की अवस्था में लड़की का बिवाह हो केवल बर्त्तमान समय में ही ऐसे २ श्लोक।कि अष्टवर्षाभवेद्गौरीनववर्षाचरोहिणी दशबर्षाभवेत्कन्या

तत ऊर्ध्वं रजस्वला) कि आठ वर्ष की लड़की गौरी होती है नौ वर्ष की रोहिणी होतीहै और दश वर्ष की कन्या होतीहै और उसके पश्चात् रजस्वला होती है बनाये गये हैं यहां तक कि कोई २ लोगों ने तो पांच वर्षसे लगा कर विवाह की अवस्था लड़कियों के लिये नियत करदी है किसी २ स्मृतियों में ऐसे श्लोक बढ़ाये गये हैं कि जिनसे वर्त्तमान रीति की पुष्टिहो और किसी २ के अर्थ में खींचा खींची कीहै कारण इसका यहहै कि जबलोगों ने अपने धर्म्म का यथार्थ ज्ञान का प्राप्त करना छोड़ दिया देश पर अन्य जातीय मनुष्योंने चढ़ाई करना प्रारम्भ कर दिया देश में नास्तिक लोगोंका प्रचार होगया हिन्दुस्तान का एक खण्ड दूसरे खण्ड से ऐसे अलग होगया कि मानो हिन्दोस्तान का खण्डही था जब ऐसी दशा होगई तो अविद्या अन्धकार का छाजाना और ऐसी २ रीतियों का प्रचलित होजाना कौन आश्चर्य की बात है । यहां तक कि कुछेक मुसलमानों ने भी हिन्दुओं की रिवाज वाल्य विवाह को मानना अंगीकार किया कि मानो वह उनके मत और धर्म्म काही एक अंग है हिन्दुओं में यह रिवाज श्रुति और स्मृति और इतिहास और पुराणों और सब चीजों से बढ़ चलाहै छोटे और बड़े अर्थात् कंगाल और धनवान् सब उसी के आधीन हुए कोई मनुष्य उससे नहीं बचसका न किसी को उसके बदलने की सामर्थ्य हुई लोगोंकी प्रकृति असामर्थ्य और आलस्यकी होगई और दिन २ हानि होती गई और इतने पर भी उसके दूर करने की ओर ध्यान नहीं दिया गया इस विचार से कि जो कुछ विधाता ने लिखा है वही होगा सिवाय इन के और कोई कारण ऐसी बुद्धि विरुद्ध रिवाजों के ऐसे लोगों में प्रचलित होने के नहीं है कि जिनकी बुद्धिविद्या पाण्डित्य विवेचना सदाचारमान बड़ाई आदरभाव और उन्नतिकी सब सृष्टिमें प्रशंसाहै यहांके लोगों में श्रद्धा सदा से चली आई है और यदि उनके अपने निज धर्मके निय-

मोंका ज्ञान भी न हो परन्तु सदैव कालसे वे ब्राह्मणोंके बचनोंको मानते चले आयेहैं उनको इस बातका ध्यान तकभी नहीं होता कि ब्राह्मणोंकी अनुशासन किसी एकविषयमेंभी उनके सनातन धर्म्मके अनुकूल हैं वा नहीं और बुद्धि विरुद्ध हैं वा नहीं इसका कारण यहहै कि हिन्दुओंके अन्तःकरणोंमें बहुधा अपने मत मतान्तर और धर्म्म के विचार में उन्नति करने वा उनका मूल संशोधन करने का वर्त्तमान समय से पहिले वह उद्योग जो अन्य जातियों में होता है नहींथा बड़े शोक और खेदकी बात है कि इस बाल विवाह ने हम लोगों का कैसा सत्यानाश किया है वह देहकी दुर्बलता जो हिन्दुओं में बहुत कुछ पाई जाती है कुसमय बच्चोंका उत्पन्न होना और कुसमय मृत्युका होना पढ़ने लिखने में हानि होना और वंशों के वंशोंका निर्बलहोना सैंकरों तरुण विधवा स्त्रियों का दुखके साथ आयुर्व्यतीत करना दुर्बल क्षीण और रोग ग्रस्त बच्चोंका उत्पन्न होना स्त्रियों में अनेक प्रकार के रोगों का फैलना दीन दरिद्री और निर्धन मनुष्यों की श्रेणी का बढ़ना और एकही विवाह के करने से सर्वस्व का बिगड़ जाना और नाशहोना ये सब बाल्या विवाहका अनुग्रह है सन् १८८१ ईसवी में जो मनुष्य गणना अर्थात् मर्दुमशुमारी हुई उससे प्रकट हुआ कि १९०००००० एक करोड़ नब्बे लाख लड़कों मेंसे जिनकी अवस्था १ और दश वर्ष के बीच में थी छः लाखसे विशेष लड़कों के विवाह होगये थे और दो करोर लड़कियों में से उन्नीस लाख ब्याही हुई थीं इन उन्नीस लाख में से तिरेसठ हज़ार विधवाथीं मेरे एक मित्र ने ऐसा वर्णन किया कि मथुरा के चतुर्वेदी अर्थात् चौबों में एक लड़की दोवर्ष की अवस्था की विधवाथी इससे विशेषतर शोककी बात क्या हो सक्ती है दश और चौदह वर्ष की अवस्था की बीचमें ४४ लाख लड़कियों का विवाह होगया था और उनमें से पौने दो लाख विधवा थीं बंगालमें सबसे विशेष संख्या ब्याहे हुए लड़कों

और लड़कियों की पाई गई क्योंकि वहां पर १०० मेंसे ५½ लड़कों और १०० में से १४ लड़कियों का जिनकी अवस्था एक वर्ष और दश वर्ष के बीच में थी विवाह होगये थे पश्चिमोत्तर देश की व्यवस्था यहहै ॥

१ और ९ वर्ष के बीचमें जिन का विवाह होगया था ॥

	पुरुष	स्त्री
समस्त आबादी	१२७८२२	२९०७००
हिन्दू	११७९३६	२५४१६८
मुसलमान	१००७८	२६३२८

और

१० और १४ वर्षकी बीच में जिनके विवाह होगये थे ॥

	पुरुष	स्त्री
समस्त आबादी	६५१५२६	१२६४५६४
हिन्दू	५४४५०२	१०३६९५२
मुसलमान	५५९२०	१२५५१५

रँडुए और राँड़ें

एक और ९ वर्ष की अवस्था के बीच के			दश और १४ वर्ष की अवस्था के बीच के		
	पुरुष	स्त्री		पुरुष	स्त्री
आबादी	४४४९	४६७३	आबादी	२२९४२	२३५९३
हिन्दू	३९५७	४१५७	हिन्दू	१९४८१	२२४१७
मुसलमान	४८२	४८६	मुसलमान	२३६८	२११३

पन्द्रह और १९ वर्ष के बीच की अवस्था के ॥

	आबादी	हिन्दू	मुसलमान
पुरुष	४२६८८	३७६८२	४९०८
स्त्री	४२२६०	३७७९७	४३०८

उसी जन संख्या अर्थात् मर्दुमशुमारी से यह भी स्पष्ट हुआ कि हिन्दुओं में एक वर्ष और ९ वर्ष की अवस्था के बीचमें एक सहस्र में ४४ और मुसल्मानों में २४ के विवाह होगये थे और १० और १५ वर्ष की अवस्थाके बीच में २२०के हिन्दुओं में और १४७ के मुसल्मानों में बिवाह होगये थे यह भी ज्ञात होताहै कि एक वर्ष और २२ वर्ष की अवस्था में जो लड़कियां विधवा होजाती हैं उनकी संख्या उन लड़कों की संख्या की अपेक्षा में जिनकी संख्या उन लड़कों की संख्याकी अपेक्षा में जिनकी स्त्रियां मर गई थीं बहुत अधिक है विरुद्ध इसके इङ्गलिस्तान में १ वर्ष और १५ वर्ष के बीच में एक लड़के का भी विवाह नहीं होता बरन पश्चिमोत्तर देश में और अवध में आधों के विवाह होजाते हैं और २० वर्ष वा उसके पश्चात् की अवस्था की विधवाओं की संख्या इङ्गलिस्तानमें १३०६० है और इन जिलोंमें२९०५५ है १५ वर्ष की अवस्थासे पहिले कोई लड़की इंगलिस्तान में विधवा नहीं होसकी न कोई लड़का रँडुवा होसका है और १५ और २० वर्ष के बीच में १०० में केवल ४० लड़कों को और १०० में ४७½ लड़कियों को अपनी स्त्री वा अपने पतिके मरने का गुमान और सन्देह होता है विरुद्ध इसके पश्चिमोत्तर देश के जिलों में ७० हज़ार लड़कियों के लग भग विधवा होजाती हैं और उनकी सब अवस्था दुःख और क्लेश में कटती है यह भी स्पष्ट हुआहै कि समस्त हिन्दुस्तानमें दशवर्षकी अवस्थाके नीचे सौ में

से अनुमान १०$\frac{१}{२}$ लड़कियां विधवाहैं और उसकी व्यवस्था यह है कि अर्थात् पंजाब में १$\frac{१}{६}$ मदरासमें $\frac{४}{५}$ पश्चिमोत्तर देश के जिला में २$\frac{२}{५}$ मध्यदेश के जिलों में २$\frac{१}{२}$ बंगाल में ५$\frac{१}{२}$ और वरार में ४ लड़कियां १ और दश वर्ष की अवस्था के बीच में विधवा हो जाती हैं इनके सिवाय प्रत्येक चार स्त्रियों में कम से कम एक स्त्री विधवा होती है विचार करने की और शोक की जगह है कि वे लोग जिनमें तरेसठहजार लड़कियां १० वर्ष से कम अवस्था में और पौने दोलाख १४ वर्ष से कम अवस्था में विधवा हों सिवाय विपत्ति भोगने के और क्या करसक्ते हैं और येही लोगहैं जो इस विपत्ति को सह सक्ते हैं । यदि वर्त्तमान समय में विद्या की उन्नति न होती और मनुष्य सुशिक्षित न होते तो इस विपत्ति की ओर चिंतन भी न होता यह विपत्ति बहुधा सर्वत्र व्याप्त है केवल दीन दरिद्री और अविवेकी लोगों में ही नहीं है किन्तु द्रव्यपात्र सुशिक्षित और मितव्ययी और धर्म्मानुयायी लोगों में भी यह विपत्ति व्याप्त हो रही है और इस कुरीति ने लोगों की आंखों को ऐसा बन्द करादिया है कि वे इसकी बुराइयों से केवल अज्ञानही नहीं हैं किन्तु उनमें से कोई २ तो परिश्रम के साथ इस कुरीति की पुष्टि करतेहैं यदि उनसे पूछा जावे कि बहुतसी लड़कियां प्रथम प्रसवमें क्यों मरजाती हैं बहुतसी लड़कियां उस अवस्था में कि जब उनको विवाह और पति शब्दका अर्थभी ज्ञात नहींहोता क्यों विधवा होजाती हैं तो इसके उत्तरमें कहते हैं कि प्रारब्ध कर्म्म और पूर्व जन्मका संस्कारहै । किसी२ की यह भी मति यानेरायहै कि इसदेशके आब हवाके कारणसे लड़कियां और लड़के शीघ्रही युवा होजातेहैं और उनका विवाह शीघ्रही होना चाहिये कोई २ कहते हैं कि माता पिता के जीतेजीही लड़का लड़कीका विवाह होना और उनका सुख देखनाही ऐसी वस्तुहै कि जो वर्णनकरनेमें नहीं आती कोई २ यह कहते हैं कि जो सुख हिन्दुओं के

घरों में होताहै वह पतिव्रत जो हिन्दू स्त्रियों में होताहै वह प्रीति अपने पुत्र कलत्रादिकों में जो हिन्दू पुरुषों में पाई जाती है उससे और यूरोप देश निवासी पुरुषों और स्त्रियों में विरोध अदालत झगड़ों के होजाने और खिंचे २ फिरने से क्या उपमा है। यह भी कहा जाता है कि शीघ्र विवाह होना बहुत सी बुराई और अत्याचार से रोकता है। माता पिता अपने लड़के और लड़कियों के विवाह करने में वह चतुराई और बुद्धिमानी काम में लाते हैं कि जिसको लड़का लड़की आप काम में नहीं लासक्के॥ लड़कों और लड़कियों की बाल्यावस्था में एक दूसरे के साथ रहने से परस्पर प्रीति उत्पन्न होजार्जा है एक दूसरे से जानकार होजाते हैं एक दूसरे के स्वभाव और प्रकृति जान जाते हैं अपना जीवव सुख से व्यतीत करते हैं। बाल्यावस्थाके विवाह कुटुम्ब की एकत्रताको दृढ़ करता है विद्यार्थियों को अत्याचार से बचाताहै यहां तक कि अब भी इस रीति से लाभ के सिवाय कोई हानि दृष्टि में नहीं आती। यदि इस रिवाजमें कोई सुधार किया जावे तो क्या यह अभिप्राय है कि हिन्दुओं की स्त्रियां इङ्गलिस्तान की स्त्रियों के समान अपने पतियों को आप वरें परदेके बाहर निकल कर बाजारों में फिरें और सब जातियों में विपत्ति फैलावें जो कुछ विधाता परमेश्वर ने रच दिया है उसमें मनुष्य की शक्ति नहीं है कि कुछ अदला बदली करै यह समय कलियुग काहै और जो कुछ रिवाज इस समयमें प्रचलितहै और नियतहै हुई हैं वे कलियुग के अपेक्षा से प्रचलित और नियत हुई हैं। कोई लोग यहभी कहते हैं कि यदि सुधारते हो तो हिन्दूओं की समस्त दशा और व्यवस्था का सुधार करो थोड़े से कार्य में सुधार करने से कोई लाभ नहीं है इन दूषण और शंकाओं का यह एक उत्तरहै कि कलियुग के समय में भी ऐसे रिवाज जिनसे लोगों पर आपत्ति आवै स्थित नहीं रहने चाहिये पिछले समयके स्मृतिकारों के कथन प्राचीन स्मृति-

कारोंके वचनानुसार नहीं है और जिस समयकी इन स्मृति-कारोंने लिखाथा वह समय और था अब समय और है क्योंकि जो उन्नति विद्याकी और सामग्री विचार और विवेचना में उन्नति करनेके अब सुगमतासे हैं तब नहीं थे आब व हवा कि विचारसे भी उस अवस्थामें जिसमें अब विवाहादि होते हैं नहीं होनेचाहिये किन्तु आज कल लड़के और लड़कियां कुसमय अर्थात् उचित समय से पहिले युवा इसकारण होजाते हैं कि उनको समय से पूर्व एक दूसरे का संसर्ग होजाता है और माता पिता को अपने बच्चों के जल्दी से औलाद होजाने का संशय पड़जाताहै बहुतसे नामी और प्रख्यात डाक्टरों विद्वान् वैद्योंनेभी यहकिहा है। डाक्टर स्मिथ साहिब का कथन है कि मेरा यह विश्वास है कि बाल्यावस्था का विवाह इसदेश में केवल शारीरिकहानि और व्यथाही उत्पन्न नहीं करता किन्तु बुद्धि में भी विक्षेप डालता है। उससे काम शीघ्रही बढ़जाता है किजो प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है। आरोग्यता में आक्षेप होताहै आयुःक्षीण होती है। और वर्त्तमान समय की सन्तानही क्षीण नहींहोती किन्तु होनेवाली सन्तानों की भी हानि होती है॥ अबडाक्टर महेन्द्रलाल सरकार की राय सुनिये उनका लेख है कि यदि हम सुश्रुत मेंजो अवस्था नियत कीगई है सबसे कम अवस्था रजस्वला होने की रक्खें और सुश्रुत के शब्दार्थ सेभी यहीज्ञात होता है तो वर्त्तमान काल में वह समय पूर्वकाल की अपेक्षा में बहुत पहिले आजाता है और उसका कारण यह है कि लोगोंमें राजसी आराम और कामज रमणीक वस्तुओं का उपस्थितहोना और लड़के और लड़कियों का पति और पत्नीकी दशा में छोटी सी अवस्था में संसर्ग होना और उनके माता पिताको यह आकांक्षा होना कि हमारे बच्चों के शीघ्रही बच्चे होजावें उस कुसमय युवावस्था का प्राप्तहोने का कारण है कि जिससे हमारे यहां की लड़कियों को हमारे यहां के लड़कों की

अपेक्षा में औरभी अधिक हानि पहुँचती है। यह बात कि आब हवा किसी देशकी वा उसकी पृथिवी वा वहां की और दशा और व्यवस्था लड़कियों के युवा होनेपर किसप्रकार व्यापती है विवेचना के योग्य है परन्तु जहां तक कि मैं विचार करता हूं उसकी व्यापकता इतनी विशेष नहीं है कि जितनी विचार की जाती है परन्तु जहांतक देखा है नगरों में ग्रामोंकी अपेक्षा में लड़के और लड़कियां दोनों शीघ्रही युवा और शीघ्रही वृद्ध होजाते हैं मिसिस पी.जी. फ़िफ़ सिन लेडीडाक्टर मुम्बई की लिखती हैं कि हिन्दू स्त्रियों में रुधिर विकार और चर्म दूषणादिरोग बाल्य विवाहसे उत्पन्न होते हैं। स्त्रियों को अपने बालकों को ऐसी अवस्था में दूध पिलाना पड़ता है कि जब आप उनकी अस्थि और रगें दृढ़नहीं हुई हैं तो सन्तान के पोषण करने को कैसे समर्थ होसक्ती है और माता भी दुर्बल होजाती है अब रहयिह वार्ता और विवेचना कि हिन्दुओं के घरों मेंबाल बिवाह के कारण यूरोप के लोगों की अपेक्षा में बहुत सुख है तो उसके बिषय में यह कहना योग्य है कि वह आराम भी उस क्षीणताका बदला नहीं होसक्ता जो हिंदुओंमें इस रिवाज के कारण दिन दिन बढ़ती जाती है। मुकद्दमात तलाक अर्थात् स्त्री त्याग के झगड़े और अन्य उपद्रव जो यूरोप में परस्पर स्त्री और पुरुषों में उपस्थित होते हैं इसदेश में नहीं हैं और उनका होना सर्वथा बड़े क्लेश का कारण होगा और यदि यूरोप की सभ्यता का परिणाम यही है तो इसऐसी सभ्यता से बचनाही भला है परन्तु इङ्गलिस्तान और यूरोप के अन्य देशोंमें यात्रा करने से मुझको यह निश्चित हुआहै कि मध्यम श्रेणी के लोगों में सुख और आराम के साथ स्त्री पुरुष का जीवन उतनेही घरों में व्यतीत होता है जितने कि भारतवर्ष में और यहां से यह बात अधिक है कि वे लोग छोटी अवस्था में विवाह नहीं करते और उनकी सन्तान अधिक बलवान् होती है और उनको स्वयम्

अपनी और अपनी सन्तान की शिक्षा और उन्नतिका इस देश के लोगों की अपेक्षा में अधिक अवकाश मिलता है सिवाय इसके यदि यूरोप देश के लोग इस आपत्ति में ग्रस्त हैं तो जब कि उनकी बुद्धि और सभ्यता की उन्नति प्रसिद्धहै और हरएक मनुष्य उसको स्वीकार करता है तो क्या कारण है कि हिन्दुस्तान के लोग उनकी बुरी बातों कोही देखें और अच्छी को न देखें और बुरी बातों को छोड़कर उनकी अच्छी बातों से लाभ न उठावें विशेष कर जब कि ऐसा करने से वे अपनेही शास्त्रों के अधिक अनुगामी होंगे यूरोप देशमें स्त्रियों की राय की व्याप्ति राज कार्य्यों परभी पहुंचती और मुझको स्वयम् यह प्रत्यक्षहुआ है कि जब कभी मुझको किसी योग्य और सुशिक्षित स्त्री के पास बैठने का अवकाश मिला तो मैं सदैव उस समय को धन्य समझताथा। एक दिन मैं एक सभामें जो सेन्ट जेम्सहाल में रीजेन्टस्ट्रीट लण्डन में ग्राम मेरली बोनके लिये पुस्तकालय नियत करने के लिये हुई थी गयाथा और उस सभामें यद्यपि मैंने बड़े २ विद्वान् और शास्त्रज्ञों के व्याख्यान सुने परंतु मेरी समझ में लेडी जौन मेनरस साहिबाका व्याख्यान जो उन्होंने विद्याके प्रशंसा और उसके गुणोंपर दिया सबसे बढ़करथा-अङ्गरेज़ी घरों की व्यवस्था स्त्री पुरुष के अदालतके झगड़ोंसे जानी नहीं जासकी किंतु उनमेंकी आप जाने से मालूम होसकी है वहां के लोगों का यह नियम है कि सिवाय मूर्खोंके और कोई मनुष्यउस समय तक बिवाह नहीं करता जबतक कि वह रोटी कमाने के योग्य न हो। इस बिषयमें डारबन साहिब एकप्रसिद्ध विद्वान् का कथनहै कि। अति दरिद्र और निर्बुद्धिही अल्पावस्था में बिवाह करते हैं वे पुरुष जो दीर्घदृष्टि मितिव्ययी और शुभाचरण हैं वे ऐसी अवस्था में बिवाह करते हैं कि जब वे अपना तथा अपने बालबच्चों को सुखसे पालन करसकें स्त्रियों में भी अल्पावस्था में बिवाह का होना हानिकारक है क्यों कि फ्रान्स

देश में बीसबर्ष से कम अवस्था की बिवाहित स्त्रियां जो एक बर्ष में मरती हैं उनकी संख्या उन स्त्रियों से जिनका बिवाह नहीं हुआ द्विगुण है। हिन्दुस्तान मेंभी यही देखागया है कि विधवाओं की आयु की अपेक्षा में सौभाग्यवती स्त्रियों की आयु बहुत कम होती है इसके सिवाय यदि बाल बिवाह का धर्म्म से सम्बन्ध होता तो हरएक जाति के लोगों में यह रीति प्रचलित होती परन्तु हरएक मनुष्य को यह मालूम है कि एकही जाति के धनाढ्य लोग तो अपने बच्चोंका बिवाह बाल्यावस्था में अपने द्रव्य का दिखावा करने के लिये करते हैं और उसी जाति के निर्धन लोग बड़ी अवस्था में बिवाह करते हैं। यह भी पाया गया है कि बाल्यावस्था के बिवाह उनहीं लोगों में अधिक प्रचलित हैं कि जो अपने तईं उत्तम वर्ण कहते हैं। मनुष्य गणना से यह भी प्रकट हुआ है कि पंजाब के बहुत से जिलों में तो इसका रिवाजही नहीं है और जहां इसका रिवाज है वहां के लोग उन जिलों के लोगों की अपेक्षा में कि जहां रिवाज नहीं है अधिक दुर्बल होते हैं। निदान इस रिवाज पर जहां तक कि ध्यान दिया जाता है उसका मूल कारण जाति और द्रव्य का अभिमानही मालूम होता है अर्थात् जितनी जल्दी लड़का वा लड़की का बिवाह होजाता है उतनेही उसके पिता माता प्रतिष्ठित समझे जाते हैं वा उनको अपने द्रव्य के खर्च करने का अवसर मिलता है। सिवाय इसके और भी कारण होसक्ते हैं अर्थात् यह भय कि लड़का लड़की में अवस्था पाकर कोई रोग पैदा होजावै कि जिसके कारण से उसका बिवाह न होसकै वा यह कि माता पिता को अपने बच्चों को व्याहा हुआ देखकर हर्ष होता है वा यह कि कन्या युवा होने तक कुँवारी रही तो जाति में उनका अयश और होगा--परन्तु ये सब ऐसे कारण हैं कि जो एकही जाति के दीन और निर्धन लोगोंपर नहीं व्यापते। हां एक बात अवश्य माननी पड़ैगी और वह यह है कि कोई २

जाति के अवान्तर भेद इतने अधिक होगये हैं और उन भेदों में से भी इतनी शाखा होगई हैं कि एक शाखा के लोग दूसरी शाखा के लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं रखते । यह वास्तव में उनजातियों में एक बड़ा कारण बाल बिवाह का है परन्तु उसका भी प्रबन्ध होना सम्भव है ॥ अब यह देखना उचित है कि ऐसे बुरे रिवाज का कि जिससे हिन्दुओं को इतनी हानि पहुंचती है किस प्रकार सुधार होसकाहै । इस विषयमें पहिली वस्तु जिसकी आवश्यकता है वह स्त्रियोंकी शिक्षाहै और यदि स्त्रियोंकी शिक्षाके द्वारा उनकी बुद्धि इस विषयमें उसी मार्ग पर आजावे कि जिसपर पुरुषोंकी है तो इस रिवाज में शीघ्रही सुधार होजावैगा । सरकार अंगरेज़ी अपने प्रबन्ध की अपेक्षासे कोई क़ानून यानियम नहीं बनासकी सिवाय इसके कि वह क़ानून बहुत सख्त क़ानून फौजदारी काहोवे । विरुद्ध इसके यदि लोग जैसा कि कोई २ जगह होरहा है बहुधा व्याख्यानों और किताबोंके द्वारा और शास्त्रार्थ और सभाओं के द्वारा इस रिवाज की हानियों को प्रकट करें तो सुधारकी अधिकतर आशा है सो शैल कान्फ़रन्स—के कर्तव्य से बड़े शोकके साथ यह ज्ञात हुआहै कि केवल मूढ़ अशिक्षित लोगही नहीं किन्तु कोई शिक्षित लोग भी सम्मति न होने के कारण इस सुधार के बाधकहोरहे हैं उनको यहज्ञात नहीं है कि ऐसे सुधारके द्वारा कितनी बड़ी उन्नति जातिकी होतीहै । कोई लोग ऐसे भीहैं कि जो इन रिवाजों की हानियों को यथावत् जानकर भी उनके सुधार में साहस नहीं करते और जाति और घरके लोगों के दबावसे कान भी नहीं हिलाते । है तो योंकि यदि थोड़ासाभी साहस उसके दूर करने की नहीं है तो रिवाजके दोष ज्ञातहो-जाना भी व्यर्थ है । कोई २ मनुष्यों का यहभी विचारहै कि इन रिवाजोंमें समय पाकर आपहीसुधार होजायगा । सामान्य लोग बड़े पुरुषोंकी रायके अनुसार चलतेहैं । इसलिये जबतक

कि धार्मिक और सुशिक्षित और प्रतिष्ठित लोगोंकी ओर से जिनकीजाति और बिरादरीमें प्रतिष्ठा और दबाव और मानहै साहस और श्रमके साथ सुधारमें उद्योग न होगा तोकोई बाहरी परिश्रम और उद्योग फलदायक न होगा। इस विषय में सरआक लेन्ड काल्विन साहिब पहिले लफ्टिनेन्ट गवर्नर पश्चिमोत्तर देश ने यह कहा है कि । पहिला कार्य जो करना उचित है वह यहहै कि समस्त सुशिक्षित और प्रतिष्ठित हिंदुस्तानी अपनी सम्मति इन रिवाजों के हानिकारक होने में प्रकट करें यदि जैसा कि मुझको ज्ञात हुआ है इन रिवाजों का मूल शास्त्र नहीं है तो ऐसे लोगों की जो अदालत में इसप्रकार के मुकद्दमे (नमूनेपरीक्षा) लड़ावै तो सहायता होनी चाहिये। इसबात का कहना आवश्यक नहीं कि गवर्नमेंट तुम्हारी सहायता नहीं करसक्ती जब तक कि तुम आप साहस और उद्योग न करोगे और हरएक जिलों में सोसाइटी सभा अपने अभिप्राय के पूरा करने के लिये नियत न करोगे और शास्त्रार्थ न करोगे इसबातको दूर धरके कि चाहे तुमको लोग कितनाई बुराकहैं। यदि किसी की जाति की ओर ध्यान करोगे तो सुधार नहीं हो सकेगा मिथ्याबर्ताव का खण्डन सत्यसे होता है। मैं उन मनुष्यों में से हूं कि जिनकी राय सर्वथा यह है कि वह लोग जो स्वयम् अपने आचरणों को शुद्धदूर करनेके लिये उद्युक्त नहों उनकी राज्य प्रबन्ध के सुधार के लिये सम्मति नहीं लीजानीचाहिये-किन्तु उन पर यह शंका आसक्ती है कि राज के सुधार में उद्युक्त होने से वह अपने व्यवहारों को शुद्ध नहीं करना चाहते। बहुत से हिंदुस्तानी जो उन्नति के अभिलाषी हैं बाहर से तो अपना प्रकट सुधार करना चाहते हैं परन्तु अंदर से कुछ नहीं करते बास्तव में उन को दोनों ओर से एकसाही उद्योग करना चाहिये। इस देश में सोशैल रिफार्म अर्थात् सामाजिक उन्नति के मैदान में उन लोगों को आना चाहिये आवश्यकता

के समय पर सरकार निरन्तर उन की सहायता करैगी। परन्तु स्वयम् उनकाही यह कार्य्य होना चाहिये कि वे उत्साहपूर्वक साहस में कटिबद्ध होवैं॥ इस विषय में और भी बहुत से योग्य अंग्रेज़ों की यही राय है और उन की यह समझहै कि हिंदुस्तानियों ने यदि विद्या पठन करली तो क्या हुआ परन्तु उन में साहस नहीं है न वह अपने धर्म्म में विश्वास करते हैं न उन में दृढ़ मति है न दीर्घ दृष्टि है न यह विचार है कि विद्वानों पर और लोगों की अपेक्षा से बहुत कुछ भार है इस में कोई सन्देह नहीं है कि उन लोगों के लिये जो किसी रिवाज में सुधार करना चाहैं बहुत क्लेश और परिश्रम होता है इङ्गलिस्तान में भी रिवाज तोड़ना सुगम नहीं है। वहां पर भी बहुधा सुधार करने वाले हिया हार देते हैं तो हिन्दुस्तान में जहां रिवाजही सब कुछ है सुधार क्योंकर सुगम होसक्ता है। परन्तु यदि सुधारका आरम्भही न किया जावै तो सुधार कभी न होगा। इसलिये वे लोग जो औरों की अपेक्षा में अपने तईं अधिक बुद्धिमान् समझते हैं उनको उचित है कि सुधार का आरम्भ करैं। श्रीमद्भगवद्गीता में लिखाहै कि जो श्रेष्ठ पुरुष करता है उसी के अनुगामी औरऔर लोगभी होतेहैं। प्रमाण अर्थात् प्रतिष्ठितमनुष्य जो कुछ करता है उसी प्रकार सब लोग अनुवर्तन करते हैं इसलिये यदि कुछ प्रतिष्ठित पुरुष प्रथम अपने घरों में सुधार का आरम्भ करैं तो उनकी जाति पर बहुतही शीघ्र व्याप्त होगा। और जैसा कि अनुभव से देखागया है उन के साथ द्वेष भी बहुत न होगा--बास्तव तो यहहै कि बाल विवाह आवश्यक नहीं हैं किन्तु द्रव्य के प्रकाश करने का एक आश्रम है-और प्रतिष्ठित और धनाढ्यलोगों के निमित्त शास्त्रोक्त अनुशासन भी बदले जा सक्ते हैं। इसलिये जब यह सिद्ध कर दिया गया कि यह रिवाज शास्त्र के विरुद्ध और हानिकारक है तो उस के सुधार करनेमें क्या बिलम्बहै हरएक मनुष्यको यहअनुभवहुआ

है कि हरएक जाति के निर्धन मनुष्योंमेंऔर उनजातियोंमें कि जहां बिवाह के नियम सख्त नहीं हैं बहुतसी कन्या युवा होनेके पश्चात् भी बहुत दिनतक कुँवारी रहती हैं इससे प्रत्यक्ष है कि जितने शास्त्रोक्त अनुशासन इसविषय में हैं वे केवल द्रव्य पात्रों के लियेही प्रचलित हैं निर्धनों के लिये नहीं। इसलिये यदि धनाढ्यलोग इस रिवाजमें सुधार करनेका परिश्रम करें तो बहुधा लोग कुछअधिक विरुद्धता प्रकाश नकरैंगेब्राह्मण बिचारेतो अपनी दक्षिणा से ध्यान रखते हैं और वे जिधरकी हवा देखैंगे वैसीही कहने लगैंगे। किसी २ लोगों की जो सुधार के लिये श्रम और उद्यम करते हैं यह राय है कि यूनीवर्सिटियों को उचित है कि इस बातका विज्ञापन देवैं कि कुछ दिनों के पश्चात् वह विद्यार्थी जिसका बिवाह होगया है एन्ट्रेन्स के इम्तहान अर्थात् प्रथम परीक्षा में शामिल न होसकैगा। और पैरिसकी यूनीवर्सिटी में भी ६०० वर्ष तक यहही नियमथा कि कोई मनुष्य बी. ए. की पदवी नहीं पा सक्ता था जबतक कि इसबात की प्रतिज्ञा न करै कि उसका बिवाह नहींहुआ-। हिंदुस्तानमेंभी श्रुति और स्मृतियोंमें से सिद्धकर दिया गया है कि ज्ञान ब्रह्मचर्य्य से प्राप्तहोताहै तरह२केयज्ञ तपमौन ब्रतसंन्यास इत्यादि सबछान्दोग्य उपनिषत् के आठवें अध्याय पांचवें खण्ड में ब्रह्मचर्य्य से कम माने हैं। इसलिये यदि लोगों के मनों में भी इन रिवाजों की बुराइयों का निश्चय होजावै जैसा कि दृढ़ विश्वास है कि शीघ्रही होजावैगा। तो हिन्दुस्तान की यूनीवर्सिटियों का यह विज्ञापनदेना कि ५ वा १० बर्ष के पश्चात् कोई बिवाहाहुआ लड़का उन के एन्ट्रेन्स परीक्षा में शामिल न हो सकैगा व्यर्थ न होगा- क्योंकि उस से लड़कों और उनके माता पिताओं को बिवाह के हटाने का अवकाश मिलैगा॥

बाल बिवाह का एक बड़ा बुरा परिणाम यह है कि मर्दुमशुमारी अर्थात् मनुष्य गणना संख्या में ऐसे मनुष्य कि जिन का

शारीरिक पुरुषार्थ दिन दिन क्षीण होताजाता है बढ़ते जाते हैं और उनका जीवनोपाय भी कुछ नहीं है। शास्त्रों का यह अनुशासन कि विद्या पढ़कर गृहस्थआश्रम इस बात को स्पष्ट प्रकट करता है कि शास्त्रकारों का यहही अभिप्राय था कि कोई मनुष्य उस समय तक बिवाह न करै कि जबतक द्रव्योपार्जन के योग्य न होवै। बर्त्तमान समयमें यह बात नहीं है किन्तु मर्दुमशुमारी की बढ़ोतरी के साथ दारिद्रकी भी बढ़ोतरी है। यूरोपदेश के कोई कोई नगरों में निर्धन मनुष्यों को अपनी बिपत्ति के कारण बिवाह करनेका साहस नहीं होता किन्तु इंगलिस्तान में तो उन लोगों में भी कि जिनको अपने सन्तान का पालन पोषण करनेका यथायोग्य सामर्थ्य है बिवाह करनेसे बहुधा ग्लानि पाई जाती है। उस देशमें एकसहस्र मनुष्योंमें से केवल पन्द्रह मनुष्य बिवाह करतेहैं और एकसहस्र मनुष्योंमेंसे केवल ५३वह हैं कि जो रंडुए वा रांड़ होतीहैं मध्यावस्था वाले पुरुषों के विवाह की २७०७ और स्त्रियोंकी २५½ संख्याहै इंगलिस्तान में १५ और ४५ वर्षकी अवस्थाके बीचमें आधीसे अधिक स्त्रियां कुमारी रहती हैं नार्वे और स्विट्ज़रलैण्ड देशके मजदूर लोगोंने यहसमझ कर कि बहुतसी सन्तानका होना दरिद्रका कारणहोताहै बिना सोचे समझे बाल्यावस्था में विवाह करना सर्वथा बन्द करदिया है। यूरोप के अन्य देशों में सर्कार ने भी विवाह का निषेध किया है। जब तक कि पुरुष इस बात का समाधान न करदे कि उसके पास बाल बच्चों के पालन पोषण करने का अवलम्ब है। तिब्बत देश में बिवाहका न करना प्रतिष्ठाका कारण है और बिवाह करने से मनुष्यों को सरकार में पदवी नहीं मिलती—। यूनान देशके प्राचीन विद्वानों अफ्लातून और अरस्तू आदिक ने भी यही कहा है कि सर्कार का धर्म्म है कि मनुष्यों को केवल उस समय बच्चे उत्पन्न करने दे कि जब उनके शरीर की शक्ति यथावत् दृढ़ होजाय। शोचनीय है कि हिन्दु-

स्तान की वर्त्तमान दशा कितनी विरुद्ध है यहां पर पुरुष और स्त्री नहीं किन्तु लड़के और लड़कियां ऐसे समय में सृष्ट्युत्पत्ति करते हैं कि जब वे अन्य देशों में विद्यालयों में शिक्षापाते हैं और इसी कारण तन से नंगे और पेट से भूखे लोगोंकी संख्या दिन २ बढ़तीजाती है। इस देश में बहुत से लोग ऐसे हैं कि जो एक भी अकाल नहीं सहार सक्के। अन्न इस देशसे इतना बाहर जाने लगा है कि लोगों के पास एक ऋतु के अन्त तक के भी खाने को नहीं रहता पहिले समयों में जब लोग थोड़े थे और अन्न बाहर नहीं जाता था तो लोग अकाल की विपत्ति और क्लेश को अधिक समय तक सहार सक्के थे। उस समय के गवर्नमेन्टको यह चिन्ता नहींथी कि अन्न बाहर जाता है न यह चिन्ता थी कि दारिद्र और भूख इतनी बढ़ती जाती है। सिंह चीते भेड़िये व्याघ्र और और पशु और लुटेरे और डांकू कभी २ अपना चुङ्गल मार कर मनुष्य संख्या को बढ़ने नहीं देते थे सहस्त्रों मनुष्य रोग ग्रस्त होकर मरजाते थे। एक दुकाल एक देश को निर्जन कर देता था। लुटेरों की रौ प्रबाह हरएक बस्तु को बहालेजाता था। आजकल यह सबबातें उठगईं। अब रही यहबात कि दरिद्री और भूखोंकी जो संख्या बढ़ती जाती है वह क्यों कर रोकी जावै। अन्नका महँगाहोना और सूखा और कमपैदावारी अब इस देश में कोई नई वस्तुनहीं हैं किन्तु सदैव बनीही रहतीहै। सन् १८९१ ईसवी में सन् १८८१ ईसवी की अपेक्षा से सौपीछे ६½ खाने वाले बढ़गये काल की तहकीकात करने वाले कमीशन ने लिखा है कि बङ्गाल में २ करोड़ ४० लाख मनुष्यों के लिये केवल १½ करोड़ एकर पृथिवी जुतीहुई थी। और पश्चिमोत्तर देशके ज़िलों में ४ करोड़ ४० लाख मनुष्य ३ करोड़ ४५ लाख एकर जुतीहुई पृथ्वी से दशबर्ष हुए निर्बाह करसक्केथे उस समयमें १ करोड़ ५० लाख एकर पृथ्वी जोतने के योग्यथी यदिवह अभीतक जोतने में नहीं आई तो५ बर्ष में

पश्चिमोत्तर देशके ज़िलोंकी भी वही दशा होजावैगी जो हिंदुस्तान में अन्य ज़िलोंकी है कि जहां जन संख्या बहुतायतसे है। हिन्दुस्तानी किसान हरएक प्रकारकी विपत्ति सहेंगे परन्तु अपने गांव के बाहर नहीं जावैंगे। इसलिये यह बिचार करना कि लोग उन ज़िलों वा नगरों से जहां आबादी की बहुतायत है उन जगोंमें जहां आबादी की कमी है चले जावेंगे। एक कठिन बात है। सरकार अङ्गरेज़ी की राज्यधानी में से हिंदुस्तानी राज्यों मेंभी लोग जानेको नहीं चाहते किन्तु बहुधा यह होताहै राजाओं के राज्य में यथावत् प्रबन्ध न होने के कारण वहांसे बहुधा अंग्रेज़ी राज्य में आ बसते हैं। इसलिये यद्यपि समस्त देश की पृथ्वी जन संख्या के बिचार से अबभी बहुत है परन्तु किसी जगह तो कोसों तक पृथ्वी शून्य पड़ी रहती है और मनुष्य की उन्सान भी नहीं है। यूरोपदेशमें मैंने फ्रान्स जर्मनी औ स्वीट्ज़रलेण्ड इङ्गलिस्तान के और सीलोन अर्थात् लंका में बहुत से खण्ड ऐसे देखे कि जहां एक इञ्च भी पृथ्वी खाली नहीं थी मार्सेलिस से पैरिसतक पैरिससे कीलीतक फ्रान्समें और कोलम्बो से न्यूरेलियातक सीलोन में एकभी खण्ड पृथ्वी का बिना जुता हुआ दृष्टि नहीं पड़ा। यूरोपमें तो लोगों ने दरिया की रेती भी खाली नहीं छोड़ी किनारों तक को भी लेलिया इंगलिस्तान में भी यद्यपि मौसम बुरा है कोई खण्ड पृथ्वी का खेत या कारखानों से खाली नहीं देखा किन्तु जब कि इतनी उन्नति और श्रम करनेपरभी उन देशों में भी लोगों को यह चिन्ता है कि हमारे यहां दारिद्र और भूख की बढ़ोतरी है और सौ पीछे ६ लोगों के पास खाने को नहीं है तो इस देश में कि जहां के लोग कारखाने का नाम भी नहीं जानते जिनका जोतने बोने और खेती करने का वही ढंग है जो प्राचीन समय से चला आता है जिन के उद्यम के उपाय दिन दिन कम होते जाते हैं और जिन के पेट को रोटी और तन को कपड़ा मिलना दिन २

दुर्लभ होता जाता है उनकी क्या दशा होगी यह बिचार हरएक मनुष्य के हृदय परहै चाहै वह छोटा हो वा बड़ा--जिस से पूछो उसका यही रोना है कि उद्यम नहीं परन्तु इसके कारण पर कोई ध्यान नहीं करता। इस का कारण यही है कि मनुष्यों के संख्या तो बढ़ती जाती है परन्तु उद्यमका निकास और अवलम्ब नहीं बढ़ता। और उसका एक उपाय सिवाय इस के और कुछ नहीं है कि लोगों को उचित है कि व्यापार और कानून निर्णय की ओर ध्यान लगावें और जबतक कि उन के पास कालक्षेप और निर्बाह करने का पूरा आश्रय न हो बिवाह न करें इससे अधिक कोई विपत्ति नहीं है कि बिना धनोपार्जन करने के बिवाह करें। हरएक देशके लोगोंकी उन्नति उन के हाथ में अधिक है गवर्नमेन्ट के हाथ में कम है यदि मजदूर की उजरत उस के बाल बच्चों के पालन पोषण के लिये पूरी नहीं पड़तीहै तो इस से प्रत्यक्ष है कि देश में इतनी पूंजी मौजूद नहीं है कि जिस से बहुत मनुष्य कालक्षेप कर सकें और यदि ऐसी दशामें भी लोग आंख बंदकरके बिवाहकरें तो सिवाय इस के कि वह अपने देशपर भारहों और अपने तईं आपत्ति और रोग में डालें और कुछ नहीं होसक्ता। सिवाय इस के यदि वह लड़के जिन का उनके माता पिता बिवाह करना चाहें कमाने के योग्य हों तो उनकी शरीर की सामर्थ्य और बुद्धि बलसे देश की दौलत घटने के बदले दिन २ उसकी बढ़ोतरी होगी--जो लोग आरम्भ शीघ्र करते हैं उनका अन्तभी शीघ्रही होजाता है। वे लोग जो युवावस्था में बिवाह करते उनके बच्चे अधिक आरोग्य और दीर्घायु होते हैं उनलोगों के बच्चोंकी अपक्षामें कि जिनका बिवाह लड़कपन में होता है। ऐसे बिवाहों से लोगों में चित्त की स्वाधिनिता और साहस कम होजाताहै। और जैसे कि उनको अपने बाल बच्चों की चिन्ता बचपन मेंही पड़जाती है तो वह जो दो चार रुपया का उद्यम उनको मिलता है उसी

को धन्य समझते हैं। विचार करने की जगह है कि यह दशा कैसी शोक की भरी हुई है परन्तु इस का उपाय किसी गवर्नमेन्ट के हाथ में नहीं है। स्वयम् लोगों के हाथ में है। अब बात यह है कि क़ानून का हस्ताक्षेप इन रिवाजों में होसक्ता है वा नहीं। इस देशमें गवर्नमेन्ट के हाकिमोंका धर्म्म उनकी प्रजा के धर्म्म से वितरिक्त है परन्तु गवर्नमेन्ट ने अपनी प्रजा को धर्म्म की स्वाधीनता पूरी पूरी दीहै और उन्होंने ऐसे कामों में हस्ताक्षेप करने का नियम यह रक्खा है कि सिवाय ऐसे रिवाजों को दूर करने के जो प्रकृति बिरुद्ध हों वा जिनको प्रजाके बहुतसे मनुष्य दूर कराने की गवर्नमेन्ट से याचना करैं वह हस्ताक्षेप न करैगी। यह ही नियम गवर्नमेन्टने सन् १८८६ ईसवी और सन् १८६१ ईसवी में प्रकट कियाहै "सन् १८८६ ईसवी में गवर्नमेन्ट ने अपने हुक्म नम्बरी ३५ लिखित ८ अक्टूबर सन् १८८६ ईसवी में यह लिखा है कि बहुधा गवर्नमेन्ट का नियम यहहै कि जब जाति वा रिवाज किसी बरताव को प्रचलित रक्खैं जो अदालत फौजदारी के कानून के बिरुद्ध हो तो सर्कार कानून पर अनुवर्तन करैगी। जब जाति वा रिवाज कोई नियम प्रचलित रक्खै कि जो अदालत दीवानीमें नालिश करने के योग्य न हो परन्तु जो आम इख़लाक़ के बिरुद्धहो तो सर्कार उसको जारी नहीं करैगी परन्तु जब जाति वा रिवाज कोई ऐसाबरतावजारी रक्खै जो सर्वथा लोगोंकी सम्मतिपर छोड़ा जाता है और जिसके प्रचार के लिये अदालत दीवानी वा फ़ौजदारी की सहायता की आवश्यकता नहीं है तो सर्कार उसको जारी नहीं करैगी और न सर्कार का हस्ताक्षेप उचित है इन सब नियमोंको किसी एक बिषय में काममें लाने के लिये बहुतसा मति बिरोध बिरुद्धहो सक्ताहै। परन्तु एक नियम जो सर्वथा इन विषयोंके निमित्त होना चाहिये वह यहहै कि यदि सर्कार अपने क़ानून वा वर्त्तमान प्रबन्ध की अपेक्षासे धा·

र्म्मिक वा सामाजिक कामों में जैसा कि यहहै हस्ताक्षेप करै तो वह अपने हुक्म को उन सब उपायोंसे जो उसके पास हैं पूराकरासक्ती हैं वा नहीं? । यदि वह पूरानहीं करासकी तोउस का हस्ताक्षेप न करनाही अच्छाहै । उन नियमों से प्रकटहोगा कि ऐसे बिषयोंको जैसे कि बाल बिवाह इत्यादि में सर्कार का हस्ताक्षेप करना ठीक नहीं है किन्तु इनका सुधार विद्या और शिक्षाकी उन्नति और लोगों की राय पर छोड़ना उचित है यह सत्य है कि कोई २ बात में सरकार अंगरेजी ने वह नियम सदाचारके जो जाति नियमोंसे बिरुद्ध हैं नियत किये हैं और उनकी व्याप्ति का परिणाम लोगोंपर उत्तम हुआहै परंतु जब कि क़ानून वा रिवाज वा जाति के विषयमें बिचारहो तो सर्वथा नियम यहहै कि क़ानून बनाने वाले अपने आपको मर्य्यादा के भीतर रक्खें और बहुधा सम्मति का अविरोध स्वीकार न करें ॥

गवर्नमेन्ट की यह राय ठीक है और लोगोंको आप अपनी रिवाजोंमें सुधार करना चाहिये और अन्यदेशके कानून बनाने वालों से अपनी रिवाजों के सुधार कराने की प्रार्थना नहीं करनी चाहिये । परन्तु इस बातकाभी ध्यान रखना चाहिये कि कौन काम ऐसे हैं कि जिनमें सरकारकी सहायता की आवश्यकताहै और कौन ऐसे हैं कि जिनमें नहीं है । कोई जाति कि जिसका हरकाम क़ानूनकेही आधीनहो उन्नतिको प्राप्त नहीं होसक्ती । बहुतसे क़ानूनों से वह परिणाम कि जो उनके बनाने वालों के ध्यान में भी नहीं था उत्पन्न होजाताहै । इसलिये गवर्नमेन्टकी ओरसे सामाजिक कामों में जो हस्ताक्षेप करनेका निषेधहै वह ठीकहीहै।परन्तु यहभी अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि वह निषेध भी मर्य्यादाके बाहर न बढ़ै । यदिलोगों की रायके अनुसार गवर्नमेन्ट कोई क़ानून बनावै तो गवर्नमेन्टका क़ानून बनाना अनुचित हस्ताक्षेप नहीं समझा जावेगा । इस नियम पर

ध्यानकरके गवर्नमेन्टका ऐसा कानून बनाना कभी ठीक नहींहो-गा कि बाल्यावस्था का बिवाह एक अपराधहै वा यह कहना कि जिन लोगों का बाल्यावस्था में बिवाह होजावै वे जिस समय चाहैं अपने सम्बन्ध को तोड़ दें ऐसा कहना धर्म्मशास्त्र और रिवाज और लोगों की राय के बिरुद्धहोगा। हिन्दुओं के यहां बिवाह केवल एक ठहराव वाही नहीं है किन्तु एक संस्कार है कि जब वह होजावे तो मरणान्त स्थिर रहता है। इसलिये यदि सरकार अङ्गरेजी यह क़ानून बनावै कि कोई हिन्दु स्त्री वा पुरुष जिसका बिवाह बाल्यावस्थामें होगयाहो मेजिस्ट्रेटके सा-मने हलफ़ नामा दाखिल करके अलग होजावे जैसा कि कोई २ लोगोंकी सम्मतिहै तो यह सर्वथा अनुचित और शास्त्रके विरुद्ध होगा और कोई मनुष्य इस को अच्छा नहीं कहसक्ता। ऐसे कामों में कानून बनाने वालों के हस्ताक्षेप की आवश्यकतानहीं है इसलिये जबतक कि रिवाज न बदलाजावे सुधार हो नहीं सक्ता। किसी क़ानून का बन्धन किसी मनुष्य को इसपर ला-चार नहीं करसक्ता कि वह किसी एक नियत मनुष्य के साथ खाँय पीयैं वा शादी ब्यवहारकरैं केवल वे लोगही इस रिवाज को स्थिर रखसके हैं वा बदल सक्ते हैं। ऐसा करना उन्हींका कामहै न गर्वनमेन्ट का। बहुतसी जातियों में बाल्यावस्था के बिवाह के सुधार की बाबत उद्योग थोड़ा बहुतहो रहाहै। यथा बरौदे की महाजन सभा अर्थात् ३० जातों ने यह राय नियत की है कि किसी लड़के का बिवाह दश बर्षकी अवस्था से पहिले न किया जावे। लड़के की अवस्था लड़की की अवस्था से अधिक होगी और वे लोग जो इस नियम के बिरुद्ध चलैंगे वे सर्कार से दण्ड पावैंगे और उस सभा ने सरकार बरौदे से प्रार्थना की है कि वे ऐसे दण्ड देनेका अधिकार सभाको दें जो उन नि-यमों के प्रतिकूल चलने वालों को देना आवश्यकहो। परन्तु वह प्रयत्न अबतक परा होकर फलदायक नहीं हुआ। यदि

सबलोग दृढ़तासे इस विषय में प्रयत्न करें तो उसके फलदायक होने में कोई सन्देह नहीं है किसी २ लोगोंकी यह रायहै कि समस्त सभ्यदेशोंमें यह नियम है कि वह अवस्था जिसमें विवाह उचित है क़ानून से नियत करदीजावै। यूरोपके बहुधा मुल्कोंमें १८ बर्ष की अवस्था लड़कोंके लिये और १२ वा १४ बर्ष की अवस्था लड़कियों के लिये कम से कम बिवाहकी अवस्था कानूनमें नियत कीगई है। हिंदुस्तान के लिये भी स्मृतिकारोंने बिवाह की अवस्था जैसा कि ऊपर प्रकट किया गयाहै नियतकी है। इसालिये यदि लोगों की प्रार्थना पर सर्कार भी यह आज्ञादे कि एक नियत अवस्था से कम अवस्था में जो बिवाह होंगे वह जहांतक कि मुक़द्दमात दीवानीसे सम्बन्ध रखते हैं अयोग्य और अनुचित होंगे तो प्रायः वह अपने इस नियम के विरुद्ध "कि धार्म्मिक विषयमें हस्ताक्षेप न करना चाहिये न" चलेंगे न वह अपने किसी नियम को जबर्दस्ती अपने प्रजापर डालेंगे। यदि ११ वा १२ बर्षकी अवस्था लड़कियों के लिये और १४ वा १५ की अवस्था लड़कों के लिये नियतकीजावै तौ वह बहुतसे मनुष्योंके बर्त्तावके अनुसारहोगा बाल्यावस्थाके बिवाह का वास्तव में धर्म्मशास्त्रसे कोई संबन्ध नहीं है यदि उसका कोई सम्बन्ध है तो रिवाजसे है जिसको कोई २ लोग धर्म्मके तुल्य मानते हैं। और कोई २ ऐसा नहीं भी कहते हैं परन्तु उनलोगोंको कोई भी कुछ नहीं कहसक्ता। यदि सर्कार अंगरेज़ी हिन्दुओंके सब रिवाजों में इस बिचार से कि उनका धर्म्म से सम्बन्ध है सर्वथा हस्ताक्षेप न करती तो सती होना अपराध न समझा जाता। बाजारों में कोई स्थान पर गालियां गाना बन्द न कियाजाता। न विधवाओंका बिवाह उचित समझा जाता न धर्म्मशास्त्रकी आज्ञाके प्रतिकूल वह हिन्दु जो अपना धर्म्म छोड़दे अपनी की बापौती जायदादके पानेके योग्य ठहराया जाता और धर्म्मशास्त्रकी आज्ञा

व्यभिचारिणी के विरुद्ध वह बिधवा जो पीछे होजावै अपने पतिकी जायदाद रखने के योग्य नहीं ठहरती यदि ये क़ानून इस बिचार से नियत किये गये कि उनका प्रचलित करना मनुष्यके प्रकृतिके अनुकूल है वा हिंदुओंकी नवीन दशा के अनुसार है तो प्रायः बाल बिवाह का रोकना भी ऐसाही है। इसलिये यद्यपि हरएक हिंदूका धर्म्म है कि रिवाज को जिससे इतनी हानि होती है आप अपने घरमें बन्द करने का उद्योग करै और अपनी जाति के लोगोंको भी इसबात पर उद्युक्तकरै। गवर्नमेन्ट का भी यही धर्म्म है कि वह इस विषयमें खोज करै कि आया लोग क़ानूनके अनुसार बिवाह की अवस्था दीवानी अदालत के मामलों के लिये नियत कराना चाहते हैं वा नहीं? वर्त्तमान समय में ऐक्ट ६ सन् १८८६ ईसवी के अनुसार जन्म और मरण लिखाजाता है। इसलिये यदि ऐसे लेख शुद्धहोवैं तो कोई झगड़ा इस विषय में कि किस अवस्था में विवाह हुआ न होगा--यदि बहुत से लोगों की ऐसे कानून के प्रचलितहोने में सम्मति होवे तो इसके प्रचलित करने में कोई हानि नहीं है। कोई २ लोगों की यह भी राय है कि वर्त्तमान कानून जो स्त्री दिलापाने के विषय में है उसका संशोधन होना चाहिये। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ऐसी नालिशैं अदालतों में बराबर होती हैं और उनकी पुष्टि धर्मशास्त्र से होती है मनुजी कहते हैं कि ऐसा पति जो अपनी स्त्री को जो उससे प्रीति रखती हो वा उससे दुर्वचन न कहतीहो और पतिव्रता और सुशीला और बुद्धिमान् हो परित्याग करदे तो उसको राजा दण्ड देकर उसका धर्म्म पूरा करावेगा। यदि स्त्री क्रुद्ध होकर घरसे चलीजावे तो वह यातौ तुरन्तही जेलखाने में कैद करदी जावैगी वा सब घरके लोगों के सामने त्यागकरदीजावैगी। इन अहकामों के अनुसार यह निर्माण हुआ है कि पति और स्त्री के हक कानूनी हैं और उनका प्रचलित कराना अदालत

का काम है और स्त्री पुरुषों में से हरएक उसको प्रचलित करा सक्ताहै न केवल पतिही अपनी स्त्री के ऊपर जारी करासक्ता है ॥ और जैसे कि अदालत दीवानी की वर्त्तमान समयमें वही प्रतिष्ठा और पदवी है जो धर्म्मशास्त्र में राजा की थी--तो उक्त सभ्य अदालतों का काम है कि उनको जारी करावें ऐसे मुकद्दमे वहुधा नीच जातियों में होते हैं । और मुझको पन्दरहवर्षके समय में केवल एक दो मुकद्दमे इस प्रकार के सभ्य महाशय लोगों की जाति के फैसल करने पड़े उनमें से एक मुकद्दमे में एक मनुष्यने जो एक प्रतिष्ठित कायस्थ रईस का बेटाथा अपनी स्त्री पर नालिश की थी । वह स्त्री उसके पास से इस कारण चलीगई थी कि वह अन्य जाति के मनुष्यों और वेश्याओं के साथ प्रघट खाता पीता था—और अपनी स्त्री के साथ निर्दयता करताथा तथाच निर्दयता और कुचलन पतिका सिद्ध हुआ और वह सब अदालतों में हारगया । सिवाय इस मुकद्दमेके एक और मुकद्दमेके जो दो सभ्य मुसल्मानोंमेंथा और कोई मुकद्दमा मेरी यादमें सिवाय जाट गूजर नीच जातिके मुसल्मानोंके और किसी जाति का नहीं हुआ--परन्तु ऐसा देखागया कि उन लोगोंमें जो ऐसे मुकद्दमे दायर करतेहैं स्त्रियां बहुधा अपने आप पतिके पास चली आती हैं और चली जाती हैं ऐसी स्त्रियां कोई प्रतिष्ठित घरानेकी नहीं होतीं और यद्यपि अदालतों से डिगरियां हो जातीहैं परन्तु वह डिगरियां निष्फल रहती हैं क्योंकि स्त्रियां अपने पतिके पास डिगरी होजाने परभी नहीं रहतीं यहांतक कि जेलखाना में जाना स्वीकार करती हैं परन्तु पतिके पास रहना नहीं चाहती हैं इसलिये इस नियम के संशोधन करने से कोई लाभ नहीं पाया जाता किन्तु वर्त्तमान कानून जिसके अनुसार मुकद्दमात दायरहोते हैं लोगोंपर कछ न कुछ असर रखताहै और सिवाय इसके कि मुद्दाअलै अपराधी को कैद कीजाय और कोई संशोधन की आवश्यकता नहीं । न केवल अंग्रेज़ी

अदालतों में किन्तु हिंदुस्तानी रियासतों में भी ऐसे मुक़द्दमात की सुनाई होती है प्रायः किसी जगह तो अपराधी मुद्दाअले को फ़ौजदारी में दगड दिया जाता है और उससे अदालतके हुक्म की तामील कराई जाती है । तथाच दफ़े २५४ मजमूआ ताजीरात रियासत इन्दोर में यह लिखाहै कि हरएक मनुष्य जो पुरुष वा स्त्रीके धर्म्मको पूरा न करे वह बादी के घर में क़ैद किया जावै यदि पति अपनी स्त्री को क़ैद करने से इन्कार करै तो वह दीवानी के जेलखाने में क़ैद किया जाता है । यदि वह उसकी खुराक न दे वा जबतक स्त्री उसके पास जाने को प्रसन्न न हो वा उनका बिवाह छुट न जावै ऐसी नालिश पुरुष वा स्त्री की ओर से होसक्ती है । तथाच मेरे रोबरू अपील में एक मुकद्दमा पेश हुआ जिस में यह प्रगट हुआ कि स्त्री को उस के पति के घर में क़ैद करना असम्भव है बादी प्रतिबादी उस मुकद्दमे के नीच जातिके थे और उन लोगोंमें यदि पति अपनी स्त्री को त्यागकर दे तो वह उसके जीतेजी दूसरा बिवाह कर सक्ती है उस मुकद्दमे में पति एक निर्बल निर्बुद्धि बावलासा आदमीथा कि जो अपनी स्त्री के साथ कभी नहीं रहाथा और मैंने यह बिचार करके कि क़ानून फ़ौजदारी पर ऐसे कामों में अनुवर्त्तन करना न्याय न होगा मैंने स्त्री को उसके पतिके घरमें वा जेलखानेमें भेजने से इन्कार किया इस फैसलेकी बाबत समाचार पत्रोंने तरह २ की राय प्रकट कीं । कोई की यह राय थी कि मैंने उस स्त्री को वह न्याय किया जो अंग्रेजी अदालतें रुकमा बाईके मुकद्दमेमें न कर सकीं और कोई की यह राय थी कि ऐसा न हो कि यह मुकद्दमा सभ्य महाशयों के जाति के लिये प्रमाण होजावै । मेरी राय इस विषय में इस समय भी वही है जो पहिले थी । अर्थात् यह कि ऐसी नालिशों का होना एक प्रकार का डर है इस से अधिक नहीं है इसलिये यह प्रचार नियत रहना चाहिये इस समय गवर्नमेन्ट ने दफ़े ३७६ ताजीरात हिन्द का जो

संशोधन किया है उसके अनुसार भी बाल्य बिवाह का कुछ न कुछ रोक अवश्य होगा क्योंकि जब स्त्रीको अपने पति के पास जाने के लिये बारह वर्ष की अवस्था कानून से नियत कीगई है तो लोग अपनी लड़कियोंके बिवाह ऐसी अवस्था में करेंगे कि जिस से यह कानून उन पर न व्यापे॥

दूसरी बिचार यह है कि एकही जाति की कई एक आवान्तर शाखाओं में परस्पर बिवाह होना उचितहै वा नहीं-पहिले समय में तो यहां तक था कि एक जातिके लोग दूसरी जाति में बिवाह करसक्ते थे मनूजीने यह कहा है कि पहिले द्विजों को अपनी २ वर्ण की स्त्री से बिवाह करना अच्छा उचित है इच्छा और कामना के कारण द्विजों को यह स्त्रियां। जो नीचे लिखी हैं श्रेष्ठ हैं। अर्थात् मनुजी कहते हैं कि शूद्रकी एक शूद्रा स्त्री वैश्य की शूद्रा और वैश्या दो स्त्री क्षत्री की शूद्रा वैश्या और क्षत्रिया तीन स्त्रियां और ब्राह्मणकी शूद्रा वैश्या क्षत्रिया और ब्राह्मणी चारस्त्रियां होसक्ती हैं॥ मन्वाध्याय ३ श्लोक १२,१३,१४,१५॥

मनूजीने यहभी लिखा है कि ब्राह्मण और क्षत्रिय को आपत्ति काल में भी शूद्रसे बिवाह नहीं करना चाहिये ऐसा करने से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सन्तान सहित शूद्र होजावेंगे। सिवाय इस के और कोई आज्ञा धर्मशास्त्र की इस विषय में नहीं हैं केवल इतना और है कि गोत्र में बिवाह नहीं होसक्ता और न ऐसी स्त्री से बिवाह होसक्ता है कि जिस के घराने से पहिले से सम्बन्ध हो। मनुजीने यह कहा है कि जो माता की सपिण्ड और पिता की सगोत्र और सपिण्ड न हो वह स्त्री द्विजों के बिवाह करने योग्य है। मन्वाध्याय ३ श्लोक ५ परन्तु बर्त्तमान समय में तौ न केवल एक जाति का दूसरी जाति में किन्तु एक जातिके आवान्तर शाखाओं में भी बिवाह का निषेधहै-जिसका परिणाम यह है कि बहुत से लोगों में कन्या के पिताओं को वरवालों को बहुत सा द्रव्य देना पड़ता है बहुत से लोगों

में कन्या बध इसी कारण प्रचलित हुआ और बहुत से लोगों की जाति बलहीन होती चली जाती हैं वा उस के लोगों की संख्या घटती जाती है यह रिवाज यहां तक बढ़ा है कि मथुरा के चतुर्वेदी अर्थात् चौबों में बदलेका रिवाज जारहुआ अर्थात् जब एक मनुष्य किसी स्त्री से बिवाह करता है तो वहइस प्रतिज्ञापर करता है कि वह अपने घराने में से एक लड़की अपनी स्त्री के घराने के किसी लड़के को देगा—और यह प्रतिज्ञा दूसरी तीसरी पीढ़ीतक रहती है। इसी कारण बहुत से चौबे जिनके घर में लड़कियां नहीं होतीं क्वारे रहते हैं किसी २ जातिमें यह भी दस्तूर है कि दूसरी जाति से लड़कियां लेलेते हैं परन्तु अपनी लड़कियां देते नहीं हैं इसका परिणाम यह हुआ है कि बंगाल के ब्राह्मणों में एक २ पुरुष के दो स्त्रियों से लगाकर १०८ स्त्रियां तक होती हैं यथा ५४४ आदमियों में से २४५ के यहां एक से अधिक स्त्रियां थीं उनमें से एक लड़के के जिस की अवस्था १२ वर्ष कीथी दो स्त्रियां थीं एक मनुष्य के ३२ स्त्रियांथीं और इन में केवल मूर्ख और अज्ञान लोग नहीं किन्तु पढ़े लिखे और सभ्यमनुष्य भी हैं-बिचारणीय बात है कि जिन लोगों में ऐसा रिवाज होवै और उन की स्त्रियां कैसे सुखी हो सकी हैं यदि वे बदचलन नहों तो यह हिन्दू धर्म प्रभाव है रिवाज का नहीं। इस समय यह बात सर्वथा असम्भव है कि भिन्न २ जाति के लोग परस्पर बिवाह करैं। परन्तु एक जातिकी उन आवान्तर शाखों में जो केवल देश भेद से पैदा होगई हैं उनमें परस्पर बिवाह की रस्म जारी होना निष्फल न होगा। और न ऐसा करना धर्म्मशास्त्र की आज्ञा के प्रतिकूल होगा। किन्तु उससे बहुत से हानि और बहुत से व्यर्थ व्यय कम होजायँगे। मुम्बईके कोई २ नागर ब्राह्मणोंकी शाखाओं में कि जिनमें रोटी व्यवहार था अब बेटीव्यवहार होने लगाहै॥

बहुत से लोग बिवाहके समय द्रव्य माँगतेहैं। कोई लोगोंमें

यह रिवाज ऐसी दृढ़ता पकड़ गया है कि उस से लड़कियों के पिताओंको बड़ाक्लेशहोताहै। बहुधा लड़केकीओरके लोग लड़की को बिदा कराने के समय रस्म पूरी हो जाने पर भी रुपया लेये बिना प्रसन्न नहीं होते। और लड़की के पिताको या तो ऋणलेना पड़ताहै वा धोके देकर लूटसे बचना पड़ताहै। मेरे एक मित्रने एक अत्यन्त शोक की भरीहुई बात ब्राह्मणों की एक शाखा की बर्णन करी और वह यह थी कि एक लड़की के विवाह की सम्पूर्ण रस्में पूरी हो चुकी थीं परन्तु उसके पिता के पास उतना द्रव्य नहीं था जो लड़के के पिता को देना ठहराथा इसलिये लड़के के पिताने लड़की को बिदा कराने से इन्कारकिया। और लड़की वाले ने लाचार होकर रात के समय अपने घरकी दीवार में छिद्र करके और अपना सब माल असबाब छुपाकर यह प्रकट किया कि मेरे घरमें सेंध कुमन लगगया और इस बहाने से बचा। कोई लोगों में यह दस्तूरहै कि लड़की के पिता उसको ऐसे लोगोंके हाथ कि जो मृत्युके निकट पहुंच चुकेहैं वा जिनका क्वारा रहनाही अच्छा है बिवाह के नाम से बेचदेते हैं मनु जीने ऐसे कर्म को सर्वथा मने किया है और उन्होंने यह लिखा है कि बुद्धिमान् पिताको उचितहै कि थोड़ा साभी शुल्क लड़की का न ले क्योंकि लोभ से शुल्क को लेने वाला अपनी सन्तान का बेचनेवाला कहा जाता है। जो नातेदार मोह लालच और अज्ञानसे स्त्री के धन वा सवारी वा कपड़े पर निर्बाह करते हैं वह पापी नरक को जाते हैं। कोई आचार्यों ने यह कहा है कि आर्ष बिवाह में एक बैल और एक गाय का लड़की वाले को शुल्क के तौर पर लेना उचित है परन्तु यह ठीक नहीं है क्योंकि शुल्क थोड़ा हो वा बहुतहो वह सन्तान का बेचनाहीहै --मन्वाध्याय ३ श्लोक ५१।, ५२।५३॥

बहुधा लोगोंकी यह राय लड़कीवालेके ऐसे द्रव्य लेनेकेबिरुद्ध है। परन्तु कोई लोग अन्धे बनकर लोभसे अपनी लड़कियों को कुंए में डालदेते हैं उनका समस्त जीवन व्यर्थ होजाता है किसी

समय ऐसे मामले अदालतों में पहुँचते हैं वहां पर यह बहस होता है कि ऐसा बिवाह जो द्रव्य लेकर किया जावै योग्य है वा नहीं—चीफ़ कोर्ट पंजाब ने जिस के रूबरू ऐसा मामला पेश हुआ यह न्याय किया कि यद्यपि पंजाब का रिवाज यह है कि माता पिता अपने बच्चों का विवाह जैसा उचित जाने करें। परंतु कानून का अभिप्राय ऐसा अधिकार देनेसे यहहै कि नाबालिगका लाभहोवैइसलिये जब कि ऐसे ठहरावके अनुसार माता पिता नाबालिगके वली की सम्मति किसी बिवाहकी बाबत किसी बुरी रीति से हासिल ली जावे तो ऐसे कार्य्य जो नाबालिग के लाभको दूर करके उसके वलीके लाभकारकहों यद्यपि किये जाते हैं परन्तु वह ठीक नहीं है—और अदालतों की यह राय नहीं है। हाई कोर्ट इलाहाबादने एक मुकद्दमे में कि जहां एक बापने अपनी लड़की का बिवाह एक बृद्ध और रोगी मनुष्य के साथ द्रव्य लेकर करना चाहाथा और उस लड़की के अन्य नातेदारों ने उसके बिवाह को रोकना चाहा यह न्याय किया कि यद्यपि पिता का काम बुरा है और हम लड़की की दशापर शोक करते हैं परन्तु लड़की का बिवाह से बचाव नहीं होसक्ता। इसी प्रकार मन्दरास में एक मुकद्दमा हुआ कि जहां एक लड़की की माता ने उसके पिताकी आज्ञा और प्रसन्नता के बिना और जब कि वह घर नहीं था उसका बिवाह एक वृद्ध आदमी से करदिया पिताने उस बिवाहको स्वीकार नहीं किया परन्तु अदालत ने कहा कि ऐसा बिवाह योग्य है। यह सब हालतें ऐसी हैं कि यदि इन में सर्कार कानून की राहसे ऐसे बुरे मुआहिदों को रोकै तो हिन्दुओं के धर्म के सर्वथा अनुसार होगा—यदि अदालत दीवानी नाबालिग और उसकी जायदाद की वली बनाई जाती हैं तो क्या कारण है कि वह धनाढ्य नाबालिग ही की वली क्यों बनाई जावे न कि उन नाबालिगों की जिनके पास जायदाद न हो—। कानून बनाने वालोंको

उचित है कि हरएक मनुष्य की रक्षाकरै। हजारों लड़कियां जो इस समय अपने माता पिता के लालच वा अज्ञान के कारण ज़बरदस्ती ऐसे लोगों के साथ ब्याही जाती हैं जो उनके पति होने के योग्य नहीं हैं उनपर सर्कार दया करै। धर्म और रिवाज दोनों ऐसी रीतिके बिरुद्ध हैं और यह उत्तम होगा कि नाबालिग़ के कानून के साथ एक दफ़ै नियत कीजावे कि यदि किसी लड़की के माता पिता उसका बिवाह किसी मनुष्य के साथ द्रव्य लेकरकरैं और वह मनुष्य उसका पति होनेके योग्य नहो तो कोई नातेदार उस लड़की का अदालत दीवानी से प्रार्थना करै कि ऐसा बिवाह जबतक कि अदालत अपना बिश्वास न करले रोक दिया जावै और वह रुपया जो लड़के वा लड़की का पिता दूसरे सम्बंधी से ले वह लड़की का माल होगा-इस से वह लूट जो अब कोई २ बिवाह में होती है कुछ बन्द होजावैगी-। उन जातियों में जहां पर आवान्तर भेद बहुत हो गये हैं और क्वारी लड़कियां बहुत हैं या बदले का रिवाज है या रुपया लिया जाताहै यह होना चाहिये कि जहां रोटी व्यवहार है वहां बेटी व्यवहार नियत किया जावै और अब मुम्बई के नागर ब्राह्मणों के आवान्तर भेदों में यह व्यवहार जारी हो गया है ॥

तृतीय प्रकरण ॥

हिन्दू बिधवाओं की दशा ॥

अब बाल बिवाह का एक और बुरा और भयानक परिणाम सुनिये। वह यह है कि हिन्दुओं में स्त्री का बिधवा होना मानो उसका और उसके सब कुल का जीवन कड़ुआहोनाहै। सन् १८८१ ईसवी के जन संख्या में आठ करोड़ सोलह लाख स्त्रियों मेंसे एककरोड़ इकसठ लाख बिधवा थीं। और उनमें से तिरेसठ हजार एक बर्ष और दश बर्ष की अवस्था की एक लाख चौहत्तर

हजार १० दशबर्ष और चौदह बर्षकी अवस्थाकी थीं अर्थात् अनुमान २ 1/3 लाख स्त्रियां ऐसी २ अवस्था में बिधवा होगई थीं कि जिस में और देशों में वे विद्यालयों में शिक्षा पाती हैं वा अपने माता पिता की गोद में खेलतीहैं ब्राह्मणों में सबसे अधिक बिधवा पाई गई हैं और इस जातिमें सौमें से इकत्तीस बिधवा पाई गई हैं बिरुद्ध इस के मुसल्मानों में एक हजार स्त्रियोंमें से केवल अस्सी, ईसाईयों में ४७ जैनियों में ६५. पारसियों में ७४ और ब्रह्म समाज के लोगों में अनुमान ४८ विधवा थीं। हिन्दुओं के लियेही यह विपत्तिहै कि उनके यहां बिधवा स्त्रियों की संख्या इतनी अधिकहै। बहुत से योग्य और दयालू मनुष्यों ने यह सिद्ध कियाहै कि हिन्दुओं के धर्म्म में यह नियम नहीं है कि बिधवा स्त्रियां अपनी इच्छा के बिरुद्ध दूसरे बिवाहसे रोकदी जावैं और वे वेदों स्मृतियों इतिहासों और पुराणों का प्रमाण अपनी रायकी पुष्टिमें देते हैं। यजुर्वेदके तैत्तिरेय आरण्यक छठे प्रपाठक चौदहवें मन्त्रमें लिखा है कि हे स्त्री तू जो इस अपने मृतक पतिकेपास पड़ीहै उठ और जीवित मनुष्यों के उससमूह में जो तेरे पास यहां मौजूद है आऔर किसी पुरुषकी जो विधवा से विवाह करना चाहै स्त्री हो। यही श्लोक॥ आश्वलायन और बौद्धायन में भी पाया जाता है। इस को डाक्टर बूलर साहिब ने निकाला है और ये शब्द एक अग्निहोत्री ब्राह्मण की स्त्री से कहे गये हैं कि जो अपने पति के मृतक शरीर के साथ अपना शोक प्रकट करने को पडी थी। सूत्रमें यह लिखा है कि कोई समीपी नातेदार स्त्री का उस के पास जाकर यह मन्त्र पढ़ै और उसको दाहिने हाथ से उठाकर उसके नातेदारों के समूह में लेआवै। ऐत्तिरेय ब्राह्मण में यह लिखा है कि एक पति के बहुत सी स्त्रियां होसक्ती हैं। परन्तु एकही समय में एक स्त्री के बहुत से पति नहीं होसक्ते। ऐत्तिरेय ब्राह्मण पञ्चक ३ खण्ड २२। और ऋग्वेद में लिखा है कि तेरा पहिला पति

चन्द्रमाथा दूसरा गन्धर्व था तीसरा अग्निथा चौथा मनुष्य होगा। ऋग्वेद अष्टक ८। इसी प्रकार अथर्व वेद में लिखा है कि यदि स्त्री के दश पतिभी होचुके हों और वे ब्राह्मण न हों तो यदि फिर ब्राह्मण उससे बिवाह करै तो वह उसका पति होता है। अथर्व वेद अध्याय ५ काण्ड ७ मन्त्र ८ ऋग्वेद में भी विधवा के दूसरे पतिका स्पष्ट वर्णन है। और शब्द "दिधिषु" और "परावरा" स्पष्ट करते हैं कि बिधवा बिवाह प्रचलित था। अथर्व वेद के नवें अध्याय पांचवें प्रपाठकमन्त्र २७। २८। २९। में यह लिखाहै कि वह स्त्री जो एक पति के पश्चात् दूसरे पति से बिवाह करै तो यदि वे दोनों अज पञ्चोदन दान करैं तो अलग नहीं होसक्ते। ऐसा दूसरा पति उस स्त्री के साथ जिसका दूसरा बिवाह हुआहो स्वर्गको यदि वह अज पञ्चोदन दान करैं और सूर्य्य को आहुति दे जाता है। और ऐसे स्त्री पुरुष एक गाय और एक बैल और बिछौना और कपड़े सोने कादान करने से स्वर्ग को जाते हैं। स्मृति कारों का इस बिषय में यह वाक्य है कि अपने पतिकी छोड़ी हुई वा बिधवा अपनी इच्छा से फिर दूसरे की स्त्री होकर जिस पुत्रको उत्पन्न करै उसको (मनु) पौनर्भव कहते हैं वह स्त्री यदि अपने पहिले पति के पास न गई हो और फिर लौटकर आवे तो वह उसी पहिले पति के साथ फिर बिवाह के योग्य होती है। मन्वाध्याय ९ श्लोक १७५। १७६॥

वशिष्ठ स्मृति में यह लिखाहै कि यदि किसी ब्याहीहुई लड़कीका जिसका बिवाह केवल मन्त्रों करके हुआहो और वह अपने पति के पास न गई हो पति मरजावै तो वह दूसरे को ब्याही जाने के योग्यहै। वशिष्ठ स्मृति श्लोक १७॥

प्रजापति स्मृतिमें यह लिखाहै कि यदि कोई लड़की विधवा होजावै वा उसका पति उसको हठधर्म्मीसे निकालदे तो उससे दूसरा मनुष्य बिवाह करसक्ता है। और नारद स्मृति में लिखा

है कि चाहै बिवाहकी सम्पूर्ण रस्म पूरी हो गई हो यदि स्त्री अपने पति के पास न गई होतो उसका पुनर्बिवाह होसक्ता है । वह कुँवारी कन्याके सदृशहै और मानो उसका बिवाह हुआही नहीं कात्यायनि स्मृति में यह लिखाहै कि यदि बिवाह के पश्चात् स्त्रीका पति मरजावै वा चला जावै तो उसका बिवाह छमहीने पश्चात् होसक्ताहै। और कोई लोगोंका यहभी वाक्य है कि पांच आपत्तियों में मनुपराशरने स्त्रियोंकेलिये दूसरा पतिकरना उचित रक्खा है । प्रथम जब पति नष्ट होजावे अर्थात् उसकी सुधभी न मिले कि कहां गया दूसरे जब वहमरजावै तीसरे जब वह संन्यासी होजावै वा नपुंसकहो वा पतित होजावे अर्थात् अपने धर्म्म से विमुखहोजावै । पाराशर स्मृति अध्याय४ श्लोक ३०-और मनुने यहलिखा है कि ब्राह्मणी यदि सन्तान वाली होवै तो आठ वर्ष तक और न होवै तो चारबर्ष तक क्षत्रियकी स्त्री ६ वर्ष तक व ३ बर्षतक वैश्यकी स्त्री ४ वा २ बर्षतक अपने पति की प्रतिक्षा करे अर्थात् राह देखैं और यदि इससमय में उसकी सुध न मिलै तो वह दूसरा बिवाह करलें । निदान वेदों और स्मृतिकारों की इस बिषयमें तो अवश्यही सम्मति है कि वह लड़की जो अपने पति के साथ समागम होने से पहिले बिधवा होजावै दूसरा बिवाह कर सक्ती है ।

महाभारत में यह लिखा है कि अर्जुन ने नाग जाति की एकबिधवा से बिवाह किया । और रामायण में सुग्रीव ने बालि की स्त्री तारा से बिवाह किया । पद्मपुराण से पाया जाताहै कि काशी के एक राजाकी बेटीथी कि जिसके बीस बिवाह हुए और उसपर यह विपत्ति पड़ी थी कि बिवाह के पूरे होनेपर तुरन्तही पति उसका मरजाता था । तथाच राजा ने ब्राह्मणों की सम्मति से उस लड़की का जब २ पति मरा तब तब बिवाह किया। बर्त्तमान समय में भी एक इतिहास दक्षिण में प्रसिद्ध है । वह यह है कि "परशुराम पन्थ भाउ पटवारधन" जो मरहटों का

बड़ा सरदार था और लार्ड कार्नवेलिस के साथ टीपू सुल्तान से लड़ा था। उसकी एक बेटी दुर्गाबाई थी कि जिसका बिवाह अनुमान ९ बर्ष की अवस्था में होगया था। बिवाह की रस्में होरही थीं कि उसकापति मरगया इसका उस लड़कीके पिता को इतना शोक हुआ कि उसने अपने अधिकार को छोड़कर संन्यासी होना चाहा। परन्तु महाराजा पेशवा ने जो उसके शुभगुणों से ज्ञात थे उसकी शान्ति की और संतुष्ट किया और धीरज बँधाया। और उस मनुष्य से जो शंकराचार्य की गद्दीपर था पूंछा कि इस सरदार की लड़की का दूसरा बिवाह होसक्ता है वा नहीं। शंकराचार्य के प्रतिनिधि ने कोई सम्मति नहीं दी फिर पेशवा ने बनारस के पण्डितों को लिखा और सैकड़ों पण्डितों ने अपने हस्ताक्षर करके एक व्यवस्था इस आशय का दिया कि इस बातका बिचार करके कि लड़की की अवस्था बहुत छोटी है और शास्त्र में ऐसी लड़कियों के पुनर्बिवाह की मनाई नहीं है इसका बिवाहहोना योग्य और उचित है। परन्तु परशुराम पन्थ की स्त्री को पूना के पंडितों ने बहका लिया और बनारस के पण्डितों के व्यवस्था पर अनुवर्त्तन न हो सका। यह इतिहास मैंने अपने मित्र मिस्टर दयाराम गड्डूमल की पुस्तक सोशेलरिफार्म के पृष्ठ ३३५। ३३६ से नकल किया है। और वे लिखते हैं कि मैं ने इस इतिहास को उनपत्रों से जो उस घराने में उपस्थित है देखकर लिखा है। और उसकी पुष्टि पूनाके बहुतसे बृद्ध मनुष्योंसे होतीहै॥

धर्म शास्त्र में जो अनुशासन कि बिधवा के पुनर्बिवाह न होने के बिषय में है वे येहैं कि पतिव्रता स्त्री को उचित है कि अच्छे कन्दमूल और फलों से अपने शरीर को कृष और दुर्बल करे। अपने पति के मरण के पश्चात् दूसरे पुरुष का नाम भी न ले। पतिब्रता स्त्रियों के जो धर्म हैं उनको करै बिधवा स्त्री अपने मरणान्त दयावती और नियम को वर्त्ततीहुई ब्रह्मचर्य से

रहै। बाल्यावस्था सेही जिन्होंने ब्रह्मचर्य धारण किया है अर्थात् बिवाह नहीं किया ऐसे सहस्रों ब्राह्मण बिना सन्तान के भी स्वर्ग को गये हैं। इसलिये वह स्त्री जिसके आचरण शुद्ध हैं अपने पति के पश्चात् संतान न होने परभी यदि ब्रह्मचर्य को धारण करैं तो वह उन ब्राह्मणों के सदृश स्वर्ग में जायगी। वह स्त्री जो सन्तान की इच्छासे दूसरे पुरुषके पासजाती है उसको लोक बुरा कहते हैं। वह अपने पतिके साथ स्वर्गमें नहीं जाती। दूसरे पुरुष से पैदा किये हुए और दूसरी स्त्री से उत्पन्न हुई सन्तान स्त्री और पुरुष दोनों की नहीं होती और अच्छी स्त्रियों को दूसरा पुरुष किसी जगह विधान नहीं किया है (मनुस्मृति अध्याय ५ श्लोक १५७ से लेकर १६२ तक) यह भी कहा है कि दायभाग कन्यादान गोदान का प्रबन्ध यह तीनों काम केवल एकही बार होसक्ते हैं इससे साधु जनों के यह तीन एकबारही होते हैं वारंवार नहीं (मनुस्मृति अध्याय ६ श्लोक ४७) परन्तु मनुजीने यह भी लिखा है कि विधवा स्त्री देवर से वा सपिण्ड से सन्तान के न होनेकी दशा में नियोग करके संतानोत्पत्ति कराले परन्तु एकसे अधिक न करावै। द्विजों को उचित है कि वे बिधवा स्त्री को सिवाय देवर और सपिण्ड के और किसी के साथ नियोग करनेकी आज्ञा न दें। क्योंकि ऐसा करने से सनातन धर्मका नाश होता है (मनुस्मृति अध्याय ९ श्लोक ५६ । ६० । ६४ ।) यह भी लिखा है कि विद्वान् को उचित है कि कन्या का दान एक बारकरकेदूसरी बार न करै। क्योंकि दूसरे कन्यादान से मनुष्य मिथ्या भाषण का अपराधी होताहै याज्ञवल्क्य स्मृति कहती है कि पतिके जीते वा मरे पर जो स्त्री दूसरे पुरुषके पास नहींजाती वह इसलोकमें यश औरपरलोकमें पार्वती के साथ रहकर सुखको प्राप्तहोती है। याज्ञवल्क्य स्मृति अध्याय १ श्लोक ७५ और बिष्णुस्मृति में लिखा है कि अपने पति के मरण के पश्चात् जो स्त्री पवित्र रहती है उसके चाहे

सन्तान न हो वह बाल ब्रह्मचारी के सदृश स्वर्ग को जाती है विष्णु स्मृति अध्याय २५ श्लोक (१७) और पराशर स्मृति में यह लिखा है कि जो स्त्री पति के मरण के पश्चात् सन्तोष करे तो वह बाल ब्रह्मचारी के सदृश स्वर्ग को जाती है । (पराशर स्मृति अध्याय ४ श्लोक २६) इन स्मृतियों से यह विदित होता है कि विधवा बिवाह कोई दशा में तो उचित रक्खागया है और कोईमें नहीं। परन्तु उसका न होना स्त्री के लिये अच्छा समझा गया है और कारण यह है कि बहुधा ऐसा न होने से स्त्रियों के सदाचार बिगड़नेका भयहै परन्तु पूर्व समयों में बाल्य बिवाह नहीं होता था। और यह बात कि बाल बिधवाओं की क्या दशा होनी चाहिये कभी २ पैदा होती थी। केवल पुराणों में लिखा है कि ऐसी लड़की का जिसका एक बार यथा योग्य नियमानुसार बिवाह होगयाहो दूसरा बिवाह होना। जेष्ठभ्राता को अधिक दाय भाग मिलना अश्वमेध गो मेध। देवरसे पुत्रोत्पत्ति करना और संन्यासी होना कलियुगमें वर्जित हैं। (आदिपुराण) ऐसी लड़की का जो एक बार ब्याही हो पुनर्बिवाह कलियुग में नहीं होना चाहिये (वृहन्नारदीय पुराण) परन्तु इस के बिरुद्ध कलियुग में गोबधभी होता है। चाहे हिन्दू न करते हों। और लोग संन्यासी भी होते हैं। पुराणों की आज्ञा और अनुशासन अर्थात् लोगों का अपने धर्म्म से अज्ञान होना। ब्राह्मणों का अपनी अविद्या वा लालच से लोगों को जैसा चाहा वैसा बहकादेना। और हिन्दुओं का समस्त दुनियां से अलग रहना। जो कारण बाल बिवाहका हुआ वही बिधवाओं की संख्या बढ़नेका हुआ। क्या किसी जाति के लिये यहबात प्रतिष्ठा की है कि उस में चार स्त्रियों में से एक बिधवा हो ?। और इस से अधिक और कौनसी बिपत्ति किसी जाती पर पड़ सक्ती है कि उस में अनुमान पौने दो करोड़ स्त्रियां बिधवा होकर समस्त जीवनभर बिपत्ति में काटैं व्यभिचार करें। यह बात

सम्भव नहीं कि ये तीन करोड़ स्त्रियां मनुके धर्म्म शास्त्रकी आज्ञानुसार अपने शरीर पर कष्ट सहकर अपने धर्म्म में स्थिर रहैं। किन्तु हर एक मनुष्य को बिदित है कि यद्यपि बहुतसी स्त्रियां इन में से अपने धर्म्म पर स्थिर रहती हैं परन्तु बहुतसी नहीं रहती हैं। प्रथम तो बाल बिधवा का शब्दही अशुद्ध है। यह कैसे होसक्ता है कि कोई स्त्री से कि जो ब्रह्मचर्य के नाम से भी ज्ञात न हो ब्रह्मचर्य कराया जावै। क्या हर एक मनुष्य को यह मालूम नहीं कि जितनी छोटी अवस्था में लड़की बिधवा होजाती है उतनाही दुःख और क्लेश उस के माता पिता को और समस्त नातेदारों और परिवार को होता है। क्या उसका मौजूद होनाही हर एक आनन्द के समय को कडुआ नहीं कर देता ?। क्या उसका हर एक नातेदार सदैव काल उसके चाल चलन की ओर दृष्टि नहीं रखता?। क्या हिन्दुओंमें किसीस्त्रीसे यह कहना कि तूराँड़ होजावै बुरीगाली और कोसा नहीं है ?। यदि यह कहा जावै कि स्त्री के कर्मका फल है कि वह बिधवा होगई तो इसका उत्तर यह है कि जब शास्त्र में पूर्वजन्म के संस्कार को मनुष्य इस जन्म के परिश्रम से रोक सक्ता है तो क्या स्त्रीही इस जन्म में अपने कल्याण और भलाई से निराश रक्खी गई है ? जितना कि कवि लोगों ने बिधवाओं की बिपत्ति और दीनता का बर्णन किया है वह अनुचित नहीं है खोजने से ज्ञात हुआ है कि बहुतसे गर्भपात बहुतसी कुलीन स्त्रियों का वेश्या होजाना। बहुतोंका अपने घरमें खोटा चलन होजाना इसी रिवाज के कारण होताहै। यह सत्य है कि बिधवा के नातेदार उस के साथ हर एक प्रकार की दया करते हैं। यदि उस के लड़का नहीं होतातो लड़का गोदरखा देतेहैं। किसी २ जाति में यह भी रिवाज है कि हर एक नातेदार उसके पति के मरण के अगले दिन वा तृतिय दिवस अपने नातेके अनुसार उसके आगे रुपया डालता है। यहभी सत्य है कि सैकड़ों स्त्रियां अपनेमन

को मारकर समस्त जीवनभर जप और तप तीर्थ और व्रतदान और पुण्यमें व्ययकरती हैं। बहुतसी शरदीके ऋतुमें प्रातःकाल नदी में स्नान को जाती हैं। चातुर्मास में एक २ दो २ दिवस बराबर भोजन छोड़ देती हैं। बहुतसी अग्निसे पकाई हुई बस्तु को छोड़कर तरकारी वा फलपरचार मासनिर्वाह करती हैं। यदि बिधवा स्त्री वृद्ध और जानकार हो तो वह अपने गृहकी बड़ी बूढ़ी और सिरधरी मानी जाती है। और उसकी आज्ञा सब मानते हैं। इसलिये जितनी दया उसके साथ होसक्ती है कीजाती हैं। और जितना कष्ट और क्लेश वह सहसक्ती है वह सहती है। परन्तु यह हमारे यहां की स्त्रियोंके साहसका चिह्न है कि उन में से इतनी अधिक स्त्रियां शुद्ध रहती हैं। परन्तु इसके साथ यहभी बिचार करना उचित है कि कितने गर्भपात और भ्रूण हत्या और बालबध और स्त्रियों का घर छोड़कर वेश्या होजाना इसरिवाजके कारणही से उन लोगों में जिनमें बाल बिवाहकी रस्म प्रचालित है होताहै। बहुतसी बिधवा बिवाह नहीं करतीं। और यदि यह रिवाज बन्दभीहोजावेतो भीबहुतसी बिधवाबिवाह करना स्वीकार नहीं करेंगी। परन्तु जहांतक कि बाल बिधवाओं की बिपत्ति और क्लेशका बिचार कियाजाताहै उनकेलियेतो अवश्य यह रिवाज टूटना चाहिये। बड़े बड़े शहरोंके बड़े २ सभ्य घरानोंकी स्त्रियां जो युवा वस्था वा बाल्यावस्था में बिधवा हो जाती हैं उनमें बहुतसी तो सदाचारसे रहती हैं। परन्तु बहुतसी रिवाज और धर्म्म दोनोंको तोड़करकुमार्गमें चलतीहैं। कोई उनमें से प्रकट कुमार्गी होजाती हैं। और अपने समस्त नातेदारोंके सिरपर धूल डालती हैं। जब कोई ऐसी स्त्री निकल भागती है तो उस जगह के लोग कुछ दिनतक तो उसकी दशा पर पश्चात्ताप करते हैं और इस रिवाज को जिससे वह पुनर बिवाह करनेसे बन्द रहा गालियां देते हैं। परन्तु थोड़े दिन के पश्चात् बातआई गई होजाती है। और लोग कहते हैं कि प्रा-

रब्ध में जो लिखा है सो होता है। निदान बाल विधवाओं का पुन र्विवाह न होना ऐसी विपत्ति है कि जो वर्णन करने में नहीं आती यह रिवाज हिन्दुओं पर एक विपत्ति है कि जिसकी पुष्टि उनके शास्त्रोंसे नहीं होती और जिसका दूर करना हरएक हिंदु को अवश्यही उचितहै ॥

अब यह देखना उचित है कि यह रिवाज किन लोगों में प्रचलित है। पश्चिमोत्तर देशके ज़िलोंमें गवर्नमेंटने लिखा है कि दोप्रकार के लोग हैं। अर्थात् एक वह कि जिनमें पञ्चायत नहीं है। दूसरे वह कि जिनमें पञ्चायत है। तथाच वह लोग कि जिनमें पञ्चायतकी रिवाज है वह पञ्चों की सम्मति ले कर विधवाओं का विवाह करदेते हैं परन्तु वह लोग जिन में पञ्चायत का रिवाज नहीं है ऐसे विवाहको उचित और योग्य नहीं बतलाते। सिवाय उन लोगों के जो द्विजहैं वा जिन में पञ्चायत नहीं है और भी बहुतसे लोग हैं कि जो जन्मसे वा किसी और प्रकारसे अपने तईं उत्तम वर्णके लोगोंमें गिनते हैं। औरजब वे द्रव्य पात्र होजाते हैं तो वे अपने निर्धन भाइयों से अलग होकर उनलोगों की रिवाजों को जो उनसे उच्चवर्ण के हैं स्वीकार करते हैं। तथाच जनसंख्यासे यह प्रकट है कि ३ करोड ८० लाख हिन्दुओं में से जो पश्चिमोत्तर देशके ज़िलों में रहते हैं केवल एक करोड़ हिन्दुओंकी राय विधवा विवाह के विरुद्ध है। और उनमें अग्रवाल वैश्य और भाट और भौंहार और ब्राह्मण और चौहान और कायस्थ और नगे और बंगाली और कशमीरि और मारवारी और राजपूत जिनकी गणना एककरोड़ चालीस लाख तीन सौ सैंतालीस हैं विधवा विवाह को उचित नहीं मानते शेषलोग उचित मानते हैं। पंजाबमेंभी यहीप्रकट हुआहै वहांके रहने वालोंमेंसे भी केवल एकतिहाई विधवा विवाह के बिरुद्धहैं ब्रह्माके देशमें कोई मनाई विधवा विवाहकी नहीं है। और देश आसाममें केवल ब्राह्मणोंमें मनाईहै मुल्क मिहरवाड़ा

में यह दस्तूर है कि जब किसी स्त्रीका पति मरजाता है तो उस के आगे एक श्वेत वस्त्र और दूसरारक्त अर्थात् लाल वस्त्र रक्खदिया जाता है और उससे कहाजाता है कि दोनोंमें से एकउठा ले । यदि वह रक्त वस्त्र उठाती है तो उसका यह अभिप्राय है कि पुन विवाह करने को उद्युक्त है और यदि श्वेत उठाती है तो वह उद्युक्त नहीं है। बंगाल में विधवाकी दशा और भी कठिन है । और दक्षिणके कोई २ ज़िलों में उसके बाल पंद्रहवें दिन वा महीनाभरमें काटनेका रिवाज है । यद्यपि यहरिवाज शास्त्रमें नहीं बतलायागया है ॥

परन्तु उसीसमय जब उसका पति मरता है विधवाका शिर मुँडाया जाताहै और यदि राजी न हो तो ज़बरदस्ती मुँड़वाया जाताहै बडेशोककी बातहै ॥

अबयह देखना उचित है कि इसरिवाज में किसरीति से सुधार होसक्ता है । गवर्नमेंन्ट ने ऐक्ट १५ सन १८५६ के अनुसार विधवाओं का विवाह और वह सन्तान जो ऐसे विवाह से उत्पन्न होती है योग्य रक्खी है । परन्तु लोगों ने इस कानून पर अनुवर्त्तन नहीं किया और इस ३५ वर्ष के समय में कि जबसे यह कानून प्रचलित हुआ है १०० विधवाओं का भी विवाह नहीं हुआ । कारण इसका यहहै कि जिन जातों में ऐसे विवाह की रिवाज नहीं है उनपर यह कानून कुछभी नहींव्यापा इसलिये यदि उनमें से कोई विधवा पुनःविवाह पर उद्युक्तहो तो उसकी जाति के लोग उसको जातिसे निकालदेते हैं । और कानून जो उसके विवाह को योग्य और उचित वर्णन करता है एक ओर रहजाताहै । ऐसा प्रकट होताहै कि यह कानून लोगों के विचार और समझके अनुसार न था॥और सिवाय उनलोगों के जो कानून से उद्यम करते हैं बहुत से लोग तो जानते भी नहीं कि कोई ऐसा कानून प्रचलितहै वा नहीं॥यहांतक कि यदि किसी पुराने समय के हिन्दू के साम्हने यह कहा कि सर्कार

अंगरेजी ने ऐसा कानून बनादिया है तो वह यह कहैगा कि अब कलियुग अवश्य आगया। बहुतसी जगहों पर सोसाइटियां अर्थात् सभायें भी इस अभिप्रायसे नियत कीगई हैं कि विधवाओं के विवाह को उन्नति दीजावे। परन्तु उनका उद्योग भी सिद्ध नहीं हुआ प्रथम तो लोग उसका साथही नहीं देते। और जो साथ भी देते हैं तो वह अपने विश्वास पर खुलेहुए नहीं चल सक्ते। क्योंकि उनको अपनी जाति से बाहिर होनेका भय मौत के भयसे भी अधिक है। मौत से तो मनुष्य एकही बार छुट जाता है परंतु जब कोई मनुष्य उसके साथ खाना पीना वा उसको अपने पास बिठाना अच्छा नहीं समझता और उसके समस्त नातेदार भाई बंध बेटी बेटे माता पिता छोड़दें और विवाह और मौत जिन्दगी में शामिल न हो तो इससे अधिक उसके लिये क्या विपत्ति होसक्ती है। इसलिये जबतक कि स्वयम् जातिके लोग अपने नियमों में संशोधन करके उस रिवाज में सुधार न करैं और बालविधवाओं के विवाह को उचित न मानेंगे तबतक कोई आशा सुधारकी नहीं होसक्ती। कोई लोगों का यह विचार है कि गवर्नमेंट अंगरेजी को चाहिये कि वह जाति के लोगों के उस अधिकार में जो उनको जातिसे निकालने का है कानूनी हस्ताक्षेप करै। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ऐसा करना किसी दशामें फलदायक होगा। परंतु जिस नियम पर कि गवर्नमेंट अंगरेजी कानून प्रचलित करतीहै वहऐसा कानून स्वयम् उन लोगों की प्रार्थना के बिना प्रचलित नहीं करसक्ती और यदिकरै तोउससे कानूनका अभिप्राय जातारहेगा वर्त्तमान समय में यह विचार होरहा है कि इस रिवाज में लोग स्वयम् किस प्रकार सुधार करें। कोई कानून किसी मनुष्य को दूसरे के साथ खाने पीने वा विवाह करने को लाचार नहीं करसक्ता और कठिन से कठिन कानून फौजदारी का भी केवल यही कर सक्ताहै कि वह प्रकट अपराधोंको जो किसी जातिकेलोग किसी

मनुष्य को उसजातिसे बाहिर करने में करैं रोकै। इसलिये जब लोग ऐसे कर्म न करैंगे तो कोई कानून उनपर नहीं व्याप सक्ता। मन्दरास हाईकोर्टने एक मुकद्दमे में यह निर्णय किया है कि किसी वर्ण वा जातिका रिवाज जो उस वर्णसे किसी मनुष्य को उसकी जातिसे बाहर करदिया जावै और उसको खबरभी नहो न उसका उज़र सुनाजावै यह योग्य और उचित नहीं है। इसलिये यदि मनुष्य ने जो जाति से बाहर कियागया हो जाति के नियमों के विरुद्ध आचरण न किया हो तो उसको जाति बाहर करना उचित नहीं। और वह उसके हक्क पर असर न करैगा परन्तु इसफैसलेका यह असरनहीं है कि जातिके लोगों को किसीके पास बैठने वा खाने पर लाचारकरै और दबावैं। जबतक कि स्वयम् किसी जातिके लोग किसी रिवाजके बुरे होने के विषय में अपनी राय स्पष्ट और दृढ़ नियत न करैंगे कोई फैसला अदालत का कारगर न होगा। परन्तु श्रेष्ठतरयह है कि वे लोग जो इस रिवाज को बुरा समझते हैं वे बड़े २ पण्डितों की बनारस आदि में सभाकरके व्यवस्था लेवैं और हर एक जाति में उनको भेजैं और उसजाति के लोगों से यह पूछें कि उनको उनके अनुसार चलने में क्या उज़ुर है। इस समय कोई २ सभ्य वर्णों में इसबातका विचार होरहाहै कि बालविधवाओं के पुनर्विवाह का परिणाम यह न होना चाहिये कि विधवा वा उसका पति जाति से बाहर किये जावैं और किसी जगह प्रकट और किसी जगह गुप्त इसमें परिश्रम और उद्यम भी होरहा है। सिवाय इसके और कुछ नहीं होसक्ता कि इस परिश्रम को अधिक किया जावै। पण्डितों से व्यवस्था लेकर विज्ञापन दिया जावै। और लोगों की राय को बाल विधवा के पुनर्विवाह की ओर धीरे २ लाया जावै॥

दूसरा सुधार जो होना चाहिये वह ऐसा है कि जिसको करना सर्कार का काम है और वह किसी का अविरोध करने के

बिनाही होसक्ताहै वरन उससुधारका करना धर्मशास्त्र औरलोगों की मतिके अनुसार और अनुकूलहोगा वहयहहै कि इससमयअदालतों में इसप्रकारके फैसलेहुएहैं कि यदि विधवा अपने पतिकी जायदाद पानेके पश्चात् व्यभिचारिणी होजावै तोवह उसजायदादसे हटाईनहीं जासक्ती। विरुद्ध इसके यदि वह विधवा बदचलनहोनेके बदले पुनर्विवाह करले तो वहहटाई जावैगी। इन फैसलों का परिणाम यह है कि व्यभिचार ऐसे कार्य की अपेक्षा में जिसको सर्कार ने स्वयम् योग्य और उचित माना है अधिक श्रेष्ठ माना गया है। क्योंकि जब हिन्दू विधवा अपने पति की जायदादपर इस हेतुसे मालिक होतीहै कि वहउसको परलोक में अपने व्रत और धर्म्म और पुण्यदान से उपकार करै यदि वह व्याभिचारिणी होगई तोवह पुण्य दान और नियम और धर्म कैसे करसक्ती है। वरन उसकी दशा ऐसी स्त्रियों की अपेक्षा में जो एक मनुष्य के साथ पुनर्विवाह करले बुरी है। क्योंकि उसने तो एक पुरुष के साथ पुनर्विवाह किया और यह तो जिसके साथ चाहारही। और अपने समस्त कुटुम्ब को प्रकट बट्टा लगाया। इन फैसलोंकी लोगोंको खबरनहीं है। नहींतो बहुत बड़ी हानि होती। इसलिये हिन्दुओं को चाहिये कि सर्कार अंग्रेजी से प्रार्थना करके इन फ़ैसलों कोकानून के द्वारा मन्सूख करावैं। दूसरा सुधार कानूनी जो हिन्दुओं के मति के सर्वथा अनुकूलहोगा वहयहहै किबाल विधवाओं के पतिव्रत धर्मभंगकरनेवाले को भी उसी प्रकार दण्ड होना चाहिये जैसा कि सौभाग्य वती स्त्री के पतिव्रत धर्म खण्ड करने वाले को दिया जाता है। हर एक हिन्दू को अपनी पुत्री और पुत्रबधूका व्यभिचारिणी होना ऐसाही दुःखदेता है जैसा कि अपनी स्त्री का--और बहुत सी युवा विधवा जार पुरुषों के फ़न फ़रेबों के कारण बदचलन होजाती हैं। और इस हेतु से कि ऐसे अपराधी को दण्ड नहीं होता वे लोग निडर रहतेहैं अन्य देशों में ऐसेअपराधीका दंड न

पाना इस देश के लिये कोई प्रमाण नहीं है। क्योंकि वहां पर बाल विवाह का रिवाज नहीं है। विरुद्ध इसके बहुतसी रियासतों में ऐसे अपराध का दंड नियत कियागयाहै। इसलिये हिन्दुओंको चाहिये कि सर्कार अंग्रेज़ी से प्रार्थना करके उनके कानून में भी ऐसे अपराध का दंड नियत करावें और ऐसे लोगों को विधवा के रक्षक की नालिश पर दंड होना उचित समझाजावै सिवाय इन संशोधनों के और कोई सुधार नहीं होसक्ता। इस में सन्देह नहीं है कि बाल विधवाओंकी संख्या की वृद्धि इतनी अधिक होनी जैसी कि हिन्दुस्तान में पाई जाती है इस मुल्क पर एक महान् आपत्ति है। और हर एक हिन्दूका धर्म होना चाहिये कि उस विपत्ति को रोकै। परन्तु कानून इस विषय में कुछ नहीं करसक्ता स्वयम् लोगों के अधिकार में उसका दूर करना है। यदि वे पुनर्विवाह को योग्य और उचित न भी मानें तोभी यदि लड़कों के विवाह के लिये पन्द्रह सोलह वर्ष की अवस्था और लड़कियों के विवाह के लिये ११ वा १२ वर्ष की अवस्था नियत करैं तो कमसे कम दो लाख लड़कियों को विधवा होने से बचावैंगे कि जिससे वह हानि जो प्रचलित रिवाज की बदौलत होती हैं एक संगही कम होजावैंगी और ऐसे संशोधन का यहभी परिणाम होगा कि बाल्य विधवाओं की संख्या भी कम होजावैगी। और ऐसा करना केवल धर्मशास्त्र केही अनुकूल नहीं वरन रिवाज और विचारके अनुकूल होगा। सर्कार अंग्रेजी ने अपना काम करदिया अब लोगों के लिये रहा है कि वे अपना धर्म पूरा करैं और वहइस से क्या करसक्ते हैं कि बाल बिवाह को रोकैं जिससे बालऔर युवा विधवाओं की संख्या में कमी होवै और बहुत सी विपत्ति और क्लेश और अपराध और अधर्म जो इससमय इस जाति पर इसरिवाज के कारण होते हैं रुकजावें इसके सिवायएकाध और भी ढंग है जो प्रचलित होना चाहिये। हरएक शहर में

बहुत से सभ्य घरों की विधवा ऐसी हैं कि जो निराहार रह कर लंघन करना और मरजाना तो स्वीकार करती हैं परन्तु भीख मांगना स्वीकार नहीं करती हैं किसी जगह तो लोग गुप्त रीति से उनकी विपत्ति और क्लेशों को दूर करते हैं किसीजगह पर विचारी भूखी मरती हैं। जबकि उनके पास कोई अवलम्बन कालक्षेप करने का नहीं होता तो वे किंतो मेहनत मजदूरी परिश्रम करके कालक्षेप करतीहैं वा व्यभिचारिणी होजाती हैं। लोग हजारों रुपये पुण्य करते हैं गवर्नमेन्ट नेभी डाकखाने के नौकरों के लिये और अपने सिविल सर्विस के नौकरों के लिये फंड नियत किये हैं। उसके ईसाई नौकरों के लिये भी एक फंड नियत कोश किया गया है। परन्तु हिन्दुओं के लिये कोई अवलम्ब ऐसा नहीं है कि जिससे वे अपने आश्रित लोगों के लिये थोड़ा२ द्रव्य जोड़करके सहारा छोड़जावें बहुतसे हिंदुस्तानी नौकर कि जिनके तनख्वाह थोड़ी है जिस समय मरते हैं उनके वारिसों को रोटी भी नहीं मिलता। इसलिये हिन्दुस्तानियों को उचित है कि गवर्नमेन्ट से यह प्रार्थना करें कि वह रस्ता बीमाका जो डाकखाने में नियत किया गयाहै समस्त हिन्दुस्तानी नौकरों के लिये नियत कियाजावे कि जिससे उनके बाल बच्चों के लिये कालक्षेप करनेको सहाराहो। इस के सिवाय गवर्नमेंट से यह भी प्रार्थना होनी उचितहै कि उन हिंदू विधवाओं को जो युवा और विद्या सीखने के योग्यहों वैद्यक और पढ़ाना सीखने का अवसर दिया जावे कि जिससे उनको रोटी पैदा करनेका और अपने कालक्षेप करनेका अवलम्बन प्राप्त होवै। हिंदुओं के लिये इससे अधिक क्या पुण्य होसक्ता है कि वे विपत्ति की मारी की सहायता करें। और हिंदू विधवा से अधिक विपत्ति की मारी और कौन है॥

चतुर्थ प्रकरण अ०—अर्थात् प्रथमोभागः

विवाह का व्यर्थ व्यय

अब इस बातपर ध्यान करना उचित है कि विवाह और २ रस्मों में व्यर्थ व्यय होता है वह हिंदुओं की कितनी हानिऔर विपत्ति का कारण है। धर्मशास्त्र में ऐसी व्यर्थ व्यय की कोई आज्ञा नहीं है। ऋग्वेद में केवल यह लिखा है कि कन्याको उसका पिता उत्तम वस्त्र और सुवर्ण के आभूषण धारण करा-करदे। और मनुजीने कहाहै कि कन्या और वरको अच्छे श्रेष्ठ वस्त्र और आभूषण धारण कराकर और विद्या और शुभाचरण वाले वरको स्वयम् बुलाकर जो कन्या का दान होता है वह मन्वादिने ब्रह्म विवाह का धर्म वर्णन कियाहै।

(मन्वाध्याय ३ श्लोक २७)

महाभारत और रामायण के देखने से भी पाया जाताहै कि वह व्यर्थ व्यय और खेल तमाशे जौनार पौहनाई जोइससमय में लोगों में होतीहैं उससमय में सर्वथा नहीं थीं वाल्मीकीय रामायण में सीताजी के विवाह के जहेज अर्थात् दान का वर्णन इसप्रकार लिखा है कि जब रामचन्द्रजीने धनुष तोड़ा और स्वयम्बर में सीताजीने उनको वरा और दशरथ अपने नातेदारों सहित मिथिला में पहुंचे तो वहांपर वशिष्ठ आदि मुनियों ने विधि पूर्वक विवाह कराया और जब राजा दशरथ बिदाहोने लगे तो राजा जनक ने जहेज़ में कन्या को बहुतसा धन दिया सहस्रों गाय और कम्बल (दुशाले) और रेशमी वस्त्र और हाथी घोड़े और पयादे सजेहुये और सौ १०० दासी और सुवर्ण और मुक्ता इत्यादि नाना प्रकार के दिये। (वाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग ७४ श्लोक २।४।५।६॥

और महाभारत में द्रौपदी के विवाह के दान का वर्णनइस प्रकार लिखा है कि विवाह की रस्म पूरी होनेके पश्चात्राजा

द्रुपद ने पांडवों को बहुतसा धन दिया सौरथ कि जिनके ऊपर सुवर्ण की ध्वजा थीं और प्रत्येकको चार घोड़े सुवर्ण की रस्सियों से खींचते थे सौ हाथी कि सुमेर पर्वत की शिखरों के सदृश ऊंचे थे। सौदासियां कि जो उत्तमवस्त्र और आभूषणों से अलंकृतथीं और राजा ने प्रत्येक पांडव को एक २ लक्ष मुद्रा अर्थात् रुपयें और बहुत से वस्त्र और बहुमूल्य आभूषण दिये (महाभारत आदिपर्व अध्याय २००) साधारण लोगों के विवाह का कोई वर्णन पुराने ग्रन्थों में सिवाय मनुके श्लोक के जोप्रत्येक मनुष्य से सम्बन्ध रखते हैं और कुछ नहीं पाया जाताहै। इसलिये जो लोग कि द्रव्यपात्रहैं वा रानाल्लोगों के लिये तो इतना धन वा आभूषण देना उचित है परन्तु साधारण मनुष्यों के लिये शास्त्र में ऐसे व्यर्थ व्यय की जो अबहोता है आज्ञा कहां है। और सिवास जातिकी रिवाजकेवा अपनी प्रतिष्ठाकी ठसक दिखानेके इसव्यर्थ व्ययका कोई उचित मूलकारणनहीं है। ऐसे समयों पर हिन्दुओंके शिरपर व्यर्थ व्ययकाभूत सवार होजाता है और जितना द्रव्य कि व्ययहोताहै वह बहुतकुछनाइयों और ब्राह्मणों और और मुफ्तखोर लोगोंके हाथ में जाताहै। लड़का वा लड़की के पास किञ्चिन्मात्र भी नहीं रहता यथा दिल्ली में जो रस्म बनियोंमें विवाहकी है यदि उनको तीन श्रेणी नियत कीजावे और सौ विवाहों में से प्रथम श्रेणीके विवाहों २५) द्वितीय श्रेणी की २५) और तृतीय श्रेणी के ५०) रक्खे जावें तोतीनों प्रकारके विवाहों में सिवाय व्यर्थ व्ययकेओ द्रव्य का व्यर्थ नाशहोने के और कुछ नहीं पाया जाता। तृतीयश्रेणी के विवाह कि उसके प्रत्येक मनुष्य करताहै कमसे कम ५००) रुपये की हानि होती है। अर्थात् ऐसे विवाह में दोसौ रुपये से कम लड़कीवाले के और दोसौ रुपयेसे कम लड़केवाले के और सौ रुपयेसे कम उनके नातेदारोंके व्यय नहीं होते। दूसरीश्रेणी के विवाह में लड़की वाले और लड़के वाले के पांच२ सौरुपये

और डेढ़ डेढ़ सौ दो दो सौ रुपये उनके नातेदारों के कमसे कम सर्वथा व्यर्थ व्ययमें नाशहोते हैं। सिवाय इसके जो वस्त्र और आभूषण बनाया जाता है वहभी थोड़ेसे दिनोंके पश्चात् किसी कामका नहीं रहता और आधे मूल्यका रहजाताहै इससब व्यर्थ व्ययका परिणाम यहहै कि निर्द्धनमनुष्यके लिये तोविवाह नहीं किंतु विपत्तिहै। और मध्यम श्रेणीके मनुष्यके लिये यदि वे इतनी पुष्कल द्रव्यका आगमनहीं रखताहो कि जिससे वहव्ययको सह सके ऋणलेकर अपने समस्त जीवनभरके लिये बिपत्तिकाधरना है। घर आभूषण और जोकुछ पास होताहै सबचलाजाताहै जायदाद नीलामहोजातीहै बालबच्चे तबाह होजातेहैं। इसलिये यह कहावतसच्चहै कि। "फौजकी अगाड़ी और विवाहकी पिछाड़ी वा जबतक न करै व्याहतबतक बनिया साह"। विवाहकीरस्मों परव्याख्याके साथ वर्णन करना इससमय अवश्यनहीं है किन्तु जितनी रस्में इससमय होती हैं उनमेंसे बहुतसी शास्त्रके अनुकूल नहीं हैं यथा वेश्याका नृत्य। टट्टी। फुलवाड़ी। बरातमें रुपये नोट हुण्डी लुटाना। नाइयों का मालदार होना शास्त्र में कहां है ?। एकछोटीसी बातहै कि जब कन्यादानके पीछेगोदान होताहै तो गौके लिये बेटे वाला एक अशर्फी देताहै और बछिया का दान अलग होताहै उसके दोरुपयेसे पांचरुपयेतक दियेजाते हैं। यह किसी शास्त्रमें कहां लिखा है कि बछियाका दान गौके दानसे पृथक्होवै। यदिहिन्दुओंके विवाहमें इतनाद्रव्य व्ययनहो तोनाइयों और बारियों और रण्डियों और बाजेवालों और नफीरी वालों और फुलवारी बनाने वालों के घरनभरें न वह शिर दर्दी और दुःख और प्रत्येक मनुष्य का आदरभाव और शिष्टाचारि जो ऐसे समयोंपर करनी पड़े। बेटीवाले विचारेकी तो विलक्षण दशाहै कि प्रत्येक मनुष्य उसको लूटने के लिये उद्युक्तहोताहै। चाहै घरमें कुछभी खाने को न मिले बेटी वालेके घर जाकर तो बराती केसर और इलायची और कस्तूरीसेही बात

करतेहैं । किसी के घोड़े केसरघी और बूराही खाते हैं । कोई का खर्च पावसेर इलायची नित्यकाहै । वरन जितना वाहियात हिन्दुओं के विवाहमें होताहै उसका और लोग जितना ठट्ठा उड़ावैं वह सब ठीक है। राजपूत लोगों के वर्ण पश्चिमोत्तर देश निवासियों का वर्णन विवाह और मरियत का जैसा कि मुझसे मेरे मित्र ठाकुर मुकुन्द सिंह साहिब रईस छलेशरने कहे हैं वैसेही सुनिये ॥ ठाकुर साहब वर्णन करते हैं „कि राजपूतके घर लड़की का उत्पन्न होना मानों विपत्ति का सामना सदैव केही लिये है । उसका जीवन कड़ुआ सुख और आराम जाता रहताहै वा हवा होजाताहै मृत्युकी चिन्ता सदैव बनीरहती है। यदि क्लेशोंसे विचारी बचभीरही और विवाह के योग्य होगई उसी समय से और २ क्लेश ऋण लेने के उत्पन्न हुए। साहूकारों और व्यौहरों के घर घी के दीपक प्रज्वलित हुए जायदाद स्थावर और जंगम गिरवी होने लगीं और बिकनेलगीं नेगियों के घर आनन्द हुए। और नेगी बर ढूँढने के लिये घरसे निकले। उनको न किसी घराने की प्रतिष्ठाका ध्यान है न लड़की का बिचार है न बरकासोच है किन्तु हर घड़ी और हर क्षण आपमधाप का ही ध्यान बनारहता है। जहां से मुट्ठी गरमहुई बिधिलगादी । बहुधा विना किसी पूछ गछके केवल नेगियोंके भरोसे परही बिवाह की तिथिभी नियत होगई । देखो तो अभीतक दोनों ओर से प्रत्येक मनुष्य भीतरे भेद भाव से सर्वथा जानकार नहीं हैं । नेगी लोग जो बहुधा ब्राह्मण भाट और नाई की जाति में से होते हैं उन्हींपर सर्वथा भरोसाहै जो चाहैं सो करैं चाहैं डुबाकर रसातल को पहुँचादें और चाहैं मेरु की शिखर पर पहुँचादें । न लड़के वाले को ज्ञात है कि लड़की बड़ी है वा नहीं काणी है वा अन्धी है गूंगी है वा बहरी है टोंटीहै वा लँगड़ी हाड़ की खरीहै वा नहीं। और इसीप्रकार लड़की वाले की व्यवस्था है । अब सुनिये बरात की तैयारी

हुई भाई बन्धु नातेदारों को नौता भेजागया वे एक दो दिवस पहिले लड़के वाले के घर आपहुँचे। बहुधा मनुष्य कि जिनके घोड़ोंने सिवाय बरातों के कभीदाने का नामभी नहीं देखा वही घोड़े और बैलआदि अबतो सिवायघी और बूरा और स्वच्छबेसन के और किसी बस्तुपरमुँह नहींडालतेहैं। निदानआधा दिवाला तो उसका खर्च खूराक में ही निकाल दिया। जब बरातचली तो लड़कीवाले के गाँव की ओर सीधबांधली और चलदी ॥

न सुध बुधकी ली औरन मंगलकीली-
निकल गाँवसे राह जंगल की ली-

उससमय सजधजचमाचमी धूमधाम बनाव ठनावभी देखने योग्यहोताहै। कोई राजपूत निर्द्धनसे निर्द्धन भी ऐसा नहोगा कि जिसकेपास हुक्कालिये हुए एकनाई नहो। चाहै घोड़ेपर चार जामा नहो रकाब दवाल नहो परन्तु नाई और हुक्का अवश्यही हो। इधर मूँछोंपर तबाही उधर सफर शिरपर सवार चालीस कोसतकका धावाभी एक रात्रिमें तैकरना सुगमहै। जबलड़की वाले के घरपहुँचे तोजातेही खर्च खुराक मनुष्य और चतुष्पदों में समधीकी आधी जान तो लेली। और रहीसही जान जहेजमें लेली। बहुधा राजपूत बर्ण में यह परिपाटी है कि यदि लड़का वा लड़के वाले के मनमान जहेज न दिया जावै तो दूल्हा को समधी के द्वारपर उलटा लटका देते हैं जब तक कि अपना मन न मनालें। तथाच कठरई राजपूतों में जो कमिश्नरी बाँस बरेली में विशेषकर रहते हैं बहुधा ऐसा दस्तूर है। इस के सिवाय बहुधा सभ्यजाति मुल्क हिन्दुस्तानमें गौंड़ेका एक दस्तूर ऐसा जारी है जो वास्तव में मनुष्यों की तबाही का कारण होताहै। गौंड़ेसे अभिप्राय यह है कि लड़की की बिदा के समय जितने भाट और अन्य २ भिक्षुक जाति उपस्थित होते हैं उन को आदिमी पीछे दोआने से लेकर एक रुपया तक दियाजाता है। निदान बिवाह के व्ययकी कोई मर्य्यादा नहीं जि-

तना चाहे प्रत्येक मनुष्य व्यय करता है। और परिणाम उसका यह है कि तबाही और बरबादी प्रत्येक विवाह से होती है। जायदादें नीलाम होजाती हैं और आजन्म पर्य्यन्त दरिद्र छाया रहता है॥

सक्सेने कायस्थोंमें भी दरियाफ्त से मालूम हुआ है कि कोई मर्य्यादा व्ययकी नहीं है। तथाच उनकी रस्म जो लाला ज्वालाप्रसाद वकील अदालत दीवानी जिला अलीगढ़ ने मुझ से बर्णन किया है वह यह है कि सक्सेने कायस्थों में विवाह की रीति यह है नाई बारी भाट वा पुरोहित लड़कों की जन्मपत्रियां लाते हैं प्रत्येक जन्मपत्री की पीठपर स्वयम् लड़के के हाथ से यदि वह लिखने के योग्य हो नहीं तो किसी दूसरे मनुष्य के लेखनी से लिखा दिया जाता है। उसको "अलमश्क़" कहते हैं उस में लड़के का नाम और उस के पिता का नाम और दादा का नाम और यह बात कि सदैव के रहनेवाले किस जगह के हैं और अब किस जगह निवास करते हैं और पहिले क्या उद्यम था और अब क्या उद्यम है और अल्ल दादा के घराने को और ननहाल की और ननहाल का पूर्व और वर्त्तमान का निवास स्थान और उद्यम लिखे जाते हैं। जन्मपत्रियां विधि मिलाने के अर्थ बेटीवाला पण्डितों को देता है। जब वह विधि मिलजाती है उस समय एक आदिमी दिन नियत करने को जाताहै और एक रुपया उसको बिदाई का दिया जाता है और सगाईके लिये दिवस नियत होता है। अब कोई २ मनुष्य उस आदिमीको सिरोपाव और वस्त्र भी देते हैं परन्तु सनातन रस्मवही एक रुपया देने की है सगाई की हमारे यहां तीनि रीति हैं एक जैमा वा जलपान दूसरा तनी गांठ तीसरी सगून जलपान में बहुधा अशरफ़ियां और नक़द रुपया और लड़के के वास्ते ज़ेवर और थाली भेजी जाती है। पांच वा सात नेगी जाते हैं। साअत अर्थात् मुहूर्त के साथ शुभ घड़ी में लड़का चौकपर बिठाया जा-

ताहै और नेगी सामान लड़के के हाथपर रखते हैं और एकबीड़ा पांच पान का लड़के को खिलाया जाताहै । शेष रस्म पूरीहोकर नेगियों को बिदा दीजाती है । जहां तक मेरी दृष्टि गोचर हुआ है कमसे कम तादाद जलपानकी दश ग्यारह रुपये तक और बढ़ती से बढ़ती तादाद पांच अशरफ़ी और दश बीस रुपये नक़द और कण्ठा वा तोड़ा और झुमका और अंगूठी और बाजूबन्द सुवर्ण का और एकथान कमख्वाब का वा काम फुलवारका और थाली चांदी की आधसेर तक की भेजी गई है नेगियों को भी मैंने पान्सौ रुपये तक बिदा देते देखा है । उस समय पुरानी रस्म तो यहथी कि बिरादरी के सरदार इकट्ठे होतेथे और जलपानकी रस्म पूरी होनेके पश्चात् बीड़ा पत्ते में मुँहबन्द बिरादरीके सरदारोंको दिये जाते थे । अब उस के बदले लड्डूबटने लगेहैं और महफील और जौनार आदि होती हैं । तनीगांठ मे यह रस्म है कि एकनाई एक रुपया नक़द लेकर जाताहै लड़के के बन्द में गिरह गांठ लगाकर एक पान लड़के को खिलाते हैं रुपया देते हैं नाई को खाना खिलाकर १) विदाई का देदेते हैं ।

सगून—लड़की वाले की ओरसे कुछ नहीं जाताहै केवल आदिमी जाताहै लड़के का पिता १) नाई को देताहै सगाई हो जाती है । परन्तु इस सूरत में लग्न के साथ जलपान का सामानभी भेजाजाता है ।

तत् पश्चात् चिट्ठी पीली देवनागरी अक्षरों में लिखी हुई भेजी जाती है जिसमें साअत लग्न और बिवाह नियतकर देते हैं जो मनुष्य चिट्ठी लेकर जाता है उसको १) नक़द विदाई में देनेका दस्तूर पूर्वकाल से है परन्तु अब कोई साहिब आदिमी को कपड़े और कड़े देते हैं ।

उसके पीछे लग्न लड़की वाले की ओर से जाती है । दस्तूर यह है कि लग्न संस्कृत भाषा में लिखी जाती हैं । और खत अर्थात् पत्र फ़ारसी रंगीन मज़मून में लिखा जाताहै

सामान सामान्य अर्थात् मामूली दो जोड़ा जनाना और नक़दी ५१) से लेकर १०००) एक हजार ग्यारहसौ तक और जोड़ों की तादाद भी ग्यारहतक होजाती है। लड़के के वास्ते तोड़ा वा कण्ठा पहुंची बाजूबन्द अंगूठी सोनेकी और राजसी वस्त्र जिसमें तारकसी का कपड़ा और कुरता के वास्ते जर्द वा सुनहरा जैसा कि जिसके यहां रिवाजहो पायजामा गुलबदन का और पगड़ी पेटी और पटका और नायन बारिन के वास्ते दो जोड़े नौछावरके और कुछ चांदी के आभूषण और सोने चांदी की सुपारियां और एक गोला वा नारियल चांदी सोने का मढ़ाहुआ भेजा जाता है और लग्न की चिट्ठी संस्कृत में होती है उसमें १) नक़द अन्दर होता है गरीब आदिमी केवल १) लग्नपर भेजताहै। लड़के वाले के ओरसे महफिल दिखाना बिरादरी और नेगियों को विदाई में कपड़े और घोड़े और पालकी और ऊंट इत्यादि दिये जातेहैं। और जितना सामान आताहै उसमें से सौ में से १०) के हिसाबसे विदाई दी जाती है यह रुपया उस सामान के अलावा होताहै जो अन्तिम दिवस विदा बरातके कुल जहेजका हिसाब होकर नेगियानको धक का रुपया दिया जाताहै। उस दश रुपये सैकड़े में से चौथ लड़के वाले के नेगी लेतेहैं।

इसके पीछे लड़केवाले की ओर से एकनाई वास्ते रस्म डोरा नापनेके जाताहै। जिसका अभिप्राय यहहै कि लडकी नापकी जावै कि जिससे उसके अनुसार कपडे तैयार कियेजावें इसनाईको एक रुपया विदाई का दिया जाताहै। अबकोई लोग उसको भी कपड़ा पहनाते हैं। उसके पीछे लड़के और लड़की दोनों के यहां मागर और ताई होतीहै तैल चढ़ाया जाताहै दोनों ओरसे रस्म मढ़वा की होतीहै मढ़वे के नीचे भात पहना जाता है लडके और लड़की की ननहालसे जो सामान आताहै वहलिया जाता है। अब बरात लड़की के यहां पहुंचगई जनवासे

में बरात पहुँचने के पीछे पहिले रस्म बरोने की होती है अर्था-त् एक घड़ा मिट्टी के में धान बन्दहोकर उस के ऊपर गोबर के मांड़ने किये जाते हैं १) नक़द और ५ अङ्गोछे आध २ गज़के भेजेजाते हैं। ढोल ताशे साथजाते हैं। लड़कीवाला उस रुपये को फेरदेताहै और पांचों आदिमियोंको ५परोसे देताहै। और =)॥ पैसे जो लड़के वाले की ओर से जाते हैं वह रखलेता है॥

उसके पीछे बरात सजावट कीजाती है रोशनी और फुलवार लेकर समस्त बरात दूल्हासमेत लड़कीवाले के दरवाज़े पर पहुँचती है। वेश्या का नृत्य मार्ग में होता जाता। दरवाज़े अर्थात् द्वारपर वेश्या गालियां गाती हैं जिसकाहक़ उसको मिलता है। उस जगह चौक लगाकर लड़के को बिठाते हैं दोनों ओर के पण्डित उपस्थित होतेहैं लग्नसे आधा सामान उस जगह लड़के को दिया जाताहै और एक कलशा और लोटा उस सामान में अवश्य शामिल होताहै। और घोड़ेके देनेकाभी दस्तूर किंचित् अवश्यही समझा गया है उसके पीछे लड़के का पिता मामूं फूफा और और भी नातेदार जो लड़के से बड़े हैं द्वारपर चढ़ते हैं उनको भेट दी जाती है तत्पश्चात् आतशबाजी आदि छुड़ाई जाती है और दो घोड़े जो काग़ज़ के होते हैं वे लड़की वाले के द्वारपर चढ़ा दिये जाते हैं और वापस अर्थात् पीछे फिर आती है। उसके पीछे गुरु पूजा की रस्म होती है लड़की के वास्ते जो जेवर और वस्त्र आभूषण और सामान चढ़ावा यथा महँदी इत्यादि होता है वह भेजा जाताहै उस के साथ नायन बारिन को जोड़ा और आभूषण लड़के वाला भेजता है और जो स्त्री लड़की के साथ जानेवाली होती है उसके वास्ते जोड़ा और आभूषण भेजा जाता है और वहां पूजन होता है। चादर प्रतिष्ठाई की रस्म उस समय होती है उसके पीछे लड़की वाले की ओर से खाना जिसको पवनछक बोलते हैं आता है। उस में गोजा इत्यादि होते हैं और पान तमाकू सुपारी और शर्बत

आता है रस्म पायशोयी अर्थात् पावांधोई और शर्बत पिलाई की उस समय की जाती हैं उसके पीछे लड़का स्वसुरालय को जाता है द्वार के पास से सास लड़के को गोदमें लेकर अन्दर ले जाती है और गोद लेने के समय सास और और नातेदारों की स्त्रियां लड़के को कुछ देती हैं उस के पीछे लड़का चौकपर बिठाया जाता है और पूजन का आरम्भ होता है। इस पूजन में लड़की का पिता व्यय नहीं करता किन्तु लड़की का मामूं व्यय करता है और भाँवर के समय लड़की एक वस्त्र जिसको खादी बारी कहते हैं अपने मामूं के यहां की पहनतीहै भांवर के पीछे देव पूजन बती मिलानी इत्यादि होता है। दूसरे दिन दो पहर के समय लड़की का पिता आटा दाल इत्यादि सामान रसोई का भेजता है। और लड़के के पिता के प्रबन्ध से रसोंई तैयार होती है। सायंकाल को खाना अर्थात् भोजन लड़की के पिता के घर पर खिलाया जाताहै वह कच्चा खाना होता है। पूर्व काल में चावल शक्कर बेसन का खाना होताथा। अब यह दस्तूर नहीं है। परन्तु मड़वेके नीचे जो कुनवे वाले बैठते हैं उनको थोड़ा २ सामान इस प्रकार का अवश्य परोसा जाता है इसी कारण उस को कच्ची दावत कहते हैं तीसरे दिवस के दो पहर के खाने का प्रबन्ध लड़केवाले के सिपुर्द है अर्थात् वह खाना लड़केवाले को अपनेपाससे खिलानाचाहिये। उसखानेमें मांसमदिरा इत्यादिसब सामान किया जाता है। परन्तु जो लड़कीका पिता अधिक योग्य होताहै तो उस खाने को भी अपने पास से देता है। उस के पीछे कुंवर कलेऊ की रस्म होती है। इसके पीछे लड़के का पिता अपने नातेदारों और भाई बन्धुओं समेत नौतनी को जाताहै। नौतनी के पीछे लड़की जनवासे में बुलाई जाती है। और उपरोहित जी खीर बनाते हैं और लड़के का फूफा लड़की के हाथ से लड़के को और लड़के के हाथसे लड़की को खीर खिलवाता है और चनेकी दाल में रुपया इत्यादि डालकर एक दूसरे

के हाथ में डालेजाते हैं और मुंह दिखलाई की रस्म होतीहै और लड़कावाला बेटीवाले के नाई इत्यादिको वस्त्र आदि देताहै। इस जौनार के पीछे सागर तबदीली की रस्महोती है। अर्थात् लड़की का पिता और नातेदार लड़के के पिता और नातेदारों को शराब अर्थात् मदिरा चांदीके प्याले में वा मिट्टी के प्याले में पिलाते हैं और भेट देतेजाते हैं और नौछावरें होती हैं। इसके पीछे लड़की का पिता पत्र हिलादेता है। इसके पीछे पलंगहोता है जिसमें बिरादरी के भाइयों को आदिमी पीछे एक रुपया दो रुपया दियाजाताहै। और सहन के अन्दर समधियों की मिलनी होती है इस मिलनी की रस्म के पीछे धान बोएजाते हैं। जिसमें लड़का और लड़की पलंगपर बैठेहोते हैं और लड़कीके माता पिता और और नातेदार अपनीस्त्रियोंके साथ गँठजोड़ा करके पलँगके चारों ओर परिक्रमा करते हैं और धान बिखेरते जाते हैं और लड़के से गांठ खुलवाते हैं। और उसको कुछ देतेहैं। इसके पीछे और रस्में गूंथ खुलाई इत्यादि की होतीहैं। और लड़के की रोचना की जाती है। इसके पीछे धूलारी और पनहारीको लड़के वालादेताहै। पलँगकी मिलनीके समय समधियां दुशाला कमर से बांधते हैं और दुशाला और अशर्फी और रुपया भेंटमेंदेतेहैं और दश २ बीस२रुपये नौछावर करतेहैं तथाच वे दुशाले जो कमरसे बँधेहोते हैं भाटोंको और वे रुपये जो नौछावर कियेजातेहैं नेगियोंको दियेजातेहैं और बरात की बिदा के समय गौंड़ा भाटों को बाटाजाताहै सनातन से यह रस्म थी कि सवारुपया भाटोंको दियाजाताथा अबदूसरे लोगों को देखकर यह नई रस्म फी रस्म गौंड़ा।) से एक रुपयातकदेने की जारीहुई है। और पलँगे के समय लड़केवाला लड़की वाले के नातेदारों को और धूलारी और पनिहारी में सौ २ पचास २ रुपया देता है। निदान छोटेसे छोटे दरजे के बिवाह में पांचसौ रुपये। और बड़ेदरजे के बिवाह में आठ हजार

रुपये तक खर्च होता है"। तथाच खोजने से मालूम हुआ है कि इस में बहुतसा रुपया व्यर्थ व्ययहोता है। और नाई बारियों इत्यादि के घरमें जाता है॥

शायद यही कारणहै कि किसी२वर्णमें बेटीके मारनेकी रस्म जारीहुई। उपरोहितजी और पण्डित जी की यहदशा है कि उनको अपने टकेसे ध्यान है। चाहै यजमान के पासहो वा न हो उनको तो नोचनाही और लूटनाही मंज़ूर है। अतएव जबतक कि ऐसी दशापर ध्यान न कियाजावै और उसका सुधार न कियाजावैगा तो वह तबाही जो लोगों में आरही है दिन २ प्रति बढ़ती जावैगी। तथाच राजपूताने के ठाकुरों ने इस विषय में जो सुधार किया है उसकी निसबत हाउस आफलार्ड्स में सेक्रटरी आफसटेट साबिक़ ने यह वर्णन किया है कि उन्हों ने वह उन्नति की है कि जो बर्त्तमान समय में किसी वर्ण ने नहीं की। और उसका परिणाम ऐसा होगा कि जो किसी मनुष्यके ध्यानमें भी नहीं आसक्ता। उनका बर्त्ताव यह है कि यदि आमदनी एक सहस्र रुपये की हो तो दो तिहाई सबसे बड़े दरजे के बिवाह में खर्च होना चाहिये। एकहजार और दश हजार के बीचमें आधा दशहजार और बीसहजार के बीच में एक तिहाई और उससे आगे एक चौथाई से अधिक खर्च न कियाजावै। उन्हों ने टीका इत्यादि की रस्म बिलकुल बन्द करदी है। और भाट इत्यादि को जो रुपया दिया जाताथा उसका प्रमाण नियत कर दिया है। हर रियासत में एक कमेटी अर्थात् समाज नियत कियागया है। कि जिसमें एक सरदार रियासत और एक अफसर अर्थात् अधिकारी रियासत और एक भाट वा राव शामिल किया गया है। और प्रत्येक जागीरदार का यह धर्म है कि वह एक समय पहिले कमेटी को बिवाह इत्यादि की खबरदे कि जिससे कमेटी अपने नियमों को जारी करासकै। इस निमित्तसे कि लड़कीकापिता लड़केवालेसेरुपया

न दे उन्होंने सौरुपयेकी तादाद कमसेकमदरजेके बिवाहकेव्यय-यकेलिये नियतकी है। और इनलोगोंके लिये जो इन नियमों के बिरुद्ध चलते हैं दण्ड रक्खा है। बिवाह की अवस्था लड़कों के लिये १८ बर्ष और लड़कियों के लिये १४ बर्षकी रक्खी है। और कोई मनुष्य जिसकी स्त्री मरजावे और उसका बेटा उपस्थितहो और ४५ बर्ष का होगया हो दूसरा बिवाह नहीं करने पाता। मरयत(मृत्यु)केकार्य्योंके लियेदो तिहाई एकहजार रुपये की आमदनीके लिये एक चौथाई एक हजारसे पांच हजार तक की आमदनीकेलिये $\frac{1}{5}$ पांच हजारसे दश हजारतककी आमदनी के लिये और $\frac{1}{6}$ दश हजारसे अधिककी आमदनीके लिये नियत कियेगयेहैं। इसकापरिणाम यहहुआहै कि चाहै सौमेंसे६० और प्रत्यक्षमें सौमेंसे ३० हालतोंमें नियमों के बिरुद्धअनुवर्त्तनहोताहै और यद्यपि तहकीकात का मर्ग भी विश्वसनीय नहीं है परन्तु फिर भी लोगों के इस बन्दिश के गुणमालूम हैं। और धीरे २ विरुद्धता कम होती जाती है। अकबर बादशाह के समय में भी जो नियमथा वह यहां पर वर्णन करने के योग्य है। उस समय में यह कानून जारी किया गयाथा कि तरुणावस्था से पहिले कोई बिवाह नहो। और केवलमाता पिताकी इच्छा नहीं किन्तु लड़के और लड़की की भी इच्छा अवश्य है। किसी लड़के का बिवाह १६ वर्ष की अवस्था से पहिले और लड़की का १४ वर्ष की अवस्था से पहिले न होने पावे। दो निर्पक्ष मनुष्य बादशाह की ओर से नियत किये जाते थे एक का यह कर्म था कि वह लड़की के माता पिता की प्रतिष्ठा और पदवी को औरदूसरा लड़के के माता पिता की प्रतिष्ठा और पदवी को दरियाफ्तकर के उनके ऊपर उनकी प्रतिष्ठा और पदवी के अनुसार एक मुहर से एक दाम तक टेक्स नियत करता था। और प्रत्येक मनुष्य को चाहै वह किसी वर्ण वा मतका हो वह टेक्स देना पड़ता था और बादशाह ने यह हुक्म सन् १००२ नौरोज को

प्रचलित किया कि किसी का कोई बेटा वा बेटी व्याहा न जावेगा जब तक कि उन में से एक मनुष्य पुलिस के अध्यक्ष को इत्तला न कर दे कि जिससे वह दोनों की अवस्था मालूम कर ले। उसी तारीख में यह भी लिखा है कि १४ वर्ष से पहिले लड़कियों का बिवाह इस कारण मने कियागया है कि बाल बिवाह की औलाद निर्बल होती है। उल्था तारीख बदायूनी पृष्ठा ४। ५ और वैलर साहिबकी तवारीख हिन्दुस्तान जिल्द ४ पृष्ठा १७३॥

किसी २ वर्ण में यथा कायस्थों के किसी २ श्रेणियों में और वैश्यों में इसबिषयमें कुछ सुधार कियागयाहै परन्तु बहुधा सुधार नहीं कियागयाहै और जो सुधार किया गयाहै वह ऐसाहै कि अभीतक समस्त लोगों में प्रचलित नहीं हुआ मेरठ में वैश्यों ने सन् १८९२ ई० में जो सुधार किया है वह यह है कि पैदायश और बिवाह और अन्य मौकों पर जो महफिल होती थी वह सर्वथा बन्द करदी गई बिवाह में जो जौनारहोती थी उसमें खाने के सामग्री की तादाद और तकल्लुफात कम कर दियेगये और रात्रि का खाना बन्द कर दियागया बरात में जो बाग बाड़ी बाजा हाथी घोड़े पालकी स्वाङ्ग इत्यादि चढ़ते थे बहस बन्द कर दिये गये जो बरातें कि बाहर जाती थीं उन में भी खर्च कम कर दिया गया और सवारियों के रातब पर जो झगड़ा होता था उसका प्रमाण नियत कर दिया गया है। इसीप्रकार बिवाह के समय जो रुपया ब्राह्मण इत्यादि को दिया जाता था उसमें बहुत कमी करदी गई है। मौत के व्यय में भी ४०) का प्रथम दिवस और एकादशे में ६०) का व्यय नियत किया गया है। और अयोग्य लेन देन रुपये का और सरेराह गाना और एकस्त्रीके होते दूसरा बिवाह करनाबन्द करदियागया है और इन नियमों के बिरुद्ध आचरण के लिये पंचों के न्याय और निर्णय के अनुसार धर्म्म दंड जिसकी तादाद पांचहजार

रुपये तक होसक्ती है नियत कियागया है । इन नियमों की रक्षाके अर्थ एक कमेटी अर्थात् समाज नियत किया गया है । और मुझको उस कमेटी अर्थात् समाज के कोई २ मेम्बरों से मालूम हुआ है कि इन नियमों के अनुसार बरताव होता है । सक्सेने कायस्थों में भी इस प्रकार का सुधार किया गया है। और बिवाह चार प्रकार के दरजे के नियत किये गये हैं । प्रथम दरजे के बिवाह में लड़केवाले का ४००) और लड़कीवाले का ७००) दूसरे दरजेमें लड़केवालेका २००) और लड़कीवालेका २५०) तीसरे दरजे में लड़के वाले का १००) और लड़की वाले का १२५) और चौथे दरजे में लड़के वाले का ५०) और लड़की वालेका ६२॥) व्यय के लिये नियत किये गये हैं । इन नियमों पर जहां तक मुझको मालूम हुआ है अनुवर्त्तन कियाजाता है और यदि कोई मनुष्य बिरुद्ध आचरण करता है तो उसको दूषण दिया जाता है और साहिबों में बहुधा जगह शराब अर्थात् बारुणी का रिवाज बन्द कर दिया गया हैं । परन्तु अब भी बहुतसी रस्में व्यर्थ हैं । बहुतसी रस्मों में व्यर्थ व्यय होता है । और इनसबमें संशोधन करना प्रत्येक मनुष्यको उचितहै। खत्तारियोंकीरस्में बिवाहकी ऐसीहैं कि जिसमें नाई वा ब्राह्मणके घरमें कमजाताहै ।जो कुछ दियाजाताहै वहबेटी वा बेटेवालेके घर रहताहै । इन लोगों में जहांतक मुझको मालूम हुआहै बिरादरी की जौनार वा बरात वा महफिल इत्त्यादिमें व्यर्थ व्यय नहीं होता किन्तुलोगों में एक मसल मशहूर है कि " खत्तरीके बिवाहमें मोरीभी नहीं भीगती ,, ॥ ब्राह्मणों की रस्में वैश्योंसे बहुत मिलतीहैं । परन्तु उनमें वैश्योंकी अपेक्षा बिवाह में खाने की वस्तु बहुत नष्टहोती है शेष सब वैसीही हैं जो वैश्यों में होतीहैं । उनलोगों से जो अपनी २ बिरादरी में प्रतिष्ठित हैं दरियाफ्त करनेसे मालूमहुआहै कि लोगों को ऐसेव्यय बड़ेभारी मालूम होतेहैं परन्तु बिरादरी के भय से उनका साहसउन

के दूर करनेका नहीं पड़ता—इसलिये जबतक कि प्रत्येक वर्ण के लोग स्वयम् आपस में इनखर्चोंका सुधारनकरैंगे कोई आशा उनके उन्नति की नहीं होसक्ती ॥

इ--अर्थात् द्वितीय भाग--

श्राद्ध और क्रिया कर्म इत्यादि संशोधन--

जोदशा बिवाहके व्ययकीहै वही क्रिया कर्म और श्राद्ध और कारजके खर्चों की भीहै। श्राद्ध का शब्दार्थ यहहै कि जो वस्तु श्रद्धासे दीजावै। विचार करनेकी जगह कि वह सामान जो इस समयमें दियाजाताहै श्रद्धासे कहां दियाजाताहै " शुक्ल यजुर्वेद के २ अध्यायमेंजहां पिण्डदानहोनेका वर्णनहै वहाँ यह लिखाहै कि पिण्डदान करनेवाला अपनी स्त्री की ओर देखकर अपने पितरोंसे यह कहै कि " हे पितरो तुमने हमको गृहस्थ कियाहै हम यहदान तुमको अपनी श्रद्धाके अनुसारदेतेहैं" और वशिष्ठ स्मृतिमें यह लिखाहै कि " श्राद्धमें कर्म करनेवाला बहुत थोड़े ब्राह्मणों को भोजन करावे किन्तु एकही ब्राह्मण को जो वेद पाठीहो और अपने धर्म्मका ज्ञाताहो भोजन करावै। वशिष्ठ स्मृति अध्याय ११ श्लोक २९। मनुजीने श्राद्ध विषयमें यहलिखाहै कि विधि पूर्वक बुद्धिमान् को दानदेने से देनेवाला अपने तईं और लेनेवाले को इसलोक और परलोक में फलका लेने वाला करता है। (मनुस्मृति अध्याय ३श्लोक १४३)श्राद्धमें ऐसे ब्राह्मणको जिसने बहुतवेदकी ऋचा पढ़ीहों वा जिसने वेदकेपारको देखाहो वा शाखा को पूराजानताहो वा ऋत्विजहो वा जिसने वेदको पूरापढ़ाहो यत्नके साथ भोजन करावै। (मन्वाध्याय ३ श्लोक १४५) इनमें से यदि जो कोई ब्राह्मण श्राद्ध में भोजन करायाजावै तो भोजन कराने वालेकीसात पीढ़ी बहुत कालतक प्रसन्नहोतीहैं(मन्वाध्याय ३ श्लोक १४६) ऐसे ब्राह्मण जो बिना पढ़ेहों वा जो वैद्यहों वा देवताओं के

पुजारीहों वा व्यापार वा नौकरी से अपना कालक्षेप करतेहों वा जो श्रुति और स्मृति के अनुसार न चलते हों वा जो गाय भैंसों को पालकर कालक्षेप करते हों वा जो अपना आचार न जानतेहों वा खेती करतेहों ऐसे बुरे कर्मोंके करने वाले ब्राह्मण को श्राद्ध में न बुलायाजावे । बिना पढ़ा ब्राह्मण ऐसाहै जैसा कि घासकी अग्नि सदृश है । इससे उसको दान नदे क्यों कि राख अर्थात् भस्ममें होमनहीं किया जाता । (मनुस्मृतिअध्याय ३ श्लोक १५१ सेलेकर १६८ तक) ॥

यहभी लिखाहै कि जो ब्राह्मण श्राद्धमें बुलायाजावे और जिसके घर श्राद्धहो बुलाने के दिनसे लेकर श्राद्ध के रात्रिदिनभर ब्रह्मचर्यसे रहैं और आवश्यक जपसे अधिकनकरैं । (श्लोक १२८ अध्याय ३) जो ब्राह्मण श्राद्ध में बुलायाजावे यदि वह पूर्ण भोजन नकरै तो वहपापी शूकर योनीको प्राप्तहोताहै(श्लोक १६०) जिनमें क्रोध नहोजो सदैव पवित्ररहतेहों और प्राणीमात्र केदया और हितमें तत्परहों ऐसेलोगोंको श्राद्धमेंबुलाना मानों देवताओंका बुलानाहै।(श्लोक१९२) जिससमयब्राह्मण भोजन करतेहों और उस समय उनके सामने वेदपढ़ै और धर्म्म शास्त्र और इतिहास उनको सुनावे जब ब्राह्मण भोजन करचुकें तो उनसेकहै कि आप यहांही रहिये और ब्राह्मण यजमान को यह कहकर कि स्वधाहो अपनेघरजावें (मनुस्मृतिअध्याय ३)इससे प्रत्यक्ष होगा कि दक्षिणा देना शास्त्रमें कहींनहीं लिखा है केवल ब्राह्मणोंको आदर भावके साथबुलाना और आदर सत्कार और प्रीति पूर्वक भोजन करानालिखाहै।विरुद्धइसकेआजकल तोयह मसला अर्थात् कहावतहै कि जो कुछ यहां दोगे वह तुम्हारे पितरों को वहां मिलैगा-तथाच एक मनुष्य ने पण्डित जीसेपूंछा कि महाराज वहलाला जो मरगये थोड़ीसी अफ़्यून खातेथे यदि आप उतनीही अफ़्यूनभी खावैं तो उनको वहां अफ़्यून मिल जावैगी । परन्तु पण्डितजीने अफ़्यून खानी स्वीकार नकी ॥

निदानजैसीकुछ तबाही और व्यथा बिवाहमें है वैसीही मरियत (मृत्यु) में भी होती है। हिसाब लगानेसे मालूमहुआ कि जिसके १०) की आमदनी है उसके एक मौतमें ५०) खर्च होजाते हैं। देखोतो शास्त्रमें इसकी कोईआज्ञानहींहै। और बड़े और मध्यम श्रेणी के आदमियों में सैकड़ों रुपया बिरादरी की भाजी वाजौनार में खर्च होजाता है। और जैसे बिवाहमें वैसेही क्रिया कर्म में भी नाइयों और ब्राह्मणों और आचार्योंकी बनतीहै दिल्लीमें एक मौतमें छः सातसौ रुपया मध्यम श्रेणीके लोगों में खर्च होना कुछ बड़ीबातनहीं है। विचार करने की जगहहै कि यह समस्त व्यय यदि व्यर्थ नहींहै तो क्याहै ?॥

दान जो किया जाता है वहभी ऐसे मनुष्यों को दियाजाता है जो उसके पाने के अधिकारी और योग्यनहीं हैं। श्रीकृष्ण महाराज भगवद्गीतामें कहते हैं कि सात्विक दान वहहोता है कि जो इसविचारसे दिया जावै कि उसका देना धर्म है। और ऐसे मनुष्य को दियाजावै कि जिससे किसी उपकार की आशा न रक्खीजावै और जो सुन्दर देशकाल में सुपात्र को दियाजावै। जो दान निषिद्ध देश काल में कुपात्र और अयोग्य को दियाजावै वह तमोगुणी अर्थात् तामसी दान कहा जाता है। (भगवद्गीता अध्याय १७ श्लोक २०। २२।)

मनुजीने भी लिखाहै कि धर्मका जाननेवाला आदमी ऐसे ब्राह्मण को जिसके आचरण बिल्ली वा बगुले केसेहैं वा जोवेद को न जानताहो जलमात्र काभी दाननदे। चाहै वह बस्तुजो इनतीनों को दानदीजावै धर्मसेही उत्पन्न हुईहो परन्तु इनतीनों को दानदेने से परलोकमें देने और लेने वाले दोनों को बहुत दुःख होगा जैसे पत्थरकी नाव में बैठने वाला आदमी डूब जाता है वैसेही मूर्ख दानलेनेवाला और देनेवाला दोनों नरक मेंडूबजातेहैं। जो लालचीछल और कपटकेकर्मकरताहैऔर जो औरोंको धोखा और दुःख देता है और औरों की बुराई करता है

उस की वृत्ति बिल्लीकी है । जो ब्राह्मण कपट से नीची दृष्टि रक्खै और मन में पाप से अपनास्वार्थ सिद्ध करना चाहै और दगाबाजी और कपट से अपनी प्रतिष्ठा प्रकट करै उसकीवृत्ति बगुलेकीहै जो नीची दृष्टिरक्खता है और मनमें जीवों का भक्षण करना चाहताहै । जब सत्पात्र मिलजावै तो उसकोप्रसन्न चित्त होकर जितना बनसकै दानदे और यज्ञइत्यादि कर्म करै। जब कोई अतिथि आवै तो उसको कुछ न कुछचाहै थोड़ाहीहो बिना बुड बुडाने के देवैं । जो आदमी आदर सहित दान लेता है और जो आदरसे देताहै दोनों स्वर्गको जाते हैं औरऐसा न करने से दोनों नरक में पडते हैं (मनुस्मृति अध्याय ४ श्लोक १६२ । १६३ । १६४।१६५ । १९६ । १६७ । २२८ । २३५ ॥

दान लेनेवाले के गुण और दानदेनेवाले की श्रद्धाके अनुसार दानका फल परलोक में मिलता है। (मनुस्मृति अध्याय ७ श्लोक ८६) याज्ञवल्क्य ऋषिकाभी यही वाक्य है कि पवित्रदेश और पवित्र काल में जो बस्तु सत्पात्र को दीजाती है वह महा उत्तम है (याज्ञवल्क्य स्मृति अध्याय १ श्लोक ६) निदान इससे अधिक कोई सुधार व सनातन धर्म के अनुकूल नहीं होसका कि पूर्वकालके ऋषियों के वाक्यों के अनुसार श्राद्धकियाजावै और वे समस्त व्ययजो आवश्यक नहोंदूरकिये जावैं। और देनेवालों में श्रद्धा और लेनेवालों में यदिसब नहीं तो कुछ गुण अवश्य होने चाहिये जिनको ऋषियोंने लिखाहै ॥

मनुजी यह कहतेहैं कि काष्टके हाथी और चर्म के हरिण के अनुसार वहब्राह्मणहै जो पढ़ाहुआनहो। जैसे वहहाथी वा हरिण केवल नाममात्रके हैं वैसेही यह ब्रह्मणभी केवल नाम मात्र काहै। यथा स्त्रियों में बन्ध्या स्त्री और गौओंमें बन्ध्या गौका रहना निष्फलहै वैसे बेपढ़े ब्राह्मण और मूर्षको दानदेना निष्फलहै। (मनुस्मृति अध्याय २ श्लोक १५८)

महाभारतमें भी यह लिखाहै कि वह दान जो ऐसे ब्राह्मण

को दिया जावै जो केवल जन्म सेही ब्राह्मण हो और जो अपने वर्णाश्रमके धर्म्म कर्म को न जानता हो निष्फलहै। (महाभारत वन पर्व अध्याय २०० श्लोक ८) और इसी पर्व में यहभी लिखाहै कि एक ऋषि एक स्त्री के घर भिक्षा मांगने गया और उसने ऋषिसे यह कहा कि ठहरजा मैं अपने पति की सेवा करलूं पश्चात् तुमको भिक्षा दूंगी क्योंकि मेरा पति मेरा परम देवता है। इसपर ऋषिने क्रुद्धहोकर उत्तर दिया कि हे स्त्री तू नहीं जानती कि ब्रह्म तेज समस्त पृथिवीको भस्म कर देता है स्त्रीने उत्तर दिया कि मैं जानतीहूं कि वेदके जाननेवाले ब्राह्मणों का क्या तेज है। परन्तु मैंने उनहीं ब्राह्मणों से सुना है कि स्त्री के लिये उसका पतिही परम देवता है। इसलिये मैं अपने पति देवता को पहिले पूजूंगी और पीछे तेरी पूजा करूंगी। और जो तूने मेरे ऊपर क्रोध किया है तो तुझको मालूम रहै कि तेरा क्रोधही तेरा शत्रु है देवता ब्राह्मण उसको कहते हैं कि जो क्रोध और मोहको जीत लेता है। जो सदैव सत्य बोलता है जो अपने गुरु की सेवा करता है जो अपनी हानि को सहता है परन्तु दूसरे को हानि नहीं पहुंचाता। जो अपनी इन्द्रियों को बश में रखता है। जो अपने धर्म्म में सावधान है। जो वेद पढ़ता रहता है। और पवित्र है। काम और क्रोध जिसके बशमें हैं। जो समस्त प्राणिमात्र के दुःख और क्लेश को अपनाही दुःख और क्लेश मानताहै। जो धर्म्म को जाननेवाला है। और उसके अनुसार चलता है। जो पठन पाठन करता रहताहै। और जो ब्रह्मचारी है (महाभारत वनपर्व अध्याय २०६ श्लोक ३२ से लेकर के ३६ तक) गौतम बुद्धने ब्राह्मणों के गुण ब्राह्मणों के सभामें जतन इसप्रकार बर्णन किये हैं कि पूर्व काल में ब्राह्मण ४८ बर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य्य करते थे। और दया धर्म्म और सत्य और तपमें अपना समय व्यतीत करतेथे वे लोग तरुण दृढ़ और रूपवान् होते थे और जबतक पृथिवी पर रहतेथे अपना काम करते थे

धर्म सुत्त नम्बर २८८ । २६१ । २६७ । और जिस समय कि गौतम बुद्धसे पूंछागया कि तुम ब्राह्मण किसको कहते हो जन्म से ब्राह्मण होता है वा कर्म से होता है उसने उत्तर दिया कि जन्मसे कोई ब्राह्मण नहीं होता क्योंकि हाथ पांव शिर आंख कान मुख नाक ओष्ठ ग्रीवा स्कन्ध अर्थात् सम्पूर्ण देह सर्व मनुष्यों के एकसे हैं इसलिये जन्म से कैसे ब्राह्मण होसक्ताहै । इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य गाय रक्खै तो वह ग्वाला होताहै । यदि पेशा करै तौ कारीगर होता है । यदि व्यापार करै तौ सौदागर व्यापारी होता है । यदि नौकरी करै तो नौकर होता है । चोरी करै चोर होताहै । हथियार बांधे सिपाही होता है । धनाढ्य हो तो रईस होताहै । परन्तु ब्राह्मण वह होता है कि जिसने समस्त विषय वासना को जीत लियाहो । जिसमें क्रोध न हो । जिसने सम्पूर्ण वस्तुओं से अनुराग छोड़ दिया हो । जिसने इन्द्रियां बश में करली हों । जो बुद्धिमान्हो । जिसको सत् और असत्का ज्ञानहो । जो किसीको दुःख न देताहो । जो उससे भी बैर न करताहो कि जो उसको दुःख भी देताहै । अर्थात् जो अपने बैरीसे बैर न करताहो । जो मन से वा वाणीसे वा शरीर से पापन करताहो । जिसके काम और क्रोध जातेरहेहों । जो निर्द्वन्दहो । जो तप करताहो । और जो सुख दुःख लाभ हानि में बराबरहो । जिसको इस संसार की गतिका ज्ञानहो । और ब्रह्मनिष्ठहो । वही ब्राह्मणहै । जन्मसे कोई ब्राह्मण नहीं है ॥ महाव्यास सूत्रादि शास्त्रोंसे यह भी प्रत्यक्ष पाया जाताहै । कि पहिले समयमें राजा और क्षत्रियही नहीं किन्तु शूद्रभी ब्राह्मण को ज्ञान दिया करतेथे । तथाच बृहदारण्यक उपनिषद् में काशीके राजा अजातशत्रु गार्ग बालाक के बेटको ज्ञानदिया और छांदोग्य उपनिषद् के पांचवें अध्याय के तीसरे खंडमें श्वेतकेतु अरुणीको प्रवाहन राजाने ज्ञान दिया । और केवल यही नहीं किन्तु महाभारतमें एक व्याधा

ने एक ऋषिको ज्ञान दिया है और उसका वृत्तान्त महाभारत के वनपर्व अध्याय २०७ से लेकर २१६ में किया गयाहै। इस व्याधाने ऋषिको राजाओं के धर्म और कर्म और धर्माधर्म और तप और सत और रज और तमोगुण और प्राण और अग्नि विद्या का उपदेश कियाहै। इस से प्रत्यक्ष होताहै कि जब सामान्य लोग ऐसे योग्यहोते थे तो ब्राह्मण जो उनसे दान लेते थे अवश्यही योग्यहोंगे इसलिये यदि श्राद्ध का अर्थ और अभिप्राय यही है कि श्रद्धासे दिया जावै और दानका यह अर्थ और अभिप्रायहै कि उचित देश और कालमें पात्रको दिया जावे तो हिन्दुओं का धर्म है कि श्राद्धकरते समय और दान देतेसमये यह देखलें कि श्राद्ध कराने वाले और दान देनेवाले श्राद्धकराने के योग्य और दान लेनेके योग्य और पात्र शास्त्रकी आज्ञानुसारहैं वा नहीं ? नहीं तो दान और श्राद्ध दोनों व्यर्थ हैं ॥

उ—अर्थात् तृतीय भाग——

तीर्थयात्रा

अबतीर्थोंका वर्णन सुनिये कि तीर्थोंका अभिप्राय बहुत अच्छाहै अर्थात् यह कि गृहस्थीको सत्संगसे लाभहो। और महात्मालोग आपसमें मिलकर शास्त्रार्थ पर बिचार करैं। महाभारतमें लिखाहै कि तीर्थोंका फल उसको होताहै कि जिसके हाथ और पांव और मन सब प्रकारसे बशमें हों। जिसकी विद्या और तप और कीर्ति वशमें हो। जो दान न लेताहो। सन्तोषी हो। जिसमें अहंकार न हो। जो लोभी न हो जो कुछ स्वतःही मिलजावे उसमें सन्तुष्टहो। जिसमें कपट नहो। जो त्यागीहो। जो स्वल्पाहारी हो। जो जितेन्द्रियहो। जो सब पापों से छुटगया हो। जिसमें क्रोध न हो। जो सत्यशील। जो दृढ़ब्रत हो। जो समदृष्टि हो। उसीको तीर्थोंका फल मिलताहै। ऋषियों ने जो यज्ञ देवताओं के लिये बिधिपूर्वक इस

लोक और परलोक की प्राप्ति के अर्थ नियत किये हैं वे हे राजा निर्धन आदमी नहीं करसक्ते। क्योंकि उन में बहुत से सामान और बिस्तार की आवश्यकता होती है। ऐसे यज्ञ केवल राजा वा द्रव्यपात्र लोग करसक्ते हैं। परन्तु विधि जिसको गरीब आदमी भी बिना दौलत और बिना सहायता बिना स्त्री और बिना बच्चों के और बिना पूंजी के करसक्ते हैं और जिनका पुण्य यज्ञ के पुण्य के बराबर है वह तीर्थयात्रा है। परन्तु वह फल उसको नहीं होता जो अपने मन को बश में किये बिना तीर्थयात्रा करै। महाभारत बनपर्व अध्याय ८२ श्लोक ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७॥ बिचार करने की जगह है कि तीर्थों का अभिप्राय क्या था और वह किस प्रकार जाता रहा है। लोग अपने घरोंपर सहस्रों प्रकार के पाप करते हैं और यह बिचार करते हैं कि तीर्थ में जाने से हमारे से पाप धुलजावेंगे। वहां पर जाकर गंगाजी में गोता लगाना और पण्डा जीको रुपया दो रुपया देनाही समस्त पापों को नाश कर देताहै। प्रत्येक मनुष्य को यह ज्ञात हुआहै कि तीर्थोंके पण्डा जी जैसे जार बदकार मक्कार और लुटेरे होते हैं वैसे और कोई लोग नहीं होते पण्डे इधर तो यजमान की सुफल बोलने आये और उधर जो कुछ उस से मिला वह रण्डी के घर गया वा मद्यवाले के घरगया वा जूआ में गया। गया जी में बहुत से लोग कहते हैं कि नित्यप्रति वहां के पण्डों की नसल घटती जाती है। कारण इसका पाठकजन स्वयम् जानसक्ते हैं। तीर्थों के पण्डे पण्डित होनेके बदले और यह शब्द पण्डितका अपभ्रंश पण्डा है। महा अनपढ़ और मूर्ख होते हैं। मथुराके चौबे जिनका असली नाम चतुर्वेदी है चारों वेदों को तो क्या बहुत से संस्कृत वा भाषा का एक अक्षर भी नहीं जानते। और कहते हैं कि औरों की विद्या और चौबों की महाविद्या। गोवर्द्धन में एक पीन पुष्ट और दीर्घ देह चौबे से पूँछागया कि यदि तुम

मेहनत मज़दूरी वा नौकरी करो तो तुम को भीख मांगने से अधिक मिलजावैगा। उत्तर दिया कि महाराज अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम। नासिक और त्र्यम्बक के पण्डों की दशा कुछ अच्छी देखी गई। परन्तु प्रशंसनीय वे भी नहीं हैं। बहुत से तीर्थ मोक्षदा होने के बदले नर्कदा होते हैं। बहुत सी स्त्रियां तीर्थों में जाकर नष्ट और भ्रष्ट होजाती हैं। बहुत से लोक अपनी कामपूरती के लिये तीर्थों में जाते हैं। बहुतसे तीर्थोंमें जोअनर्थ और अत्याचार पुजारियों और पण्डों की ओर से होते हैं वे वर्णन नहीं किये जासके हैं किसी किसी जगह का बर्ताव हिन्दू धर्म पर धब्बाहै। न मालूम कि जो शास्त्र तीर्थों में आज कल प्रचलित हैं वह किसने बनाये हैं। गया के पण्डे कहते हैं कि "प्रयाग मुण्डे और गया दण्डे" और इसका अर्थ यह वर्णन करते हैं कि प्रयाग में जाकर तो (शिर मुँडवाओ और गया जी में जाकर मारखाओ। गया जी में सैकड़ों वेदियां बनाई गई हैं प्रत्येक घरमें वेदी और प्रत्येक तलाव पर कैसाही सड़ाहुआहो वेदी और प्रत्येक वृक्ष के नीचे वेदी किसी का नाम राम सरोवर किसीका नाम कृष्ण सरोवर यहांतक कि बुद्ध गयातक को भी न छोड़ा। जहां गौतम बुद्ध महाराज को ज्ञान हुआथा उस को भी ब्राह्मणों ने अपनी एक वेदी नियत करली है। बुध गयामें जो बुद्धों की मूर्त्तियां हैं वे पांचों पण्डे ठहरा गये हैं और इसपर बिलक्षणता यहहै कि जहां श्राद्ध कराना चाहिये वहां सब लोगों को श्राद्धही नहीं कराया जाताहै। अक्षय बट के नीचे पण्डा जी कहते हैं कि महाराज कुछ छोड़दो पूछा कि क्या छोड़दें। अजी कुछ तरकारी छोड़दो। फिरपूछा कि कहां लिखा है। साहिब यहां का दस्तूर यही है। हरिद्वार में हरिद्वारका कोई पण्डा नहीं रहता। कारण पूछा गया तो उत्तर दिया कि यह स्थान गृहस्थों का नहीं है फिर पूछा कि गृहस्थ यात्री क्यों आते हैं तो उसकाकुछ उत्तर नहींदिया। प्रयाग अर्थात् इला-

हाबाद में बिचारे यात्रियों के लिये यह शास्त्र है कि अपनी स्त्री का दान करो तथाच लोग स्त्री का दान करते हैं और दोरुपये से लगाकर जितना अधिक हो पण्डा जीको देकर स्त्री फेर लेते हैं। शायद यही क्लेश स्त्रियों को आज कल के शास्त्र में लिखाहै कि उनका दान किया जावै और रुपया देकर फेर लीजावैं और इसपर बिलक्षण यह है कि उस उत्तम पवित्र जगह में जहां गंगा और यमुना मिलती हैं बिचारे यात्रियों को न्हाना तक नहीं मिलता वरसेही न्हाने देते हैं। काशी जी में भी यही दशा है। एक महात्मा ने एक दिवस कहा कि मेरे पास बहुत से पण्डे रुपया वा औलाद के लिये आते हैं और जब मैंने उनको मने किया और कहा कि तुमतो औरोंको धन और औलाद अर्थात् धन सन्तान देतेहो तो कुछ उत्तर न दिया। अयोध्या जीकी दशा सुनिये वहांपर यात्री लोगों को यह बहकाया जाता है कि यह स्थान सीताजी की रसोईका है रसोई के बर्त्तन इत्यादि सब रक्खेहैं। पूछा गया कि ये बर्त्तन कबरक्खे गये तो उत्तर न दिया॥ निदान तीर्थों की जोदशा इस समय पर है वह शास्त्र के अनुकूल सर्वथा नहीं है। महाभारत में पुष्कर और गया और काशी और प्रयाग और केदार और कुरुक्षेत्र इत्यादिका माहात्म्य बहुत बिस्तारपूर्वक लिखा है। गयाजीका माहात्म्य बहुतही बिस्तारपूर्वक बर्णन किया गया है। दोनों स्थान वास्तव में ऐसेही हैं कि जो पूर्व समयों में अबभी कुछ तपस्वियों के रहने के स्थान हैं परन्तु शोक यह है कि तीर्थों के असली अभिप्राय को कोई बिचार नहीं करता। पिछले कुम्भपर बहुत से महात्माओं से पूछागया कि कुम्भ क्या चीज है? उन्हों ने सम्मति के साथ यह उत्तर दिया कि कुम्भ एक संकेत कल्पना कर लियागया है कि जिससे महात्मा लोग प्रत्येक तीसरेसाल हिन्दोस्तान के एक तीर्थ पर इकट्ठे होकर अपने बिचारांश को एक दूसरे के ऊपर प्रगट करते रहैं और शास्त्रके अर्थ का बिचार

करें । इसी हेतु से चार कुम्भ नियत किये गये हैं एक हरिद्वारमें । दूसरा प्रयागमें अर्थात् इलाहाबाद में । तीसरा उज्जयन में और चौथा नासिकमें । एक कुम्भदूसरेके तीनवर्ष पीछेहोताहै । तथाच हरिद्वार में भी पायागया कि वहां पर अन्य समस्त लोगतो स्नानकरके चले जाते हैं परन्तु महात्मालोग महीनों वहां रहकर शास्त्रका विचार करते हैं । बिचार करने की जगह है कि तीर्थोंको लाभ सब लोगोंको कहां होता है । बिरुद्ध इसके शास्त्र में यह लिखाहै कि जो लोग ब्रह्मज्ञानी हैं उनको तीर्थयात्राकी आवश्यकता नहीं है सत्यही तीर्थ है क्षमातीर्थ है इन्द्रियों का दमन और सम्पूर्ण प्राणीमात्रपर हित और दया करना और सरल वृत्ति और दान और कामको बश करना और सन्तोष और प्रियभाषण और ब्रह्मज्ञान और शुभ कर्म करनाही तीर्थ हैं परन्तु सब से अधिक तीर्थ मनकी शुद्धि है । इस लिये तीर्थ करने वालों को यह चाहिये कि तीर्थ जाने से पहिले घर में मनको शुद्ध करें । नहीं तो तीर्थयात्रा निष्फल है मसल मशहूर है "कि मन चंगा तो कठौती में गंगा" ॥

पञ्चम प्रकरण—

अन्य रिवाज संशोधनीय ॥--

समुद्र की यात्रा और इंगलिस्तानकी शिक्षा--

अ—अर्थात् प्रथम भाग—

बालबिवाह का दूरकरना और बाल बिधवाओं का पुनर्बिवाहहोना वा बिवाहादिमें व्यर्थ व्ययको रोकनाही हिन्दुओंके उन्नतिकारक नहीं हैं किन्तु उनलोगों की किसी२ और रिवाजों में भी सुधारहोना चाहिये । इससे पहिले कि वह उतनी उन्नति जो उन्होंने गतसमयमें की थी बिना किसीरोकके करसकें । हिंदुओं का निज और सनातन धर्म्म चैतन्यधर्मथा कि जो बुराई और अत्याचार को रोकताथा । और असली धर्म्म उन्नति

वर्ण में हानि कारक नहींथा विरुद्ध इसके हिन्दुओं के वर्त्तमान धर्म बहुधा रस्म पूरी करनेके सिवाय और कुछ नहीं है। और बुराई और बदचलनी को रोकनेके बदले वह किसी २ दशा में असली उन्नति में बाधक होताहै। यथा समुद्रकी यात्राको रोकने में। इसलिये यहां पर यह दिखाया जावैगा आया समुद्र की यात्रा योग्य और उचितहै वा नहीं ? तथाच हिन्दुओंकी सर्वोत्कृष्ट अत्युत्तम धर्म पुस्तकमें समुद्रकी यात्राकी कोई मनाई नहीं है। ऋग्वेद में भज्जूकी जहाज़का टूटना और अश्विनीकुमार का उसकी रक्षा करना पायाजाताहै ऋग्वेदसंहिता अष्टक १ अध्याय ४ वर्ग २१ ऋक् ३। ४। ५ में यह लिखाहै कि तुग्रनाम अश्विनीकुमार का मित्र एक राजऋषिथा उसने एकटापू में शत्रुओं के जीतने के लिये बहुत उद्यम किया और अपने पुत्र भज्जू को सेना देकर जहाज़ में समुद्र में भेजा जब वह जहाज़ समुद्रमें दूर पहुँच गया तो वायु से टूटगया तब भज्जूने अश्विनीकुमार की स्तुति की और उन्होंने भज्जू को सेना समेत अपनी नौकापर बैठाकर तीन रात्रि दिवसमें वहां पहुंचा दिया मन्त्रका उल्था यहहै। "प्रसिद्धहै कि तुग्रने भज्जू को समुद्र में भेजा कोई मरनेवाला जैसे धनको छोड़कर इस देह से जाताहै वैसेही उन शूरवीरोंको जो लड़ाई अर्थात् युद्ध करना चाहै जाना चाहिये। हे अश्विनी कुमारो तुमने उसको अपनी आकाश पर चलने वाली जिसमें जल न जासके नौका पर उसको पहुँचा दियाहे नासत्य अर्थात् अश्विनीकुमारो भज्जू को तीन रात तीन दिन बराबर चलतेहुए उड़नेवाले सौ पावों वाले तीन रथों में गीले समुद्रके पार सूखे देशमें तुमने पहुँचा दिया। हे अश्विनीकुमारो अथाह और पृथ्वी जिसमें नहीं है जहां पकड़ने को कुछ नहीं है तुमने वह पराक्रम किया समुद्र में सौ बल्ली वाली नैकापर बैठे भज्जूको घर पहुंचादिया स्तुतिकरने वाले नमस्कार के साथ प्राप्त होनेवाले चारों ओर उपस्थित और

व्याप्त इन्द्रको स्तुति करते हैं धनकी इच्छा करनेवाले सञ्चरन में जैसे समुद्र को। वशिष्ठ ऋषि कहते हैं कि जब मैं और बामन बीच समुद्र में जहाज में जाते थे जहाज ऐसे नाचता था और लहरों से ऐसे हिलता था मानो हम हिंडोले में हिल रहे हैं। ऋग्वेद अष्टक ७ अध्याय ८८ मन्त्र ३॥

इससे प्रकट होता है कि वेदों के आविर्भाव के समय में समुद्र की यात्रा प्रचलित थी और लोग जहाजों में दूर दूरके देशों को जाया करते थे। मनुजी ने भी समुद्र की यात्रा का इस प्रकार वर्णन किया है कि समुद्र की यात्रा में तजुरबेकार और देश और समय के तत्त्व को जाननेवाले जिस वृद्ध अर्थात् लाभ के बिषय में जो सम्मति देवें वह मति उस वृद्धि के लेने में उचित माननी चाहिये। (मन्वा ध्याय ८ श्लोक १५७) बाल्मीकीय रामायण के किष्किन्धाकाण्ड सर्ग चालीस में टापू "जावा"का वर्णन किया गया है और उसी रामायण में यह भी लिखा है कि सौदागर लोग समुद्र के पार जाकर व्यापार करते थे। और राजा के लिये तोहफ़े अर्थात् विदेश की उत्तम बस्तु लाया करते थे। महाभारत से प्रकट है कि पांचों पाण्डवों में से सहदेव समुद्र के टापुओं के राजाओं को जीतनेको गया और तामरा के टापू में पहुंचा-और मिताक्षरा से भी पाया जाता है कि हिन्दू लोग दूर दूर के समुद्रकी यात्रा किया करतेथे। समुद्र यात्रा का वर्णन बायु पुराण हरिबंश मारकण्डेय भागवत् पुराण और बाराह पुराण इत्यादि में आया है। और क़िस्से कहानी की पुस्तकों यथा कथा सरित सागर में भी समुद्र यात्रा का वर्णन है कथा सरित सागर के पचासवीं तरंग में वर्णन है कि चित्रकार दो सन्यासियों के साथ प्रतिष्ठान में समुद्र यात्रा करके पहुंचा। राजतरङ्गिणीमें कि वहभी एक इतिहासी पुस्तक संस्कृत में है यह लिखा है कि एक राजा समुद्र यात्रा में जाताथा और वहां उसको मकर खा गया परन्तु उसका पेट चाक

करके निकल आया और समुद्र पार गया। बाराह पुराण से भी समुद्र की यात्रा करना पाया जाता है। इसके सिवाय बहुत से यात्री जो चीन इत्यादि देशोंसे इस देशमें पहिले समयों में आये वेभी इस देश के लोगों का समुद्र यात्रा करना वर्णन करते हैं तथाच छठी सदी में फाहयाम एक बड़ा यात्री अर्थात् देशाटन करनेवाला चीनसे इस देशमें आया और उसने अपनी पुस्तक में लिखा है कि मैं हिन्दुस्तान की जहाज़ पर कि जिसमें हिन्दु अधिकारी और मलाह थे सवार हुआ और उस जहाज़ में ब्राह्मण लोगभी मुसाफिर अर्थात् यात्री थी। मेक्फ़रसन साहिब के व्यापारिक इतिहास से यह भी पाया जाता है कि हिन्दुस्तान का व्यापार फारिस और अरब से बहुत था। फ़िनिशिया और रोम और यूनान के लोग और यहूदियों का हिन्दुस्तान से बराबर व्यापार जारी था हिन्दुस्तान के सफ़ीर यूरोप में देश आपर्सीनतक जातेथे। मिस्त्रमें टोलोमी एक यूनानीने तीसरी सदी में हिन्दुओं से मिला और बहुत से हिन्दू इस देश से जाकर दूर दूर के देशों में जाकर बसते थे। तथाच कुछ हिन्दू कोलचस में जाकर बसे और वहां अब तक हिन्दू मौजूदहैं। कर्नैल टोड साहिब अपने पुस्तक राजस्थानमें लिखते हैं कि वह वर्ण जिसको यूनान के लोग "हेरी क्लाई वेट्ज़" कहते हैं वे यदुवंश राज पूत थे। सुमात्रा और जावा के टापू में ब्राह्मण व्यापारी हिन्दोस्तान से जाते थे और इन टापुओं में हिन्दुओंका मत बहुत उन्नति परथा। यहां तक किजावासे गणेश और दुर्गा और हिन्दुओं के और २ देवताओं की मूर्तियां पाई गई हैं और वे हाई लेण्ड में लेडिन के अजायबखाने (अद्भुत आलय) में रक्खी गई हैं। यह भी सिद्ध हुआ है कि हिन्दुस्तान के व्यापार का सम्बन्ध रूस फ़ारिस अरब चीन अवा पीगू मलाका एशिया छोटा मिस्त्र हबश शियाम फिनिशिया यूनान रोम इत्यादि सेथा। फ़ाहायम ने अपने सफर नामा

अर्थात् यात्रा वर्णन में लिखा है कि जावा में ब्राह्मणों का बहुत प्रचार था। होमलिशान एक और चीन का पर्यटन करने वाला जो सन् ६२५ ईसवी में चीन से हिन्दुस्तान में आया वह अपने सफरनामे में अर्थात् पर्यटन वर्णन में लिखता है कि उड़ीसा के दक्षिण और पूर्व को एक बहुत बड़ा बन्दर था। जहां से सौदागर अर्थात् व्यापारी दूर दूर के देशों को आते जाते थे। उस शहर की दीवारें दृढ़ और ऊंची थीं और वहां पर नाना प्रकार की बहु मूल्य वस्तु मौजूद थीं॥

मुझ को इस समय में लंका जाने का सावकाश पड़ा और वहां के मन्दिरों के पुजारियों ने अपनी बहुत सी बहुमूल्य वस्तु और पूजने की मूर्तियों के बिषय में यह बर्णन किया कि ये हिन्दुस्तान से दो हजार बर्ष हुये जब आई थीं और वहांके राजाओं का हिन्दुस्तान में आना और हिन्दुस्तान से लोगों का वहां पर जाना बहुत से निशानात से पाया गया। इस से प्रकट होगा कि यह खयाल कि हिन्दू लोग पूर्व समय में समुद्र यात्रा नहीं करते थे ग़लत है॥

अब यह देखना चाहिये कि समुद्र यात्रा की मनाई कौन २ शास्त्रों में है। और वह किस प्रकार उत्पन्न हुई?। मनुस्मृति के अध्याय ३ श्लोक १५८ में यह लिखा है कि समुद्र में होकर जो दूसरे द्वीप में जावै उस को हव्य कव्य में न बुलावै अर्थात् श्राद्ध में उस को न जिमावै परन्तु जब लोगोंके साथ ऐसे मनुष्यको शामिल किया है यदि वे सब लोग श्राद्धसे खारिज किये जावें अर्थात् श्राद्ध में न जिमाये जावें तो बहुत से ब्राह्मण जो अब श्राद्ध में बुलाये जाते हैं वह कभी न बुलाये जावें। यथा "बिना पढ़ा" "अनेक आदमियों को यज्ञ कराने वाला"-"देवताओं का पुजारी" "व्यापारकी जीवकासे कालक्षेप करनेवाला" "राजा का नौकर" "श्रुति और स्मृतिकी अग्निका त्याग करनेवाला" "सूद अर्थात् व्याज की आजीवका रखने वाला" "अश्व

यज्ञों से रहित" "ब्राह्मणों का बिरोधी" "दूसरे के लाभ के लिये जो धन दिया गयाहो उसको बर्त्तनेवाला" "रुपया लेकर पढ़ाने वाला" " रुपया देकर पढ़नेवाला" "शूद्रकागुरू" "कठोर बचन बोलने वाला" "बिना कारण माता पिता गुरू आदिको छोड़नेवाला" इत्यादि इत्यादि (मनुस्मृति अध्याय ३ श्लोक १५१ लगायत १५७) इस से सिद्ध होगया कि बर्त्तमान समय में यदि मनुजी सब से पिछली अनुशासन सम्बन्ध नहीं रखती तो पहिलीभी सम्बन्ध नहीं रखती। इसी प्रकार वृहद् नारदीय पुराण में यह लिखा है कि समुद्र यात्रा और वर्ण की कन्या से बिवाह करना और श्राद्ध में मांस का दान करना अश्वमेध और गोमेध और पशुमेध ये सब कलियुग में नहीं होने चाहिये। आदित्यपुराण में यहभी लिखा है कि देवर से पुत्रोत्पत्ति कराना और वह मनुष्य जो समुद्र की यात्रा करता है उसको जातिमें लेना चाहे उसने प्रायश्चित्त भी कियाहो और मूर्त्ति पूजन की आजीवका से कालक्षेप करना और धर्म्म कार्य्य को किसी फलकी आकांक्षा से करना ये सब कलियुग में मने हैं। ये अनुशासन कहांतक ठीक हैं और उनपर कहांतक अनुवर्त्तन होता है हम स्वयम् पाठक जनोंपर छोड़ते हैं। परन्तु इतना कहना अयोग्य न होगा कि यदि जहाज में बैठकर जगन्नाथजी वा द्वारिकाजी जाना वा सीलोन से मोती लाना ब्रह्मा वा रंगून वा मन्दरास को जाना इन अनुशासनों में शामिल नहीं है तो दूर की यात्रा भी नहीं शामिल होसक्ती। यदि लोग जगन्नाथ जी वा द्वारिका जी वा सीलोन जानेवालों को जाति बाहर करें तो उन लोगों को भी जाति से बाहर करना चाहिये जो दूर की यात्रा करतेहैं। कारण इस समस्त अवनति का यह है कि लोगों की अज्ञान अविद्या और भूल ने उन को अपने धर्म्म के असली नियमोंसे अज्ञान रक्खा और इस के बदले कि यह देश भी यूनान वा रोम के सदृश समुद्र हिन्द का मालिक हो यह अपनी थोड़ी २ सी

भी आवश्यकता के लिये भी अन्य देश के आश्रित रहा इसी कारण से जैसा कि किसी २ का बिचार है कि इस देशकी अवनति का कारण ऐसे २ अनुशासनहीं हैं वे मतमतान्तर की पुस्तकों में शामिल कियेगये हैं कि जिससे समस्त फन पेशा हिरफा तिजारत ईजाद हुनर हिम्मत जवाँमर्दी नष्ट होगई । और ब्राह्मणों ने इसी अविद्या से लाभ उठाकर अपने मतलब के लिये ऐसे २ प्रायश्चित्त नियत किये हैं कि जिससे लोग कभी इरादा न करें। यदि कहो कि मनुने म्लेच्छ देशमें रहनेकी मनाई की है तो मनु के बचन के अनुसार तो बहुत सा भाग हिन्दुस्तानका भी म्लेच्छ देशमें शामिल होजावैगा । अर्थात् समस्त बंगाल और दक्षिणी हिन्दुस्तान और आसाम और समस्त देश जो विन्ध्याचल के दक्षिण में हैं सब म्लेच्छ देशमें शामिलहोगा । कोई ब्राह्मण वा और कोई मनुष्य कभी यह नहीं कहैगा बंगाल वा दक्षिणी हिन्दुस्तान वा आसाम के रहनेवाले म्लेच्छ हैं । इसलिये जब कि कोई ऐसा नहीं कहसक्ता तो क्या कारण है कि समुद्र की यात्रा के विषयमें जो सनातन मार्ग हिन्दुओं का है उसके अनुसार न चलें ? बर्त्तमान कालमें समय बहुत पलटगया है और बहुत से लोगों का यह बिचार है कि यूरोप को जाना शिक्षाकी पूर्णता के निमित्त अवश्य है और वे लोग जो यूरोप में जाकर शिक्षापाते हैं उनकी संख्या नित्यप्रति बढ़ती जाती है इसलिये बिचार करने की जगहहै कि किसी जाती वा वर्णके लोग अपनी उन्नति के ध्यान से अपने में से योग्य और सुशिक्षित मनुष्यों को किसप्रकार निकाल सक्ते हैं । किन्तु जहां तक विचार किया जाता है वह समय आगया है कि जब वह रोकटोक जो इस बिषय में लगाई गई है तोड़ीजावै । इसके सिवाय यह आज्ञा और रोकटोक केवल उपपुराणकी हैं श्रुतिकी नहीं हैं और यदि स्मृति कीभी आज्ञा जिसकी चर्चा की गई है ऐसाही मानीजावें तो जब श्रुति अर्थात् वेद में समुद्रयात्रा का प्रकट बर्णन है और

कोई प्रायश्चित्त उसके लिये नहीं है तो श्रुति मन्तव्य है क्योंकि जब श्रुति और स्मृति में विरोध होवै तो श्रुतिसर्वोत्कृष्टमन्तव्य होगी ॥—इस में कोई सन्देह नहीं है कि दोनों ओरकी भूलहै। जाति के लोगोंकी तो यह भूलहै कि वे प्रत्येक मनुष्य को जो समुद्र की यात्राकरै बिना बिचारे उसके चालचलन के उसको जाति से बाहिर करदेते हैं और यात्रा करनेवालों की यह भूल है कि वे अपनी जाति के नियमों के विरुद्ध बरताव करते हैं अर्थात् ऐसी बस्तु खाते हैं और पीतेहैं कि जो उनकी जाति में निषेध हैं अपनी पोशाक रहन बरताव को जाति के लोगों से सर्वथा अलग करदेते हैं और फिर यह आशा रखते हैं कि बिरादरी के लोग हमको शामिल करलें और जाति से न निकालें विरुद्ध इसके यदि जाति के लोग और समुद्र यात्रा करनेवाले एक दूसरे की रिआयतकरैं तो इसबिषयमें जो झगड़ा है शीघ्रही दूर होजावैगा तथाच इस विषयमें जो स्पीच अर्थात् व्याख्यान सोशैल कान्फरन्स कलकत्ते में दिया था उसका अनुवाद यहां देता हूं ॥

स्पीच अर्थात् व्याख्यान ॥

मैं इस रैज़ोल्यूशन की पुष्टि में कुछ बार्ता कहने की आज्ञा चाहता हूं। अपने भाग्यबलसे मुझको इङ्गलिस्तान जाने का अवसर महाराजा साहिब इन्दोर पति की शर्फ मुलाजमत के कारण हुआ इसलिये मैं कहसकाहूं कि यह कष्ट जो हिन्दुस्तानियों पर पड़ता है किसप्रकार दूर होसका है । इसमें कोई सन्देह नहीं है कि प्रत्येक सुशिक्षित सभ्य हिन्दुस्तानी की आज कल यही इच्छा है कि इंगलिस्तान में जाकर अपनी शिक्षा वा कारबार में उन्नति करै। परन्तु बहुत से लोगों के लिये सिवाय बिरादरी के भयके और कोई बात रोक टोक नहीं करती है। आज प्रातःकालही कई एक बड़े साहूकारोंने कि जो कान्फरैंस

में उपस्थित थे मुझसे कलकत्ते में यह कहा कि वे यूरोप जाना चाहते हैं परंतु बिरादरी के भयसे नहीं जाते। ऐसे लोगोंकी जो इस देशमें बड़े २ व्यापारी हैं यह इच्छा होती है तो बड़ी बात है और यह कान्फरैन्स उनके साथ इससे अधिक क्या सलूक करैगी कि वह उनको यह बतलादे कि यह कष्ट क्योंकर दूरहोसक्ता है। मैं इस बातको स्वयम् अपनी दशा बर्णन करके प्रकट करूंगा। मेरी मति में हम हिंदुओं का बर्ताव खाने पीने और पोशाक का इंगलिस्तानमें और वहां से हिंदुस्तान में पीछे आने के पश्चात् वैसा नहीं है कि जैसा होना चाहिये। हम लोग वह बस्तु खाते हैं कि जिसका खाना निषेध किया गया है। अन्यप्रकार की पोशाक पहनते हैं अपने भाई बन्धुओं से पृथक् रहते हैं और फिर भी हम आशा करते हैं कि वे हम को अपने में शामिल कर लें। ऐसी प्रकृतियों से जो हम ग्रहण करते हैं उनका हम को न शामिल करना कुछ अनुचित नहीं है जो कुछ सुधार होसक्ता है उस की आजकल यही रीति है कि वे लोग जो सुधार करना चाहैं अपने अल्प शिक्षित वा ऐसे भाइयों की जो बहुत योग्य नहीं जिनकी संख्या बहुत हैं हमदर्दी (सुहृदता) प्राप्त करैं और उन के मार्ग को न छोड़ें और छोटी २ बातों में उनकी रिआयत करैं वा साथ देवें इस अभिप्राय से कि उनको बड़ी २ बातों में अपने अनुसार करलें। "पबलिक सर्विस कमीशनने भी इस बात पर जिस समय कि यह बहस होरही थी कि सिविल सर्विस के लिये हिन्दुस्तानियों की शिक्षा इंगलिस्तान में होनी चाहिये वा नहीं ? बिचार किया था और उन्होंने यह लेख दिया है कि जिन लोगों ने हमारे सामने साक्षीदी है उन्हों ने बहुधा यह स्वीकार किया है कि वह क्लेश जो इङ्गलिस्तान से पीछा आकर हिन्दुस्तान में हिन्दुओं को होता है वह केवल समुद्र यात्रा के कारण नहीं होता किन्तु और कारणों से होता है। यथा उन लोगों का वह प्रायश्चित्त वा और रस्म जो उनके

भाई बन्धु उनको जाति में लेने से पहिले कराने पर आग्रह करें उनका न करना वा स्वयम् अपने कर्मों से अपनी जाति के लोगों से अपने तईं अलग करना किसी २ दशा में तो ऐसे लोगों ने स्वयम् इङ्गलिस्तान जाने के पहिले वा बिना इङ्गलिस्तान जाने के भी ऐसे चाल चलन स्वीकार किये हैं कि जिन से वे अपनी जाति से अलग होगये हैं। वा अलग के समान होगये हैं"। मेरी समझ में जो परिणाम कमीशन ने निकाला है वह बहुत ठीक है क्योंकि जब मैं स्वयम् अपनी दशापर बिचार करता हूं तो मैं उस परिणाम को बहुत ठीक पाता हूं। मैंने इंगलिस्तान में अपनी सनातन पोशाकवा मामूली खाना पीना निरन्तर स्थिर रक्खा और यद्यपि मुझको बहुत से क्लेशभी हुए परन्तु मैं ने अपनी पुरानी प्रकृतियों को न छोड़ा उसका परिणाम यह हुआ कि न केवल प्रसन्नता पूर्वक लोग लौटकर आनेपर मुझसे मिले किन्तु किसीने मेरे जाति से बाहर होने वा न होने के विषयमें एक अक्षरभी मुखसे न निकाला न मुझसे एक पैसा प्रायश्चित्त वा किसी और रस्म में खर्च कराया किन्तु जहां तक मैं विचार करताहूं इंगलिस्तान जाने से और यूरोपकी सैर करने से और अंग्रेज़ों की दशा और बिचारांश भली प्रकार खोज करने से मुझको अपने देश भाइयों को लाभ पहुंचाने का अधिकतर सावकाश मिला है और मेरा यह दृढ़ बिश्वास है कि प्रत्येक हिन्दूको जो अपने देश भाइयों को लाभ पहुंचाना चाहै और अंग्रेजों के साथ थोड़ेसे मेल जोल पर सन्तोष करै वैसाही अवसर मिलैगा। इंगलिस्तान में भी मुझको बजाय इसके कि मुझको हिन्दुस्तानी पोशाक पहन्ने से कोई हानिहुई होवै वा मेरा कोई ठट्ठा हुआ होवै मुझको महान लाभ हुआ और बहुत से अवसरोंपर कि जहां मनुष्यका सही सालिम अर्थात् निष्कण्टक गुजरना कठिन था यथा जूबिली की रोशनी में कि जहां पर लण्डनकी पुलिस लोगों के प्राणों की रक्षा करनेसे कानों

पर हाथ धरगई मेरी हिन्दुस्तानी पोशाक महान् उपयोगी हुई। बहुतसी जगह कि जहां पर साधारण लोगों का गुजर अर्थात् पैसाव नहीं होसकाथा मुझको केवल इस पोशाक केही प्रताप से देखनी नसीब हुई । खानेकेविषय में भी जहां कहीं मुझको जाने का सावकाश हुआ मेरी प्रकृति के अनुसार खानेकी वस्तु मुझको सदैव मिलतीरहीं और चाहे श्रीमती महारानी बिक्टोरिया के महलमें वा अमीरोंके जलसोंमें जहां कहीं मेरि दावत अर्थात् पोहनाई हुई वा भोजन करने का सम्भव पड़ामुझको निरन्तर वे बस्तु कि जो मैं खासक्ता था मिलीं । निदान मेरी समझ में इसक्लिष्ट कल्पना का सुगम करने का यही मार्ग है कि प्रत्येक हिन्दू जो यूरोपको जावे वह पोशाक इत्यादिके बिषय में अपने पुराने स्वभाव और प्रकृति को नछोड़े । किन्तु अपनी शिक्षा को अपने भाई बन्धुओं के लाभके लिये औरउपकारके लिये ऐसे ढंगसे कि जो उनको रुचतेहों काममें लावैं। अर्थात् यह कि यूरोप जाकर वहां की बिद्या गुण और सभ्यता सीखै परन्तु अपनी पुरानी प्रकृति और स्वभाव को न छोड़े । यदि वह ऐसा करैगा तो जातिके लोग उसकी अवश्य रिआयत करैंगे किन्तु उसको जाति से बाहर करने का गुमानभी न करैंगे । यहांपर यह भी दिखलाना अयोग्य न होगा कि इंगलिस्तान किन २ लोगों को जाना उचित है । इस समय लण्डन में बिशेष कर और इंगलिस्तान के कोई २ शहरों से बहुधा हिन्दुस्तान के विद्यार्थियों की शिक्षा के बहुत से उपयोगहोगये हैं। "नोर्थब्रुक इंडियन सो साइटी" और नेशनेल इंडियन,, एसोसिएशन लंडनमें ,, और " इंडियन इन्सटी ट्यूट ओक्सफोर्ड,, में हिन्दुस्तानके विद्यार्थियों की शिक्षामें सहायता करनेके अभिप्रायसे नियत किये गये हैं । इनमें से प्रथमोक्त सो साइटी का यह कामहै कि वह विद्यार्थियों के लिये स्थान और शिक्षाका प्रबन्ध यथायोग्य करै और उसको यूनी वर्सिटी वा इन आफ

कोर्ट में जैसा कि वह वाउसके पिता माता चाहैं दाखिल अर्थात् भरती करदे और बारम्बार उसकी शिक्षाका व्यय और उसका जेबखर्च उसरुपये से जो उसकेपास जमा किया जावै देती रहै। और बिद्यार्थियों के पिता माता को बारम्बार इत्तलाअ करती रहै। दूसरी सो साईटी का भी अभिप्राय यही है केवल इतना अधिक है कि वह बिद्यार्थियोंको लंडनके बड़े आदमियोंसे मेल जोल उत्पन्न करनेके लिये अवसर देती रहै। इंडियन इन्सटी ट्यूटका भी यही अभिप्राय है। सिवाय इसके लंडन में बहुतसे अंगरेज़लोग जो हिन्दुस्तानसे पैनशन लेकर जातेहैं हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों के लिये अपने घरमें ३० शिलिंग वा ४० शिलिंग सप्ताह के बदले में स्थान और खाने पीने का प्रबन्ध करते हैं और उनलोगों के स्थानों में बहुधा बहुत आराम बिद्यार्थियोंको मिलताहै। इंगलिस्तान में विद्यार्थीका व्यय इसप्रकार है कि मामूली मदरसे अर्थात् विद्यालयकी शिक्षाके लिये डेढ़सौ पाऊ-ण्ड से दोसौपाऊण्ड बार्षिकतक यूनीवरसिटी अर्थात् महाविद्या-लय की शिक्षाके लिये बार्षिक तीनसौ पाऊण्डके लगभग और समस्त शिक्षाके लिये एक सहस्र पाऊण्ड। सिविल सर्विस के लिये २७५ पाऊण्ड बार्षिक बैरिस्टरी के लिये २५० पाऊण्ड बार्षिक कृषि अर्थात् खेती की शिक्षाके लिये २५० पाऊण्ड बा-र्षिक। इसके सिवाय ३० पाऊण्ड के लगभग लण्डनमें पहुंचते हैं बस्त्र इत्यादि में खर्च होते हैं। और बैरिस्टरी के लिये १५० पाऊण्ड दाखले के अर्थात् भर्ती के देने पड़ते हैं। परन्तु इस समय इङ्गलिस्तान जाना कोई अलौकिक बात नहीं है। और बहुत से लोगों का यह बिचारहै कि २००००) वा २५०००) रुपये का खर्च उठाना ऐसी बैरिस्टरी के लिये जिसमें फलकी प्राप्ति दिन २ प्रति कठिनहोती जाती है वा ऐसे उद्यमकी आशा पर जो अलोप होताजाताहै ठीक नहीं है हिन्दुस्तानी मातापिता का यह भय कि उनके सन्तानों को इङ्गलिस्तान जाकर बुराई

में पढ़ने के कैसे सुगम मार्ग प्राप्ति हैं मैं अपने निज तजरुबेसे ठीक समझताहूं। बहुतसे विद्यार्थियों को महिने में २० दिन खाली रहने का सावकाश मिलताहै सामान ऐश अर्थात् राज-सी बस्तु उसदेश में सुगमतासे प्राप्त होसक्ती हैं। लण्डन में पुंश्चली स्त्रियोंकी संख्या बहुतहै। हिन्दुस्तानी विद्यार्थियोंकी देखभाल करने वाला कोई मनुष्य सिवाय उसकी नेकीके नहीं है इसलिये यदि वह न बिगड़े तो यहही आश्चर्य है। बहुधा उसको अमीरों और रईसों में शामिलहोने का अवकाश नहीं मिलता और चाहे वह अपने पिता माता को वा मित्रों को यह लिखै कि उसको अमुक लोर्डकेसाथ खानेका सावकाशहुआ वा अमुक ड्यूकके घर वह डिनर वा बौल (नाच) वा खाने में शरीक हुआ उसको आजकल उसके और अंगरेज़ साथियों से अधिक अवकाश नहीं मिलता किन्तु कोई २ अङ्गरेज़ जो हिन्दु-स्तान से पैनशन लेकर गयेहैं वे वा और कितनेई लोग उससे मिलतेहैं। अतएव मैं अपने निजतजरूबे से यह कहसक्ताहूं कि हिन्दुस्तानसे अधिक उत्तम उसकी दशा नहीं है। और बहुत से हिन्दुस्तानियोंकी जिनको मैंने लण्डनमें देखा यही शिकायत थी कि हमसे बहुत कम लोग मिलतेहैं और हम यहांपर बहुत कम लोगोंको जानतेहैं सिवाय इसके इन्नर आफ कोर्ट (कानू-नी मदरसे) और यूनीवर सिटियोंकेबहुधा मदरसों अर्थात् पाठ शाला वा अफसरोंने जिनसे बात चीतहुई यह शिकायत की कि वह विद्यार्थी जो हिन्दुस्तानसे आतेहैं बहुधा ऐसे होतेहैं कि जो अंगरेज़ी भाषा ऐसी कमजानतेहैं कि वे लेक्चर नहीं समझ सके। इसलिये इनसब बातोंपर बिचार करके यही ध्यान में आताहै कि प्रथम तो केवल वे लड़के जो सर्वोत्कृष्टहोनहारहों और नेकचलन और योग्यहों इङ्गलिस्तानको शिक्षाके लियेभेजे जावें। द्वितीय जबकि सिविल सर्विस की अवस्था की कैद बढ़गईहै अर्थात् अब २३ वर्षकी अवस्थातक परिक्षा होसक्ती है

और बैरिस्टरी और यूनीवरसिटी और कृषि की शिक्षाके लिये कोई अवस्थाकी कैदनहींहै तोकोई हिन्दुस्तानी विद्यार्थी कमसे कम एफएके परिच्छा पासकरनेसे पहिले इङ्गलिस्तान न भेजा जावै। विरुद्ध इसकेवेलोग कि जो अपनेपेशे अर्थात् उद्यम वा प्रतिष्ठा पदवीपरनियतहोगयेहैं और जिनकी शिक्षा पूरीहोगई है और जिनकोइङ्गलिस्तान और यूरोपकीसैरकरनेका अवसरप्राप्त है उससे अधिक क्या करसक्तेहैं कि अपनीविद्या और जानकार और नेकी करनेकेद्वारोंको सभ्य और उन्नति करनेवाले देशोंकी सैर से वृद्धिदेवैं यूरोपमें वृद्धि और उन्नति इस मर्य्यादतक बढ़ी हुई है कि आदिमी आश्चर्य में रहजाताहै। इसलिये हिन्दुस्तानियों को भी चाहिये कि वैसाही करने का उद्योगकरैं॥

इस समय बंगाल में यह बहसहोरही है कि जो लोग समुद्र के पारजावैं उनको जाति बाहर नहीं करनाचाहिये। तथाच ता०१९ अगस्त सन् १८९२ ईसवीको कलकत्तामें एकबड़ाभारी जलसा अर्थात् समाजहुआ और उस में बंगाल के समस्तनामी २ और योग्य पण्डितों से यह प्रश्न पूछागया॥

प्रथम प्रश्न वह मनुष्य जो सहाज में बिना किसी महान पापके करने के कि जिससे वह पतितहोजावै तो आया वह पतित होगा वा नहीं?

द्वितिय प्रश्न--अया वह मनुष्य जो इंगलिस्तान आदि और और अन्य देशों में स्वल्प काल के लिये रहे और निवास करै और कोई महान्पाप न करै जिससे वह पतितहोजावै तो आया वह पतितहोगावा नहीं?

तथाच पण्डितोंने उत्तर दिया॥

प्रथम व्यवस्था-

समुद्रयात्रा की महान् पापों में गणना नहीं है कि जिससे पतितहो जावै और कोई भारी प्रायश्चित्तभी उसके लिये नहीं

है। और कोई प्रमाण नहीं है कि जिस से वह महापाप समझा जावे तो ऐसा मनुष्य जो समुद्र यात्रा करै और कोई बड़ा पाप न करै तो वह पतित नहीं समझा जाना चाहिये।

द्वितीय व्यवस्था-

इंगलिस्तान और दूसरे अन्य देशों में निवास करना भी महान् पापों में नहीं है कि जिससे पतितहो और उसके लिये कोई बड़ा प्रायश्चित्त अवश्य नहीं है और न उसको महान् पाप समझ ने के लिये कोई प्रमाणहै तो ऐसा मनुष्य जो इंगलिस्तान और अन्य देशों में बिना करने किसी महान् पाप के निवास करै तो वह पतित नहीं समझा जाना जाहिये।

इनव्यवस्थाओं पर ७५ पंडितों के हस्ताक्षरहैं और कलकत्ता और नदिया के और शास्त्रियों ने भी इसको स्वीकार कर लिया है। दक्षिण में भी इसबातकी बहसहोरही है। सौ वर्ष हुये कि जब बम्बई से दो ब्राह्मण इंगलिस्तान को गये और दो वर्ष पश्चात् फिर लौटकर आये और जाति में शामिल किये गये। पचास वर्ष हुएजब सितारे से ब्राह्मण इंगलिस्तान गये थे और वे भी जाति में लिये गये सन् १८७० ईसवी में महाराजा हुलकरने गणेश शास्त्रीको इंगलिस्तान भेजाथा और शास्त्रियों से व्यवस्था लियागया। तथाच स्वामी ने जो बड़े शास्त्री दक्षिण के हैं उनको जाति में लेकर उनकी पहुनाई अर्थात् दावत की। बनारस अर्थात् काशीके पंडितों से भी बम्बईवालों ने दरियाफ्त किया और राधाराम शास्त्री और बालशास्त्री ने यह व्यवस्था दिया कि समुद्रयात्रा पंडितों के लिये बहसअर्थात् बाद बिवाद करने की बस्तु नहींहै। यदि सज्जन पुरुष इसबात में सत्य मति नियत करलें कि धर्म्म के लिये समुद्र यात्रा अवश्य है तो हमको कोई उज़र नहींहै सो शैल कान्फरन्ससन् १८६२ ईसवी में महाराजा साहिब माई सोराधिपति की रत्न

किशोर रंग चारलू शास्त्री जीने माईसोरके पंडितोंकी व्यवस्था पेशकी और संस्कृतमें व्याख्यान देकरयह सिद्धकिया कि समुद्र यात्रा में वस्तुतः कोई दोष नहीं है और वेदोंमें भी समुद्रयात्रा पाई जाती हैं तो यदि कोई श्रुति वा पुराण उसके बिरुद्धहोतो वह माननीय नहीं है।

६-

समस्त हिन्दुओं की दशा और उसका सुधार ॥

हिन्दुओंके वर्त्तमान बरताव के विषयमें मारकण्डेय ऋषि ने जो कलियुगकी व्यवस्था वर्णनकी है वह यथार्थ मालूमहोतीहै किकलियुगमें धर्म्मका केवल चतुर्थांशशेष रहजावैगा। मनुष्यों की आयुबलबुद्धि और तेजसबक्षयहोजावैगालोगोंकीप्रकृतिमिथ्या भाषण और छल और कपटकी होजावैगी। सत्य कीहानि होगी और उससे लोगोंके बल और आयुष कमहोगा और आयुः क्षीण होने से वे बहुतसी विद्या न पढ़सकैंगे। और विद्या की कमीके कारणवे ज्ञानसे हीनहोंगे। और लोभ और क्रोधमें पड़कर उनके बशी भूतहोजावैंगे ऐसी २ खाने पीनेकी बस्तुओं का प्रचारहो जावैगा जिनका शास्त्र में निषेधहै। ब्राह्मण वेदों को न पढ़ैंगे न अपने वर्णाश्रम के कर्म्म करेंगे। व्यर्थ बार्त्ता में अपना समय खोदेवेंगे। यज्ञ और हवनसे अज्ञरहैंगे संसार में लोभ और मोह फैलजावैगा। खान पान की व्यवस्था नहीं रहैगी। लोगों को अपने धर्म्म कर्म्म से सर्वथा यह ज्ञान नहोगा और और अपनी इच्छानुसार बिचरैंगे। प्रत्येक मनुष्य को अपनी आजीवकाकी चिन्ता रहैगी। लोगों के चित्त पर सदैव काल चिन्ता बनी रहैगी बागों और खेतों में पैदावार कमहोगी। लोग निर्धन होजावैंगे। दुर्भिक्ष और अनाजकी गिरानी अर्थात् मकराई निरन्तर बनीरहैगी। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अपने धर्म्म कर्म्म से पतितहोकर शूद्रों के सदृश होजावैंगे। प्रत्येक मनुष्य एक

दूसरे से बैर विरोधरक्खेगा-लोग ऐसे बैलोंको खेतों में लगावैंगे जो कृशतनु और दुर्व्वलहों और खेतीके योग्य नहों । लोगों के बरतावपर कोई रोकटोक नहीं रहैगी । न एक दूसरे की रियायत और सहायता करैगा । पांच छः बर्षकी लड़कियों के सात आठ बर्ष के लड़कोंसे बच्चे उत्पन्नहोवेंगे । व्यापारमें लोग एक दूसरे कोधोका देवैंगे । ब्राह्मण शूद्रों के नौकर होवैंगे । और उनकी आज्ञा का पालन करेंगे सनातन उत्तम धर्म्म को छोड़कर लोगपाषाण और अस्थियों कापूजनकरैंगे । और सुहृदामित्र और बान्धवद्रव्यकेही सगेहोवेंगे निदान कलियुग में बहुतसी तबाही आवैगी । और एकदूसरेका साथी नरहैगा । (महाभारत वनपर्व्वअध्याय १९०) इस में कोई सन्देह नहीं है कि कवि जनों के वाक्यों में क्वचित् जल्पनाहै । परन्तु फिरभी हिन्दुओं में आजकल ऐसीबस्तुओंके खानेपीनेकाप्रचारदिनदिनप्रतिअधि कहोताजाता है किजिसको शास्त्र और बुद्धिदोनों निषेध करते हैं । लड़के और लड़कियां सातआठबर्षकी अवस्था में नौ बच्चे उत्पन्न नहीं करते परन्तुबारह तेरह बर्ष की अवस्था में तो अवश्यही उत्पन्न करतेहैं । लोग अपने धर्म्म और कर्म्मसे जैसा कि मारकण्डेय ऋषि ने कहा है बहुधा अज्ञ हैं । और समस्त लोग अन्य मत और धर्म्म और अन्य बिद्या से अपनी बिद्या और मत की अपेक्षा अधिक जानकार हैं और उनकोही अच्छा समझते हैं हिन्दुस्तान की कारीगरी की बस्तु हिन्दुस्तानियोंकी अपेक्षा अंगरेजों को अधिक पसन्दहैं । अंगरेजी पोशाक इत्यादि अधिक प्रचलित होती जातीहैं । प्रत्येक बस्तु में जहां उलट पुलट न होनी चाहिये वहां उलट पलट करके लोग अपनी हानि करते हैं यहां तक कि अंगरेज़ भी जिन की देखा देखी वे करते हैं उनको अच्छा नहीं समझते । एक बड़े आला अफसर अर्थात् बड़ी पदवी के अधिष्ठाता ने मुझ से एक दिवस यह कहा कि कोई २ हिन्दुस्तानी जो इङ्गलिस्तान हो आये थे उन्हों ने

उन के रोबरू ऐसा बर्त्ताव किया कि उन को करना उचित नहीं था । तथाच साहिब ने उत्तर दिया कि आपने जो असभ्यता यूरोप में सीखी है उसका आप इस सभ्यता के देश हिन्दुस्तान में प्रचार न करें। अत एव पक्ष पातता बिहीन होकर हिन्दुओं को यह बिचार करना चाहिये कि आखिरको तो हिन्दुस्तान के ऋषि और मुनि जिन्हों ने यहां के लोगों के लिये नियम और धर्म्म की व्यवस्था नियत की वे यहां की दशा से और लोगों की प्रकृति से हाल के लोगों से कुछ तो अवश्य अधिक जानकार थे इसलिये यद्यपि बर्तमान शिक्षा के निमित्त उन्नति बर्त्तमान समय की आवश्यक है पर हिन्दुओं के अपने धर्म्म वा अपने नियमोंकी शुभ बातों को नहीं छोड़ना चाहिये। हम लोगों में उन्नति के चिन्ह कभी नष्ट नहीं हुए केवल कुछ दिन तक हमारी उन्नति में आक्षेप आगये कि जिन से वह रुकगई अब वह आक्षेप कम होते जाते हैं और समय आगया है कि उन कोमों की भांति कि जिन की बिद्या और सभ्यता को हम पढ़ते हैं वा जिन के मत और धर्म्म की प्रशंसा करते हैं उन्नति करें। यह उन्नति केवल उस समय हो सक्ती है कि जब पुराने समय की रिवाजों और रस्मों को उतना किजो बर्त्तमान समय के अनुसार हों स्थिर रक्खा जावे और जो अनुसार नहीं उन में संशोधन किया जावे। प्रत्येक बर्ण की बुराई भलाई स्वयम् उस बर्ण के हाथ में है। और किसी बर्ण की उन्नति उस समय तक नहीं होती कि जबतक वह स्वयम् पुरुषार्थमें कटिबद्ध होकर यथा वत् उद्यम और परिश्रम नकरै। हिन्दुओं में धर्म्म और चित्त शुद्धि शुभाचर्ण और पुण्य दान और खैरात करना और अपने धर्म्म पर और लोगों की अपेक्षा अधिक आरूढ़ होना सनातन से चला आता है। और बुरी से बुरी दशा में भी ये बातें स्थिर रही हैं । केवल यह हुआ है कि सत्य धर्म्म की जगह इस समय धर्म्म का अभिप्राय केवल लकीर पीटनाही समझा

गया है। और बाल्मीक और व्यास और वशिष्ठ और मनु और श्री कृष्ण और शंकराचार्य्य के उपदेश वा राम कृष्ण अर्जुन इत्यादि के चरित्र इतनी व्याप्ति नहीं करते कि जितनी बहुत से रिवाज बुद्धि बिरुद्ध और हानि कारक करती हैं। उपनिषदों में लिखाहै कि सत्य बोलो धर्म्म पर चलो। और भगवद्गीता में लिखा है कि जैसी जिसकी श्रद्धा होती है वैसाही वह होताहै क्योंकि आदिमी श्रद्धासेही बना हुआ है। इसलिये जब तक कि हम में सत्य और धर्म्म दोनों पूरे २ नहोंगे उन्नति नहीं होसक्ती गवर्नमेन्ट केवल बहुत स्वल्प सहायता करसक्ती है इसके बिरुद्ध असली उन्नतिकेलिये स्वयम् लोगोंको पुरुषार्थ में कटिबद्धहोना और सच्चेमनसे उद्यम और परिश्रम करनाचाहिये जोहमको फल दायकहोगा--भगवद्गीतामें श्रीकृष्ण महाराज अत्युत्कृष्टताकेसाथ यह वर्णन किया है कि कर्म्म के न करने से मोक्ष नहीं होती न उसके छोड़ने से सिद्धि होती है अतएव अपने नियत कर्म्मकरो क्योंकि कर्म्म का करना उसके न करने से श्रेष्ठ है। केवल वे लोग कि जो आत्म ज्ञानीहैं और अपनी आत्मा में आत्माही से सन्तुष्ट हैं उनको किसी कर्म्म की आवश्यकता नहीं है। परन्तु सब ऐसे नहीं हैं इसलिये सम्पूर्ण लोगोंकेलिये कर्म्म करनाही अवश्य उचित है। सात्विक कर्म्म वह होताहै कि जो अपने धर्म्म के पूरा करने के लिये बिना उस कर्म्म फल की आकांक्षा के कियाजावै। वह कर्म्म कि जो अदेश कालमें कियाजावै वह तामसी होता है। कर्म्म का सच्चा त्याग यही है कि कर्म किया जावै परन्तु उसके फलकी कांक्षानहो उसका झूठा त्याग यह है कि उसको देहके कष्ट वा परिश्रम के कारण छोड़दिया जावै। अपने २ कर्म्म के करने सेही मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होती है। जिस परमात्मा से यह सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्न हुई है। और जो इस समस्त सृष्टि में सर्वत्र व्याप्तहै उसकी अपने कर्म्म करने सेही पूजा करके मनुष्य शुद्धिको प्राप्त होताहै। अपना धर्म्म

यदि उसमें कोई गुण न भी हो दूसरे के धर्म्म से श्रेष्ट है अपने धर्म्म को करने से किसी को हानि नहीं होती । चाहै अपने धर्म्म में कोई दूषणही दृष्टि पड़ताहो तो भी उसको न छोड़ै । क्योंकि समस्त बस्तु आरम्भ में सदोष दृष्टि पड़तीहै जैसे कि अग्नि सुलगाते समय धूम से आवृतहोताहै (भगवद्गीता अध्याय १८) इसलिये जब तक कि मनुष्य परिश्रम न करैगा कुछ नहीं होसक्ता । परमेश्वर की पूजा यही है कि अपना कर्म्मकरै अपने कर्म्म करनेवाले को दोष नहीं होता । वशिष्ठजी ने रामचन्द्रजी से यही कहा है कि हे रामचन्द्र इससंसारमें सम्पूर्ण बस्तु सदैव भली भांति कियेहुए उद्यम और परिश्रम से सबको प्राप्त होसक्ती है सच्चा पुरुषार्थ वही है कि जो मनसे अच्छे महात्माओं के उपदिष्ट मार्ग पर कियाजावै वही पुरुषार्थ सिद्ध होता है । जिस किसी बस्तुको कोई मनुष्य चाहताहै वह उसको उसके परिश्रम से प्राप्त होसक्ती है । परिश्रम और उद्यम बिना कोई बस्तु प्राप्त नहीं होसक्ती परिश्रम से पर्ब्बत भी पृथ्वी के बराबर होजाते हैं । देवताओं को उनकी पदवी और प्रतिष्ठा परिश्रमसेही मिलती है । एक मनुष्य अपने परिश्रम से विष्णु के पदकोप्राप्त हुआ है । और दूसरा शिवके पदको पहुंचा है । तीसरा ब्रह्माहो गया है चौथे ने इन्द्रकी पदवी प्राप्तकी है । बिना परिश्रम के सैकड़ों राज्य मेरे देखतेही देखते नष्टहोगये । परिश्रम से सब कुछ प्राप्तहोसक्ता है और स्थिर रहसक्ता है । पुरुषार्थ से पूर्ब जन्म का संस्कार भी बदला जासक्ता है । पूर्ब जन्म के संस्कारों का इस जन्म के शुभ कर्मोंकेसाथ तोल और मुकाबलाहै अर्थात् एकओर पूर्ब जन्म के संस्कार और दूसरी ओर इस जन्म के शुभ कर्म्म हैं । इसलिये मनुष्य को उचितहै कि दांतों से दांत पीसकर पूर्ब जन्म के बुरे संस्कारों को इस जन्म के शुभ कर्म्मों से दूरकरै । वे लोग जो हिम्मतहारकर पुरुषार्थ नहीं करते वे पुरुष पशु हैं । वे नरक के कृमिहैं । वे लोग जो प्रारब्ध

पर भरोसा और बिश्वास करके सन्तुष्ट होकर बैठते हैं अपने द्वारसे लक्ष्मी को धक्का देते हैं बिरुद्ध इसके जो प्रारब्ध को जीत लेनेका साहस करते हैं वे उसको जीतलेते हैं और अपनी कामनाको इसलोक और परलोक में पूरा करते हैं। (योगवाशिष्ठ मुमुक्षु प्रकर्ण अध्याय ४। ५)॥

गौतम बुद्धसे पूछा गया कि जीत किसकी होती है और हार किसकी होती। उत्तरदिया कि धर्म्मपर चलने वालेकी जीतहोतीहै उससे ग्लानि करनेवाले की हारहोती है। वह मनुष्य जो बुरे मनुष्यों के संगति में रहताहै जो प्रमादी है जिसमें साहस नहीं है उसकी सदैव हारहोती है। (प्राभूसुत्त २। ४। ६)॥

मेरा इङ्गलिस्तान और यूरोपकाभी तजरुबा यही है कि किसी वर्ण में बिना प्रयत्न और परिश्रम यथावत् के सच्ची उन्नति नहीं होसकी है। और पहिले इससे कि कोई वर्ण सच्ची उन्नति करे उसको न केवल पुलिटिकैल अर्थात् देशोन्नति करनी अवश्यहै किन्तु उसके स्वभाव वर्त्ताव और चाल चलन और उसके लोगों का शारिक वल और उसका द्रब्य और सबसे अधिक उसके धर्म्म में उन्नति होनी चाहिये। यूरोप में मैंने प्रत्येक जगह यह बातपाई कि काम बांटा जाताहै न केवल बड़े कार्य्यों में किन्तु छोटे २ कार्य्यों में भी लोग एक कामके चाहे वह देशी उन्नति से सम्बन्ध रखताहो वा किसी उद्यम वा हुनरसे सम्बन्ध रखताहो एक भागसे लेकर उसके सम्पूर्ण भेद भावको जान जातेहैं। देशी कार्य्यों में भी जिन २ लोगों से मुझको बार्त्तालाप का सावकाश मिला उनकी बार्त्तासे भी पाया गया कि उन्हों ने देशोन्नति सम्बन्धी एक कार्य्य को ही अपने हाथ में लेकर उसे समाप्ति तक पहुंचाया है। इसलिये यदि हम भी उन्नति करना चाहते हैं तो हमको भी इसी प्रकार प्रयत्नकरना उचितहै। अर्थात् यह कि प्रत्येक मनुष्य का सम्पूर्ण काम देशोन्नति के विषय करना कुछ फलदायक न होगा। किन्तु एक २ का उसके एक २ भागको अपने हाथ में लेना

अधिक फलदायक होगा। बहुतसे सुशिक्षित और सभ्य भाइयों का केवल एक काम देशोन्नति वा एक पेशे कोही अपने ज़िम्मे लेना समस्त देशकी उन्नति का कारण नहीं होसक्ता। किन्तु बहुतसे लोगों का बहुतसे पेशों को और देशोन्नति की शाखाओं को अपने जिम्मे लेनाही ऐसी उन्नतिका कारणहोगा-इसलिये जबतक कि हमारे सुशिक्षित सभ्य लोग इस बातपर ध्यान करके कि कौन २ बातों में संशोधन होनाचाहिये एक २ बातको पृथक् २ अपने जिम्मे न लेवेंगे और उसको उद्यम और परिश्रम के साथ पूरा न करेंगे तबतक हमारे यहां उन्नति नहीं होसक्ती। यथा सोशेलरिफार्म्म अर्थात् सामाजिक संशोधन का बिषय ऐसा है कि जो जहांतक शीघ्र बनसकै ठीकहोना उचितहै। क्योंकि इस बिषयके सम्पूर्ण होने सेही प्रत्येक मनुष्यको उतना लाभहोगा कि जो किसी पोलिटिकेल संशोधन से नहीं होसक्ता परन्तु शोक यहहै कि सिवाय थोड़े से जनों के न केवल परिश्रम और उद्यम करने वालेही कमहैं किन्तु बहुत से लोग व्यर्थ उन रिवाजों की जो बुद्धिविरुद्ध और शास्त्र बिरुद्धहैं पुष्टि करने पर और मण्डन करने पर उद्युक्तहैं कदाचित् वे लोग यह नहीं समझते कि वे ऐसा करने से स्वयम् अपनाही गला काटते हैं। कदापि उनके चित्तमें यह बिचारनहीं है कि इङ्गलिस्तान के लोग जिन से वे अपनी पुलिटिकेल उन्नति की आशा करते हैं उन के साथ कभी हमदर्दी और सुहृदता न करेंगे न उनके चाहना को पूरा करैंगे। जब तक कि वे अपने घरों में वह आवश्यक संशोधन जो बुद्धि और धर्म्म दोनों के अनुकूल है न करैंगे। इस समय सोशेलरिफार्म अर्थात् सामाजिक संशोधन का बिषय हिन्दुस्तान मेंही नहीं है किन्तु इङ्गलिस्तान में भी इस पर बादानुबाद हो रहा है। वहां के मनुष्य और स्त्रियों की आखें हिन्दुस्तान की स्त्रियों की दशा और हिन्दुओं की सोसाईटी अर्थात् समाज की दशा पर लगी हुई हैं और यदि वे लोग गव-

न्मैंगट को दबावेंगे तो कोई गवन्मैंगट उनकी बातको न टालैगी। यदि ऐसा होगा और गवन्मैंगट हुकुम अर्थात् आज्ञा से संशोधन हमारे उस सोशेल दशा में करै गी जिस को हम स्वयम् न-कर सकैं तो हमाराही दोष है। अत एव हमको उचित है कि गवन्मैंगट को ऐसा अवसर न दें। किन्तु स्वयम् अपनी दशा को अपने धर्म्म और अपने पुराने ऋषियों के उपदेशानुसार और बर्णों की अपेक्षा में उन्नति दवा उचित रीति पर करनेके योग्यहों। रोग के नाश करने के लिये ओषधि और अज्ञान और अविवेक के नाश करने के लिये विद्याहोती है। अधर्म्म का नाश धर्म्म से होता है। कोई बस्तु कैसीही कठिनहो परिश्रम और प्रयत्न से प्राप्तहो सक्ती है। कोई पाप ऐसा नहीं है कि जो दूर न हो सकै। मनुजी ने कहा है कि पञ्चभूत अर्थात् पृथ्वी अप तेज बायु आकाश से बना हुआ जो दुःख की खान यह शरीर है उससेभी ज्ञान करके मोक्ष होजाता है। इस लिये क्या कारण है कि विद्योपार्जन और ज्ञान वृद्धि से इस संसार के दुःखों का नाश न हो और हम लोगों का इससे अधिक क्या धर्म्म हो सक्ता है कि ऐसे कर्म्म करैं कि जिस से कभी लज्जित न हों और जिस कर्म्म के प्रयोग से हमारे चित्तको सुख और आनन्द प्राप्त हो और इस से अधिक क्या उत्तम कर्म्म होसक्ता है कि हम अपने गृहों में आवश्यक संशोधन करैं। और अपने आचरणों को शुद्ध करैं और अपने रिवाजों को ठीक करैं॥

डेन्टी इटली के एक प्रख्यात कविका वाक्य है कि मनुष्य के जीवन के पांच बिभाग होते हैं प्रथम एकबर्ष से दशबर्ष तक की अवस्था बच्चपन जिसमें उसके शरीर में जीव पड़ता है। दशवर्ष से पच्चीस वर्षतक युवा जिसमें उसकी जान पुष्टि पकड़ती है। २५ वर्ष से ३५ और ४५ वर्ष तक तरुणाई अर्थात् जीवित का सारांश कि जिसमें मनुष्य को उचितहै कि अपने समय को अच्छी प्रकार खर्चकरै और कमालको पहुंचादे। ४५ वर्ष से ७०

वर्ष की अवस्था तक वृद्धावस्था कि जिसमें मनुष्य को उचितहै कि अपने जीवित के असली अभिप्राय की ओर अर्थात् परमेश्वरकी ओर चित्त लगावै और ७० वर्ष से ८० वर्ष पर्यन्त जो अति-ही वृद्धावस्था और जीर्णकाल होताहै उसमें उसको उचितहै कि शान्ति के साथ व्यतीतकरै तथाच डाक्टर हफलेराड जर्मानी के एक प्रख्यात डाक्टर ने अपनी किताब "तरीक़े दराजी उम्र" अर्थात् "दीर्घायु मार्ग" में यह लिखा है कि यदि किसी मनुष्य में ये चिह्न पाये जावैं कि उसका देहका मध्यम कदद्हो अर्थात् न बहुत दीर्घ हो न छोटा हो समस्त अङ्ग अङ्ग अर्थात् देहके प्रत्येक विभाग गठे हुएहों बदन पर अर्थात् चहरेपर उचित अरु-णाईहो केश क्वचित् भूरेहों देह का चर्म्म दृढ़हो परन्तु खुरखुरा नहीं हो। उस का शिर अधिक बड़ा न हो स्कन्ध गोलहों ग्रीवा अधिक लम्बी न हो। उदर बढ़ा हुआ न हो। भुजा वि-शाल हों परन्तु हाथों में रेखा बहुत गहरी न हों पैर क्वचित मोटे हों और टाँगें दृढ़ और गोल हों। वक्षःस्थल चौड़ा और महरा-बदार हो वाणी दृढ़ हो देर तक अपने श्वास को रोकसक्ता हो। निदान प्रत्येक भाग देह का योग्यताके साथहो। पञ्चप्राण ठीकहों नाड़ी बराबर चलती हो पाचन शक्ती में किसी प्रकार का बिकार न हो। भोजन करने के पश्चात् चित्त प्रसन्न हो अधिक रहै तृषा नहो चित्त पर स्वस्थता हो उद्वेग नहो। क्रोध बैर लालच नहो किन्तु बदन अर्थात् चहरे पर प्रसन्नता और प्रेम दिखाई पड़ता हो मन बश में हो जिस समय चाहै काम की ओर चित्त लगावै। जिस समय चाहै ध्यानकी ओर चित्त लगावै। प्रत्येक मनुष्य से प्रीति रखताहो। अधिक लालची नहो। न कोई जज़बा अर्थात् प्रकृति वा चित्त की वृत्ति ऐसी व्यापक न हो कि वह उसके चित्तकी स्वस्थता को नष्ट करदे। ऐसा मनुष्य मनुष्य का नमूना होगा। और उसके दीर्घायु होने में कोई संशय सन्देह नहीं है। तथाच इसदेश में

बहुतसे लोग जो होगये हैं और जिनकी पूजा कीजाती है इस प्रकारके थे ॥ ——

वाल्मीकजी ने नारदजी से पूंछा कि आजकल इस लोक में गुणवान् और वीर्य्यवान् धर्म्मज्ञ कृतज्ञ सत्यवादी दृढ़व्रत अपने चरित्र से सावधान प्राणी मात्रपर दया करने वाला बुद्धिमान बलवान् प्रियदर्शी मनको बश में रखने वाला। जित क्रोध तेजस्वी। निर्वैर। जिस के भय से युद्ध में देवताभी डरें ऐसा कौन आदमी है। तथाच नारदजी ने उत्तर दिया कि ऐसे गुण एक मनुष्य में होने असम्भव से हैं परन्तु मैं सोचकर तुमसे कहता हूं तथाच विचार करके नारद जी ने उत्तर दिया कि रामचन्द्र जी मेंही ऐसे गुण हैं ये रामचन्द्र जी इक्ष्वाकु के बंश में उत्पन्नहुए और लोगों में राम के नाम से प्रख्यात हैं। अपने मन को जीतनेवाले बलवान तेजवान धैर्य्यवान जितेन्द्रिय बुद्धिमान नीतिवान प्रियवादी शत्रुनाशन वृषभस्कन्ध प्रलम्बबाहु कम्बुग्रीव विशाल वक्षःस्थल और बड़े शिरवाले दीर्घ धनुषधारी दृढ़ देहवान अजान बाहु जिन के भाल और मस्तक सुशोभित। जिनका अमित पराक्रमहै। जिन का शरीर योग्यता से बनाहुआ है जो सदा सर्वदा एकरस रहते हैं। जिनका रंग सुहावना है जो प्रतापवान और पीन वक्ष हैं जो बिशालनेत्र और लक्ष्मीवान हैं जिन में सर्व शुभलक्षण हैं जो धर्म्मज्ञ हैं। जो सत्य संकल्प हैं जो प्रजा के सुख देनेवाले हैं जिनमें यश ज्ञान पवित्रता समाधि और इन्द्रियों का निरोध है जो ब्रह्माकेसमान धर्म्मकेरक्षकहैं जो वेदऔर वेदांगके वेत्ता हैं और अस्त्र शस्त्रज्ञ हैं। सर्व शास्त्रार्थ के ज्ञाता स्मृतिवान प्रताप वान सब लोगों के प्यारे। कभी दीन अर्थात् दुःखी नहीं होने वाले साधु और चतुर सनातन सज्जनों से घिरे रहने वाले। जैसे कि नदियां समुद्रमें जातीहैं समुद्र के समान गम्भीर हिमगिरिके सदृश धैर्य्यवान विष्णु के से पराक्रम वाले चन्द्रमा

के समान सुन्दर प्रलयकालाग्निवत् क्रोधवान । पृथ्वी के सदृश क्षमावान कुवेरकासाधन रखनेवाले परन्तु उदारके साथ व्यय करने वाले सत्यभाषण में धर्म्मराज के समान ऐसे श्रीरामचन्द्रजी हैं । (बालमीकीयरामायण बालकाण्ड सर्ग १ श्लोक १ से लेकर १६)

इसी प्रकार श्रीकृष्ण महाराज के बल धैर्य्य तेज पराक्रम रूप गुण इत्यादि से प्रत्येक मनुष्य ज्ञात है । परन्तु उनके प्रशंसा में जो महाभारतमें एक प्रसङ्ग में लिखाहै वह यहांपर लिखा जाता है । जिस समय कि राजा युधिष्ठिरने राजसूय यज्ञ किया और यह वादानुवाद था कि सबसे पहिले किस की पूजाकीजावैं तो भीष्मजी ने यह कहा कि हमने श्रीकृष्ण जी की पूजा उन के यश शूरता और जयका वृत्तान्त विशेष जानकरकेही की है । ब्राह्मणों में तो ज्ञानसे वृद्ध क्षत्रियों में सबसे बली वैश्यों में बहुत धनधान्य वान और शूद्रों में केवल अवस्थाके वृद्धही पूजे जाते हैं । श्रीकृष्ण महाराज की पूज्यताके विषयमें वेद वेदाङ्ग विज्ञान और अधिक बल ये दोनों मिलगये हैं क्योंकि मनुष्य लोकमें श्री कृष्ण महाराज सा गुणी दूसरा कौन विद्यमानहोगा दान दाक्षिण्य, शास्त्र ज्ञान शूरता लज्जा कीर्ति अच्छी बुद्धि बिनती श्री धृति तुष्टि यह सब गुण श्री कृष्ण जी हीमें सदा प्रतिष्ठितहैं सो हे भूपो जो हमने प्रथम पूजा की है आपसब मानलीजिये महाभारत सभापर्व अध्याय ३८ श्लोक १५ से लेकर २१ तक महाभारत सभापर्व अध्याय ३८ श्लोक १५ से लेकर २१ तक) —

हनुमानजी के बल और पराक्रमको भी प्रत्येक मनुष्य जानताहै । एक छोटीसी बात यहहै कि जिस समय भीम उत्तरा खण्डको गया और उसके गरजने से सिंहभी भाग गये तो उसने मार्ग में हनुमान को पड़ेहुए देखा हनुमानजी ने अपना देह मार्ग के वार पार फैलारक्खा था । भीमने हनुमान से टांग उठालेनेको

कहा। परन्तु हनुमानजी ने कहा कि यदि तुम में कुछ बल हैतो तू उठाकर चलाजा परन्तुभीमने अत्यन्तबल पराक्रम किया परन्तु टांग न उठसकी अन्तमें हार कर भीमने हनुमान से पूंछा कि तू कौनहै उसने उत्तर दिया कि मैं हनुमान हूं और फिर उसको धर्म्म का उपदेश किया और कहा कि आज तेरे कारण फिर मुझको पहिली कथा याद आगई तथाच फिर हनुमानजी ने भीमको रामायणकी सम्पूर्ण कथा सुनाई और सुनाकर यह कहा कि जबरामचन्द्र जी अयोध्या में पहुंचगये तो मैंने उनसे यह बरदान मांगा कि जबतक आपकी कथा और कीर्ति पृथ्वी पर रहै तभीतक मैं भी जीतारहूं तबरामचन्द्रजी ने मुझकोवह वरदान दिया और कहा कि ऐसाही हो । रामचन्द्रजी ग्यारह सहस्र वर्ष राज्यकर के स्वर्ग को चलेगये मैं अभीतक यहां पड़ा हुआ उनके गुणानुवाद गाताहूं । तबभीम ने हनुमान से कहा कि तुमतो मेरे भाई हो अब मुझको वहरूप दिखलाइये कि जिससे आपने समुद्रका लंघन कियाथा हनुमानने हँसके उत्तर दिया कि उसरूपको देखनेमें तुम अथवा और कोई पुरुष समर्थ नहीं है क्योंकि वह समय और वह अवस्था और थी वह सब अबनहीं हैं । सत्ययुग में त्रेता में तथा द्वापर में और ही होजाता है यह समय नाशहोने का है अबहमारा रूप वैसानहीं है पृथ्वी नदी वृक्ष पर्व्वत सिद्ध देवता और ऋषि लोग युग युग में समय के अनुसारबर्त्ताव करते हैं समय के अनुसार ही बल और शरीर उत्पन्न और नाशहोते हैं उस बल और शरीर को धारण करके अब हम नहीं रहते हैं इस युगके अनुसार बर्त्ताव करते हैं क्योंकि काल बड़ा कठिन दुस्तर है इससे तुम उसरूपको देखनेकी इच्छामत करो । भीम बोले कि तुमहमको युगों की संख्या और उनके अलग २ धर्म्म उससमय के पुरुषों का वीर्य्य कार्य्य और सुख दुःखों का वर्णन कहो । हनुमानबोले कि हे तात सबसे पहिले कृतयुग

(सतयुग) था उसमें जो पुरुष उत्पन्न होते थे वे सब कृतार्थ ही थे इसीसे उसका नाम कृतयुगथा वहसब युगोंमें उत्तमथा उसमें सबलोग सनातन धर्म्म ही को करते थे उस युगमें कोई धार्म्मिक दुःखी नहीं होताथा और न किसी की सन्तान मरती थी न देव दानव यक्षराक्षस गन्धर्व और सर्प थे उस सत्य युगमें बेचना और लेना भी नहीं था न ऋक् यजु और सामवेदोंके वर्ण थे न पुरुषों की कोई क्रियाथी । उसयुग में न कहीं धर्म्म न संन्यास था उससतयुग के आदि में न कहीं रोग न इन्द्रियों के बलकी हानिथी न कोई किसी का बैर करताथा न कोई किसी को रोताथा न किसी को अभिमान वा विकार था न कोई किसी से लड़ताथा न किसी को किसी से लड़ाई झगड़ा होताथा न कोई किसी से वैर करताथा न कोई आलसी और न कोई चुगली करनेवाला था उस समय में भय न दुःख न ईर्षा और न डाहथा । इसी से योगीश्वर लोग परम ज्ञान को प्राप्त करके मोक्षको पाते थे । उससमय सब जगत्की आत्मा नारायणका स्वेत रंग था उससतयुग में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों के चिन्ह अलग २ थे सबलोग अपना २ कर्म्म करते थे सबलोग समान आश्रय समान आचार समान ज्ञान समान कर्म्म और समान धर्म्मवाले थे । सबलोग एकही मन्त्र और एकही क्रिया से एकही देवकी उपासना करते थे अलग २ धर्म्म होनेपरभी सब लोग एकही वेदके आश्रय से एकही धर्म्म को करतेथे चारोंआश्रमों के उचित कर्म्म करके औरसमय के अनुसार धर्म्म करके सबलोग मोक्षको प्राप्त करते थे । सतयुग में केवल आत्म योगही धर्म्म था और उसयुगमें चारों वर्णों का सनातन धर्म्म चारों चरणसे पृथ्वी में था । हे तात यह सतयुग रजस और तमोगुण से रहित था सबलोग ब्रह्मनिष्ठहोतेथे और ज्ञान ही उनका परमपुरुषार्थ था पृथक् २ वर्ण और जातिनहीं थीं केवल एकही वेद था लोग निष्काम कर्म्म करते थे और

ब्रह्मज्ञानी होते थे। ये हमने सतयुगके धर्म्म कहे। अब त्रेता-युगके सुनो त्रेतायुगका मुख्य धर्म्म यज्ञकरनाथा इस में एक चरण धर्म्म कमहोगया था और विष्णु कारंग लालहोगयाथा सबपुरुष क्रिया और धर्म्म करते थे इसी से सत्य वक्ताहोते थे उस युगमें अनेक प्रकारकी क्रिया धर्म्म और यज्ञ होते थे त्रेता में संकल्प सिद्धहोते थे क्रिया और दान के फलभी ठीक २ होते थे उस त्रेता युग में सब लोग अपने २ धर्म्म की क्रियाओं को करते थे। सब जप और दान में निपुण थे सत्य से कभी भी नहीं हटते थे। लोग धर्म्म कर्म्म फलकी इच्छा से करने लगे लोग तप और दान में बराबर लगे रहते थे चारों बर्ण आ-श्रम के कर्म्म जारी थे। द्वापर युग में धर्म्म के दो चरण रह गये थे बिष्णु का रङ्ग पीला और उसके चार भाग हो गये थे इसी द्वापर युग में कोई द्विवेदी कोई त्रिवेदी कोई एकवेदी और कोई एकदम से वेद शून्य होगयाथा। इसप्रकार अलग २ शास्त्रहोने से सबकी क्रिया भी अलग २ होगई थी। सब लोग तप और दान से प्रवृत्त होगये थे उस समय रजोगुण अ-धिक होगयाथा कोई एक वेद को भी नहीं पढ़सक्ताथा इसीसे बेदों के अनेक टुकड़ेहोगये इस युगमें सतो गुणका नाशहोगया था इसी से कोई २ सत्य बोलने वाला रहगयाथा सत्य नाश होने से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होगये इसी युगमें प्रारब्ध बश से अनेक काम आदि उपद्रव उत्पन्न होगये। उनसे अत्यन्त पीड़ितहोकर कोई पुरुष तपस्या कोई स्वर्ग और काम सिद्ध होने के लिये अनेक प्रकार के यज्ञों को करने लगे लोगों की बुद्धि कमहोगई। और सत्य से गिर गये इसी प्रकार द्वापर युग में प्रजा से धर्म्म नष्ट होगया। अब हम कलियुग के धर्म्म क-हते हैं। कलियुग में धर्म्म का एकी चरण शेष है। इस युग में बिष्णु का रङ्ग काला होगया है आगे वेद की क्रिया और धर्म्म सब नष्ट होजायंगे छःप्रकार की इति (अति वृष्टि अना वृष्टि

मूँसे टीड़ी राजों के युद्ध आदि) होंगे अनेक प्रकार के रोग आलस्य क्रोधादिक दोष उपद्रव मानसिक दुःख और भूख प्यास अधिक होजायँगे युग बदलनेसे धर्म्म बदलताहै धर्म्म बदलनेसे लोग बदलजाते हैं। लोक के नाश होनेसे जगत्के चलाने वाले नियमोंका नाश होजाताहै यहसबहोने से प्रार्थनाभी निष्फलहो जातीहै। इसकलियुगको आये थोड़ाही समय बीताहै अभीयह युगके बदलनेका समयहै हेतात तुमजो मेरे उसरूपको देखनेकी इच्छाकरतेहो ऐसे निरर्थक कामके करनेकी कौन पुरुष इच्छा करताहै। तुमने जोहमसे युगोंका नियम पूँछाथा सोहमने तुम से सबकहातुम्हारा कल्याणहो। भीमसेनबोले किहम आपके पहिले रूपकोबिनादेखे किसी प्रकारसे नहींजायँगे यदिआपहमारे ऊपरकृपा करतेहोतोउस रूपको हमेंफिरदिखलाइये। मैंजबतक आपका वहरूप न देखलूंगा तबतक नहीं जाऊंगा -भीमसेन के ऐसे बचन सुनकर बानर राज हनुमान् ने हँसकर उनको वह रूपजो उन्होंने समुद्र लांघते समय बनाया था दिखलादिया भीमसेन हनुमान् का वहअद्भुत भयानकरूप देखकर बहुत आश्चर्य किया और भौंचक्का होकर नेत्रों को बन्दकरलिया तदनन्तरभीम प्रसन्नहोकर कहने लगे कि रामचन्द्रतो क्या यदि आप अकेलेही रावणसे युद्धकरते तो अपने बाहुबलसे समस्त लंकाको बाहन और वीरों के सहित नाशकर सके थे। (महाभारत बनपर्व अध्याय १४८। १४६। १५०) बिचारणीय बातहै कि जब उनलोगों के बलकी वृद्धावस्था में यह दशाथी तो युवावस्था में क्या दशाहोगी॥

अबगौतम बुद्धका बर्णन सुनिये। गौतम बुद्ध अनुमान ६२० वर्ष पहिले ईसा के उत्पन्नहुयेथे और ५४३ बर्ष पहिले ईसाके मरे। उनका पिता शुद्धोदननाम कपिलबस्तु देशकाराजा था उनकी माताकोलियानके राजा की पुत्री थी जिस समय यह पुत्रउत्पन्नहुआ उसकानाम सिद्धार्थ रक्खागयाऔर उसको शाक

सिंह भी कहते थे। और जब उसको ज्ञानहुआ और ज्ञानोपदेश किया तब उसका नाम बुद्धहुआ १८ वर्षकी अवस्थामें उसका बिवाह हुआथा और दश वर्ष पश्चात् बिवाह के उसने अपने घरबार राजपाट को छोड़कर आत्मज्ञानकी प्राप्तिके अर्थ उसके खोजने को निकला कहतेहैं कि एकदिन सिद्धार्थ मार्ग में जाता था कि साम्हने से उसने एक वृद्धरोगी आदिमी को जिसकादेह थर२ कांपताथा जिसके दांत सब गिरगये थे जिसके शरीर को रोगोंने अपना घरबना लियाथा सामनेसे आतेदेखा वह भीख मांगता था तथाच उस राजपुत्रने अपने सारथीसे कहा किक्या इस बस्तुका जिसको मनुष्य कहते हैं यही परिणाम है ? क्या रोगी ऐसा भयानक ऐसा दुर्बल और निर्ज्जीव यह शरीर सब काहोजावैगा ? इसपर सारथीने उत्तरदिया कि महाराज यहदिन सबके लिये मौजूद है। इसपर गौतम बुद्धने कहा कि मेरी गाडी लौटादो। और पीछे आकर मनुष्य की दशापर विचार करतारहा। तदनन्तर फिर दूसरे दिवस रथपर सवारहोकर बाजारमें गया और सामने से एक लाश आते देखा गौतम ने पूँछा कि यह क्याहै सारथी ने उत्तरदिया कि महाराज यह आदिमी मरगया प्राण इसके शररिसे निकल गये इसलिये इसका शरीर जलाने के योग्य है। गौतम ने पूछा कि क्या यही परिणाम सबकाहोगा। तथाच सारथीने उत्तरदिया कि महाराज यह मृत्यु तो सबको आवैगी। इसपर उसके चित्तमें संसारसे वैराग्य उत्पन्न हुआ और इसबातका बिचार उपजा कि मनुष्य को जो जन्म से दुःख होता है वह किसविधिसे छूटै। कहते हैं कि एक दिन रात्रि को गौतम अपनी स्त्री और पुत्र को और अपने समस्तराज्यपाट को छोड़कर जङ्गल की ओर गया। वहांपर ब्राह्मणों और ऋषियोंसे शास्त्रार्थका बिचार किया फिर अर्दबील के जंगल में जाकर छः बर्ष पर्य्यन्त अत्यन्त कष्टके साथ महान् उग्रतप किया। फिरभी आत्मज्ञान नमिला परन्तु ज्यों ज्यों

उसका विवेक और वैराग्य बढ़ता गया त्यों २ उसको ज्ञानहुआ अर्थात् अन्तःकरण की शुद्धि सब प्राणीमात्रपर दया शुद्धआचरण ही समस्त दुःखों के दूरकरने का कारण है यह उस ने सिद्धान्त किया। उसके नियमों में से हम ने पहिले कुछ लिखा है निज नियम उसके उपनिषदों से कुछ बिरुद्ध नहीं हैं वही आत्मज्ञान त्रिविधतापों का दूर करना वही मनका बश में करना और जीतना और वही बासना का नाश करना वही असली स्वरूप का जानना जो उपनिषदों में कहा गयाहै वही गौतम बुद्ध ने भी कहा है। उसका यह नियमथा कि वहप्रातःकालही उठकर अपने साथियों के साथ बिचार किया करता था और फिर भिक्षा के लिये नगर में जाते थे उस समय में भी कि जब बड़े २ राजा और महाराजा उनके चरणों पर शिर नवाते थे वे अपना कमण्डलु हाथ में लिये घर२गली २ कूचा२ फिरते थे। न किसी से मांगते थे न याचना करते थे किन्तु नीची गर्दन किये हुए चुप चाप खड़े रहते थे कि इस में लोग रोटी का टुकड़ा कमण्डलु में डालदेते थे उनका उपदेश सुन्ने को न केवल पुरुष आते थे किन्तु स्त्री भी आती थीं और बहुत सी स्त्रियोंको उन्हों ने ज्ञान दिया प्रथमबात जिसपर वे उपदेश करतेथे यहथी कि जन्मसेमनुष्यको दुःखहोताहै रोगसेदुःखहोता है वृद्धावस्थासे दुःखहोता है मृत्युसे दुःखहोता है जिन बस्तुओं से कि ग्लानि होती है उनसे दुःख होता है। जिनकी इच्छा होती है उनके न मिलने से दुःख होताहै निदान अभिनिवेश अर्थात् मोह दुःख का मूलहै दूसरा उपदेश वे यहकरतेथे कि यह दुःख तृष्णा से हुआ है तृष्णा से ही जन्मजन्मान्तर होता है उसी से आदिमी भटकता फिरता है तृष्णातीन प्रकार की है सुख की जीवनकी और द्रव्यकी। तीसरे यहदुःख तृष्णा के दूरहोनेसे ही दूरहोसक्ता है। अर्थात् सब प्रकार की तृष्णा का नाश होना किसी बस्तुकी वासना न होना किन्तु

मन में ध्यानभी न आना तृष्णाका नाश कहलाता है । यह दुःख सात्विकी अर्थात् शुद्ध अन्तःकरण शुद्ध और शुभचिन्तमन शुभ और सत्य प्रिय भाषण शुद्धआचरण शुभउद्यम शुभपरिश्रम शुभ चिन्तमन और सुभध्यान से भी दूरहोताहै । जब मनुष्य के मन की ग्रन्थि खुलजातीहै तो वह मोक्षपाताहै । और वहअपने मनमें अपनी वाणीसे और अपनेकर्म्म से शान्तहोकर निर्वाण पदको पंहुंचता है ॥

गौतम बुद्धकेपश्चात् अशोक बुद्धोंका बड़ाराजा हुआ उसकी लाठें अब तक हिन्दुस्तानमें मौजूद हैं यहराजा २६० वर्ष ईसा से पहिले हुआ और उसका राज्यन केवल हिन्दुस्तान में किन्तु वेक्टेरिया काबुल कन्धार अर्थात् गान्धार देशमें भी था उस के चतुर्दश अनुशासन प्रख्यातहैं यह अनुशासन पर्व्वतोंपर खुदेहुए हैं अर्थात् अंकितहैं कपूरगिरी जो सिन्धु नदीपरहै खालसी जो जमना नदीके उस जगहपर है जहांसे वह पहाड़से निकलती है अर्थात्जमनोत्तरीपरहै । गिरनारपहाड़पर गुजरातमें धूलीउड़ीसा देशमें औ भुनूगढ़ शहरगंजाम दक्षिणी हिन्दुस्तानके समीप इन सब स्थानोंपर चतुर्दश अनुशासन खुदेहुयेहैं । दिल्ली और इलाहाबादमें और लोरिया मुल्क तिर्हुतमें और साचीशह भूपाल में इन स्थानोंमेंभी उसकी लाठें अबतक मौजूदहैं । इनसब अनुशासनों का शास्त्रार्थ था कि लोग जानवरों की हिन्सानकरैं मनुष्यों और पशुओंके लिये चिकित्सालय नियत कियेगयेथे पांचवें वर्ष एक अनुसंयम अर्थात् धर्म्म सभा होती थी राजा ने लोगों को धर्म्म और कर्म्म के उपदेश के लिये उपदेशक नियत किये थे । प्रत्येक मनुष्य के धर्म्म और मत की निन्दा की मनाई थी धर्म्मोपदेश ही बड़ा पुण्य रक्खा गयाथा । और वही पराक्रम और कीर्ति जो धर्म्म से प्राप्त की जावै बड़ी समझी गई थी । छोटोंपर दया बड़ोंका आदर स्वजन और बन्धुजनों के साथ सहिष्णुता प्राणी मात्रपर दया दान पुण्यही प्रत्येक रस्मपर चाहे वह बीमारी

में वा लड़का लड़की के विवाह में वा उस के जन्म पर की जावै बड़ारक्खागयाथा। धर्म्मका अभिप्राय दया पुण्य सत्य और स्वच्छता और शुद्धि और अपने आचारणों के विषय में शोच विचार करना और पाप से बचनाही रक्खागया था और यह कहा गया था कि जबतक यह सब बातें नहों न इस लोकमें सुख होसक्ता है न परलोक में। इसराजा के शुभ लक्षणों से आज कल के हिन्दूलोग इतने जानकार नहीं हैं कि जितने अन्य जाति के लोग जानकार हैं। और बहुत से ग्रन्थकारों की यह मति है कि विक्रमादित्य वा अकबर की नेकी का भी इतना दुनियां पर असर नहीं हुआ कि जितना अशोक की दया और दान और सत्य और शुद्धि और स्वच्छता और नेकी और कृपा का असरहुआ॥

वर्त्तमान समय में भी हिन्दुस्तान में ऐसे २ लोग हुए हैं कि जिनकी कथा लोगों की वाणी पर है परन्तु जिनके बर्त्ताव का वर्त्तमान समय में बहुतसा असर जाता रहाहै। शंकराचार्य्य जी महाराज का नाम किसहिन्दूने नहीं सुना है शंकराचार्य्य सन् ७८८ ई० में जन्मे थे १६ बर्ष की अवस्था में कहतेहैं कि उन्होंने इतने भाष्यबनाये दशउपनिषदोंपर। ग्यारहवांब्रह्म सूत्र पर बारहवां विष्णु सहस्रनामपर तेरहवां गीतापर चौदहवां सन्तति सुजातिपर। पन्द्रहवां नृसिंहतापनीपर। और इन भाष्यों में जैसा कि उनके पाठकजन यथावत् जानते हैं अद्वैत मतका प्रतिपादन और अन्यमतों का खण्डन किया है फिर उन्होंने सबमतों के लोगों से शास्त्रार्थ करके दिग्विजय किया। मंडन मिश्रसे ४० दिवस पर्य्यन्त शास्त्रार्थ हुआ और मंडन मिश्रको शंकराचार्य्यने परास्तकिया। बदरिकाश्रम जिसको बदरिनाथ कहते हैं उन्होंही ने स्थापन किया है औरउनके मठ बहुधा स्थानोंपर मौजूद हैं। ३२ वर्षकी अवस्था में शंकराचार्य्य परमपदको प्राप्तहुए॥

विचारने की जगहहै कि इसदेशमें कैसे २ योग्य मनुष्यकैसी २ छोटी अवस्थामें हुए ॥

विक्रमादित्य राजाभोज की कथा किसने नहीं सुनी है। विक्रमादित्य के चरित्र बैतालपचीसी और सिंहासनबत्तीसी में प्रत्येक मनुष्य के पढ़ने में आते हैं। परन्तु कुछ इतिहासी कथा बिक्रमादित्य की वर्णन की जाती है। विक्रमादित्यके समयके विषयमें ग्रन्थकारोंमें विरुद्धताहै। कोई कहतेहैं कि जब संवत् नियत कियागयाथा उससमय में विक्रमादित्य हुए। कोई कहते हैं कि वे छठी सदी ई० में हुए और संवत् उन्हों ने नियत किया परन्तु छःसो वर्ष पहिले की तारीख डालदी शत्रुञ्जय माहात्म्य में लिखा है कि विक्रमादित्यका ४६६ शाके में राज्याभिषेक हुआ कि जो सन् ५४४ ई० के अनुसार होता है। और यही माति अब उर्जित है कि विक्रमादित्य छठे वा बढ़ से बढ़ पांचवीं सदी ई० में हुए। विक्रमादित्य के समय को हिन्दुस्तान का बर्त्तमान समय का सतयुग कहते हैं। और बर्त्तमान समय के ग्रन्थकारों की भी इस बातपर सम्मतिहै कि युद्ध का पराक्रम गयेहुए धर्म्म को फिर स्थिर करना विद्या की परीक्षा दया और गुण इत्यादि बिक्रमादित्य में ऐसेही थे कि जैसे पश्चात्‌के समय में फ़रान्स शार्लीमेम में इंग्लिस्तान में एलफ्रेड में बौद्धों में अशोक में और मुसल्मानों में हारूनुल रशीद में। विक्रमादित्य की सभा के नवरत्न प्रत्येक मनुष्य जानता है। कालिदाससे कबि। अमरसिंह जिन्होंने अमरकोश लिखा है। बाराहमीर ज्योतिषी बररुचि प्राकृतव्याकरणके लिखनेवाले अद्यापि प्रख्यात हैं उस समय की देशोन्नति उपमा के योग्य थी। नग्रसुबास बसते थे। प्रत्येक मनुष्य के सामान आराम का उपस्थितथा। कार्य्यालय और व्यापार की उन्नति थी। बिद्या प्रबलथी। काव्य कोश नाटक इत्यादि मनुष्यों के चित्तको लुभाते थे। धर्म्म भी उर्जित और उन्नति परथा।

बुद्धों के साथ बिरोध नहीं था निदान ऐसा ज्ञात होता था कि हिन्दुस्तान के गत दिवस फिर बगद आये । और देश को ऐसा राजा और ऐसा मनुष्य जैसा कि चाहिये था मिलगया । प्रिय पाठकजन इस बात पर ध्यान देकर बिचार करेंगे कि क्या कारण था कि वह उन्नति जो उस समय में हुई अब क्यों नहीं हो सकी । मेरी मति में तो केवल एक यही कारण है कि धर्म्म पर लोग नहीं चलते और लकीर को पीटते हैं ॥

अब इस प्रार्थना और बिनयके साथ यह बिषय समाप्त कियाजाता है कि हे परमात्मन् हमको असत् से सत्को प्राप्तकर हमको अन्धकार से प्रकाश को प्राप्त कर और मृत्युसे अमृतको प्राप्त कर ॥ ओं शान्तिः ? शान्तिः ?? शान्तिः ???

मुन्शी नवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखाने मुक़ाम लखनऊ में छपी ॥
मार्च सन् १८८९ ई० ॥

कृष्णप्रिया ॥

मंगलीप्रसाद विरचित ब्रजविलासकी तरहपर श्री कृष्णजी का जन्म से बैकुण्ठगमन पर्यन्त चरित्र है यहकाव्यालंकारयुक्त बहुतही सुन्दर पुस्तक है ॥

मनमोहनी ॥

हफ़ीज़ुल्लाहखां संग्रहीत इसमें अच्छी २ दोहा मिलीहुई ग़ज़लें और बहुत उत्तम २ भजन, होली, ठुमरी, चौमासा, विहाग, भैरवी, दादरा, कबित्त और सवैया आदि विद्यमान हैं ॥

रामसुधा ॥

जिसको ब्रजचन्दजी ने महाराजाधिराज काशीनरेश की आज्ञानुसार अनेक रागों व कबित्तों में श्रीरामचन्द्रजीका गुणानुवाद गाया है ॥

कविप्रिया सटीक ॥

टीका हरिचरण दास कबिकृत-जिसमें नृपबंश व कविबंश वर्णन, कवित्तदूषण, कवि व्यवस्था, गणागणफलाभाव, सामान्यालंकार, नखशिख, नायक नायका भेद और चित्रालंकारादि वर्णित हैं ॥

शृंगारसंग्रह ॥

सरदार कवि संग्रहीत इसमें भाषा के उत्तम २ कवियों के नायकाभेद व अलंकार के कवित्तहैं और बहुतसे कवियों की गणना भी लिखित हैं ॥

श्यामकेलि ॥

लाला गोविंदसहाय कायस्थ भटनागर सिकंदराबादी कृत, इस में श्रीकृष्ण व राधाजी के चरित्र और लीलाओं का वर्णन है ॥

कुंडलिया गिरिधरदासमूल ॥

इसमें गिरिधरदास जीने सामयिकवार्त्ता, चेतावनी कुण्डलियों में वर्णन की हैं ॥

कृष्ण सागर ॥

राधाकृष्णजी रचित जिसमें श्रीकृष्णजीका नवीन रीति से परिपूर्ण चरित्र वर्णितहै ॥

बिश्रामसागर बहुत मोटे अक्षर बातसवीर ॥

जिसको महन्त श्रीरघुनाथदास रामसनेहीने प्रेमियोंके लिये बनाया जिसमें छहों शास्त्र और अठारहों पुराणों के मत और नवीन रीति से श्रीकृष्णचन्द्र व रामजी के सरल चरित्र पद्य में रचेहुये हैं ॥

रघुबंश भाषा टीका सहित ॥

जिसके मूल श्लोकों को कालिदास कवि और भाषाटीका को राजा लक्ष्मण सिंह साहब बहादुर डिप्टीकलक्टर बुलन्द शहरने किया यह ऐसे कवि हैं कि इनकी कीर्ति हिन्दुस्तान से बिलायत तक है जिसमें राजा दिलीप का सन्तान न होने से रानी समेत वशिष्ठजी के आश्रमपर जाकर सुरभी की पूजा का उपदेशपा रानी समेत नन्दिनी गौकी सेवाकर राजाका२१दिन गौको बनमें चराना और गौको मायासे उपजेहुये सिंहसे बचाकर दूध और पुत्रहोने का वरदान पाना फिर दिलीपसे रघुका पाना दिलीपका निन्नानबे अश्वमेध यज्ञ करना और सौवें यज्ञ में इन्द्रका घोड़ा हरलेजाने में रघु और इन्द्र से घोरयुद्ध होकर इन्द्रका सौवें यज्ञ के फल पानेका वरदान पाना फिर रघुसे अज अज से दशरथ दशरथसे रामचन्द्रादि चारों भाइयों की सम्पूर्ण कथा इत्यादि अनेक चरित्र १९ सर्गोंमें बर्णितहैं ॥

प्रेमसागरबातसवीर ॥

लल्लूजी लाल कबिकृत इसमें दशमस्कन्ध भागवतकी पूरी कथा ब्रजभाषामें वर्णितहै ॥

माधवबिलास ॥

माधवप्रसाद तेवारीजी संग्रहीत इसमें नायकाभेद के कबित्त वर्णितहैं ॥